मैथिली भाषा विज्ञान

लेखक द्वय

डॉ० नवीन चन्द्र मिश्र
(ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय)
प्राचार्य एवं अध्यक्ष
सहरसा
स्नातकोत्तर मैथिली विभाग

डॉ० शिवाकान्त ठाकुर
(एम. ए., बी. एड., पी. एच. डी.)
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा

प्रकाशक
मिथिला पुस्तक केन्द्र
भगतसिंह चौक
दरभंगा

(Unit III)

संक्षेपाक्षरक सूची

प्राम० —प्राचीन मैथिली

भारोपीय – भारत-यूरोपीय

मर्मै०—मध्यकालीन मैथिली

मार्म० —मानक मैथिली

प्राभा – प्राचीन भारतीय

नमै०—नवीन मैथिली

क्रम

१. विषय-प्रवेश

नामकरण १
परिभाषा २
भाषाविज्ञान कला थिक वा विज्ञान ५
भाषाविज्ञानक अध्ययनक विभाग ६
प्रागैतिहासिक खोज ८
भाषाविज्ञानक उपयोगिता १०
भाषाविज्ञानक ज्ञानक अन्य शाखासँ सम्बन्ध १३

२. भाषा

भाषाक विभिन्न रूप १७
भाषा ओ बोलीमे अन्तर २०
भाषा अर्जित सम्पत्ति २४
भाषोत्पत्ति विषयक विभिन्न मत २४
भाषाक परिवर्तनशीलता — २८

३. भाषाक वर्गीकरण

भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरण ३२
पारिवारिक वर्गीकरण ३९
ससारक भाषाक चक्र विभाजन ४०
भारोपीय भाषा परिवार ५१
भारतीय आर्य भाषा ६१
नवीन भारतीय आर्य भाषा ओ मैथिली ६७
'नभा'क कालिक विभाजन ७०
'नभा'क क्षेत्रीय विभाजन ७०
भारतक आर्येतर भाषा ७३
मैथिलीक विभिन्न विभाषा ७५
मैथिली भाषाक क्षेत्र ७६
क्षेत्रानुसार विभाजन ७७
अंगिका ओ बज्जिका ७७

ग्रियर्सनक अनुसार विभाजन ७८
मैथिलीक प्राच्य समूहक भाषासँ पार्थक्य ८१
मैथिली एवं ब्रजबुलि ८३
मैथिली एवं मगहीक सम्बन्ध ८४
मैथिली एवं उड़िया ८६
मैथिली एवं भोजपुरीक सम्बन्ध ८७
मैथिली एवं असमिया ८८
मैथिली ओ बंगलाक सम्बन्ध ८८
मैथिली एवं हिन्दी ९०
व्याकरण ९१
मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास ९८

४. ध्वनि-विचार

ध्वनि-विज्ञान १०१
ध्वनि ओ भाषा-ध्वनि १०३
ध्वनिक वर्गीकरण १०६
स्वतन्त्रीय प्रयत्न अथवा बाह्य प्रयत्न १०९
ध्वनि परिवर्तन ११०
५. अर्थ-परिवर्तन ११४
६. भाषाविज्ञान इतिहास ११९
७. व्युत्पत्ति १३०

□

विषय-प्रवेश

नामकरण- भाषाविज्ञानक अध्ययन अपना मे एतेक व्यापक अछि जे एहि लेल अनेक नामक प्रयोग होइत आबि रहल अछि। भाषाविज्ञानक लेल आरम्भ मे जाहि शब्दक प्रयोग भेल, ओहि मे Comparative Grammar उल्लेख्य अछि। प्राचीन काल मे व्याकरण आ भाषाविज्ञान कें मूलतः एक कहल जाइत छल। ओहि काल मे भाषाविज्ञान मे जँ कोनो विशेषता छल तँ ओ छल तुलनात्मक अध्ययन। एहि हेतु १८म शताब्दीक अन्त धरि भाषा ओ भाषा-विज्ञानक अन्तर स्पष्ट नहि भऽ पाओल छल, एहि हेतु व्याकरण सँ पार्थक्य स्थापित करबाक लेल विद्वान एकरा तुलनात्मक व्याकरण वा कम्परेटिव ग्रामर (Comparative Grammar) कहैत छलाह। १९म शताब्दी मे भाषाविज्ञान मे भाषाक तुलना पर पर्याप्त बल देल जाइत छल। एहि आधार पर एकरा कम्परेटिव फिलालोजी (Comparative Philalogy) नाम पड़ल। सन् १८१७ ई० मे डेवीज भाषाविज्ञानक लेल ग्लासॉलोजी (Glassalogy)क प्रयोग कयलनि। बीसम शताब्दीक आरम्भ मे श्री एफ० जी० टकर एकर नाम Glottology वा Science of Tongue रखलनि आ एहि नाम कें उचित सिद्ध करबाक लेल प्रमाण सेहो उपस्थित कयलनि। मुदा ई नाम सेहो सर्वमान्य नहि भऽ सकल, किएक तँ एहि मे अर्थक संकीर्णताक दोष विद्यमान छल।

कतेको देश मे भाषाविज्ञानक लेल फिलालोजी (Philalogy) शब्द चलैत [illegible]। ई शब्द मूलतः यूनानी भाषाक शब्द थिक। एहि शब्दक दू अंश अछि—Phil + Logos, Philक अर्थ अछि 'word' वा शब्द तथा Logosक Science वा विज्ञान। अतएव फिलालोजी (Philalogy) विषयक सर्वांगीणताक दृष्टि सँ उपयुक्त शब्द अछि। भाषाविज्ञानक लेल अंग्रेजी मे 'साइंस ऑव लग्वेज' नाम सेहो प्रचलित अछि। एकर उपयुक्त नाम Comparative Linguistics तथा Comparative Philalogyक अतिरिक्त भाषा-विचार, भाषा-शास्त्र, भाषा-तत्त्व आदि सेहो पड़ल। मुदा Philalogyक लेल 'भाषा-विज्ञान' उपयुक्त नाम अछि।

परिभाषा—भाषाविज्ञानक सोझ अर्थ अछि भाषाक विज्ञान आ विज्ञानक अर्थ अछि विशिष्ट ज्ञान। एहि तरहें भाषाक विशिष्ट ज्ञान कें भाषाविज्ञान कहल जाइत अछि।

ओना कोनो वस्तुक परिभाषा करब बड़ कठिन कार्य थिक। एहि विज्ञानक वैज्ञानिक परिभाषा करबा सँ पूर्वहि अध्ययनक स्वरूप कें बुझि लेब आवश्यक अछि। परिभाषा करबा सँ पूर्वहि अव्याप्ति, अतिव्याप्ति ओ असम्भव दोष सँ बचबाक चेष्टा कयल जाइत अछि।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक, अतएव ओकरा सतत विचार-विनिमयक आवश्यकता पड़ैत अछि। एहि कार्य कें ओ अनेक ढंग सँ पूर्ण करैत अछि; यथा—बाजि कऽ, संकेत सँ अथवा इंगित सँ। कखनहु-कखनहु स्पर्श द्वारा सेहो अपन विचार प्रकट करैत छथि; यथा—चोरक हाथ दबेनाइ आदि।

विशद रूप सँ एहि तीनू कें भाषा मानल जा सकैत अछि मुदा साधारणतया एतेक विशद रूप भाषा कें नहि लऽ कऽ मात्र बजनाइ ओ सुननाइ सम्बन्धित रूप कें एहि अन्तर्गत लेल जाइत अछि। यैह सर्वाधिक प्रचलित ओ महत्वपूर्ण रूप अछि। एकर सम्बन्ध ध्वनि सँ अछि। वाह्य ध्वनि द्वारा अर्थ-व्यञ्जना तीन तरहें होइत अछि—

(१) ध्वनि संकेत—विचार विनिमयक संकेत मे सभ सँ सफल साधन भाषा लेखन थिक।

(२) प्रतीक—पानक बीड़ा, हरदि देब, पाग राखब आदि।

(३) अनुकरण—ई प्रसिद्धि परम्परा सँ प्राप्त होइत अछि; यथा—अभिनय, careecature आदि।

ध्वनि निश्चित रूप सँ उच्चारण-सापेक्ष अछि। उच्चरित वाणीक अर्थ अछि स्पष्ट ओ पूर्ण अभिव्यञ्जना आकाशक गुण शब्द थिक। वाणी सँ बहरायल आवाज आकाश मे पसरि जाइत अछि। एकर लिखित भाषा सँ कोनो सम्बन्ध नहि अछि। एकर क्षेत्र उच्चरित ध्वनि धरि सीमित अछि। एहि आधार पर भाषाक परिभाषा करैत एक पाश्चात्य भाषावेत्ता कहने छथि—

(१) "The sum told of such signs of our thoughts and feelings as are capable of external perception and as could be produced and repeated at will, is Language."

(२) Whitney अपन पुस्तक Life and growth of Language (Page-4) मे कहने छथि—"Philology strives to comprehend Language, both in its unity, as a means of human expression and as distinguished from breete communication, and its internal variety of material and structure. It seeks to discover the cause of the resemblances and differences of languages, and to effect a classification of them, by tracing out the lines of resemblance and drawing the limits of difference."

भाषाविज्ञान मे कोनहु स्वरूप मे, कोनहु देश मे उपलब्ध मानवीय भाषाक अध्ययन कयल जाइछ। आधुनिक जीवित भाषाक संग प्राचीन मृत अथवा रूपान्तरें जीवित भाषाक तुलना जकरा पत्र वा शिलालेख आदि द्वारा सुरक्षित राखल गेल अछि से एकर अध्ययन क्षेत्र मे अबैत अछि। परस्पर सम्बद्ध आधुनिक ओ प्राचीन भाषा सभक दोष शून्य तुलना द्वारा एहि मे कल्पना कयल जाइछ आ ओकर मूलभाषा पर सेहो विचार कयल जा सकैछ।

(३) प्रसिद्ध पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिक जेस्परसनक अनुसार—"मनुष्य ध्वन्यात्मक शब्द द्वारा अपन विचार प्रकट करैत अछि। मानव मस्तिष्क वस्तुतः विचार प्रकट करबाक लेल एहन शब्दक निरन्तर प्रयोग करैत अछि। एहि प्रकारक कार्य-कलाप कें भाषाक संज्ञा देल जाइछ।"

(४) भाषा वैज्ञानिक वेन्ड्रीजक शब्दमे—"भाषा एक प्रकारक चिह्न थिक। चिह्नसँ तात्पर्य ओहि प्रतीकसँ अछि, जाहिमे मनुष्य अपन विचार दोसर पर प्रकट करैत अछि। ई प्रतीक सेहो कतेको प्रकारक होइत अछि; यथा—नेत्र-ग्राह्य, श्रोतृ-ग्राह्य एवं स्पर्श-ग्राह्य। वस्तुतः भाषाक दृष्टिसँ श्रोतृ-ग्राह्य प्रतीक सर्वश्रेष्ठ अछि।"

(५) ब्लॉक ओ ट्रेगरक विचारमे—"भाषा ऐच्छिक वाक्-प्रतीकक ओ व्यवस्था थिक जकरा द्वारा मानव-समुदाय परस्पर सहयोग करैत छथि।"

(६) "विचारक अभिव्यक्तिक लेल व्यक्त-ध्वनि समूहक व्यवहारकें भाषा कहल जाइत अछि।" A. A. Cardiners अपन पुस्तक Speech and language मे कहने छथि—

"The common definition of speech as the use of articulate sound symbols for the expression of thought."

(७) प्लेटो 'सोफिस्ट'मे विचार ओ भाषाक सम्बन्धमे कहने छथि जे विचार ओ भाषामे थोड़ेक अन्तर अछि। विचार आत्माक मूक वा अध्वन्यात्मक भऽ कऽ ठोर पर प्रकट होइत अछि तँ भाषाक संज्ञा प्रदान करैत छी।

(८) स्वीटक अनुसार—"ध्वन्यात्मक शब्द द्वारा विचारकेँ प्रकट करब सैह भाषा थिक।"

(९) आधुनिक भाषाशास्त्रीमे सँ बहुतोक परिभाषा एक रंगक अछि। यथा—स्त्रूवाँ—"A language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which members of a social group cooperate and interact."

विश्वकोशमे सेहो घूमा-फिरा कऽ यैह बात कहल गेल अछि।

(१०) भाषा-रहस्यकारक शब्दमे—"मनुष्य-मनुष्यक बीच वस्तुक विषयमे अपन इच्छा आ विचारक आदान-प्रदान करबाक लेल व्यक्त ध्वनि-संकेतक जे व्यवहार होइत अछि ओकरा भाषा कहल जाइत अछि।

(११) डॉ० भोलानाथ तिवारीक कथनानुसार—"भाषा निश्चित प्रयत्नक फलस्वरूप मनुष्यक मुख निसृत ओ सार्थक ध्वनि समष्टि थिक जकर विश्लेषण ओ अध्ययन भऽ सकय।"

(१२) प्रोफेसर देवेन्द्रनाथ शर्माक अनुसार—"उच्चरित ध्वनि-संकेतक सहायतासँ भाव वा विचारक पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा थिक।"

एहि तरहेँ भाषा विज्ञानक सर्वाधिक प्रचलित ओ महत्त्वपूर्ण परिभाषाक उल्लेख कयल गेल, मुदा एखन धरि एकर समीचीन परिभाषा नहि देल गेल अछि। वास्तवमे कोनो विषयक उपयुक्त परिभाषा देब साधारण कार्य नहि थिक।

——

भाषाविज्ञान कला थिक वा विज्ञान

साधारणतः भाषाविज्ञानक अध्ययन के भाषा विज्ञान कहल जाइत अछि। वैज्ञानिक अध्ययनसँ हमर तात्पर्य अछि सम्यक रूपसँ भाषाक बाहरी एवं भीतरी रूप एवं विकास आदिक अध्ययन। ई अध्ययन तीन प्रकारसँ होइत अछि—वर्णनात्मक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक पद्धति द्वारा। अतएव भाषाविज्ञानक परिभाषा निम्न रूपेँ देल जा सकैछ—

"भाषा विज्ञान ओ विज्ञान थिक जाहिमे भाषाक विशिष्ट आओर सामान्यक वर्णनात्मक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दृष्टिसँ अध्ययन, अर्थात् भाषाक उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदिक सम्यक व्याख्या एवं तद् विषयक सिद्धान्तक निर्धारण कयल जाइत अछि।"

आब प्रश्न उठैत अछि जे भाषा विज्ञान कला थिक वा विज्ञान? एकर उत्तर ई अछि जे कलाक प्रकृति विज्ञानसँ भिन्न होइत अछि। वैयक्तिक अभिरुचिक कलामे बड़ पैघ हाथ रहैत अछि। सामान्य नियमक निर्धारण कलाक लेल नहि होइत अछि। सौन्दर्याश्रित होयबाक कारणेँ कला मनोरंजनात्मक एवं उपयोगात्मक सेहो होइत अछि। भाषा विज्ञानमे सेहो उपयोगिता एवं मनोरंजकता अछि, मुदा गौण रूपमे। ओकर मूल उद्देश्य भाषाक स्वरूपक नियम सहित विश्लेषण करब थिक। बेना नामसँ ज्ञान होइत अछि जे भाषा विज्ञान ओहि अर्थमे विज्ञान नहि अछि जाहि अर्थमे गणित, भौतिक वा जैविकी आदि अछि। विज्ञानक सभसँ पैघ आधार अछि कार्यकारण, भावक नित्यता नहि अछि, किन्तु ओ विज्ञान कहबैत अछि, यथा-राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि। मुदा भाषा विज्ञान भाषा अवश्य अछि। किएक तँ एकर नियम कार्यकारण भाव पर आश्रित अछि। यद्यपि एकर नियमक अपवाद सेहो अछि। एकर नियम अछि आ ओकर व्यापक रूपेँ प्रयोग होइत अछि। ताहि हेतु भाषा विज्ञान नहि तँ मनोविज्ञान एवं दर्शन जकाँ अनुभाविक शास्त्र आ नहि तँ गणित जकाँ शुद्ध विज्ञान। एकर स्थिति मध्यवर्ती अछि। एहिमे नियम एवं अनुभवक योग अछि। दोसर शास्त्र विज्ञान लेल भाषा माध्यमक कार्य करैत अछि। किन्तु भाषा विज्ञानमे भाषाक द्वारा भाषाक विवेचन कयल जाइत अछि। अतः भाषा विज्ञान अछि।

भाषा-विज्ञानक अध्ययनक विभाग

वैज्ञानिक अध्ययनक हेतु ई अनिवार्य अछि जे पाठकक मस्तिष्क शास्त्रक विभिन्न विभागक पृथक दृष्टि एवं ओकर पृथक उद्देश्यकें शृंखलाबद्ध ग्रहण करैत जाए, एवं ओहि मे कतहु ओझराय नहि। भाषा कहला सँ मुख्यतया चारि तत्त्वक बोध होइत अछि — ध्वनि, शब्द, वाक्य तथा अर्थ। एहिमे सर्वप्रथम ध्वनिक उच्चारण होइत अछि; अनेक पदसँ वाक्य संघटित होइत अछि आ ओहिसँ अर्थक प्रतीति होइत अछि। ध्वनि सँ अर्थ धरिक क्रम अनवरत चलैत रहैत अछि। एहि मे प्रत्येकक सीमा एतेक विस्तृत भऽ गेल अछि जे एकर विवेचनक लेल स्वतन्त्र शास्त्र विकसित भऽ गेल अछि जकरा क्रमश: (१) वाक्य-विज्ञान (Syntax), (२) रूप-विज्ञान (Morphology), (३) ध्वनि-विज्ञान (Phonology), (४) अर्थ विज्ञान (Semantics) तथा (५) प्रागैतिहासिक खोज (Linguietic Palacontolgy) कहल जाइत अछि।

(१) वाक्य-विज्ञान (Syntax) — संसारक तुलनात्मक अध्ययनक कारणें एकरा तुलनात्मक वाक्य-विज्ञान (Comparative Syntax) सेहो कहल जाइछ। एकर आगमन नवीन अछि। भाषाक चरम अवयव वाक्य थिक। एहि महत्वपूर्ण तथ्य पर भाषा विज्ञानी लोकनिक ध्यान बड़ पश्चात् गेल। पुनः एकर तीन उपविभाग अध्ययनक सुविधाक हेतु कयल गेल —

(क) वर्णनात्मक वाक्य-विचार (Descriptive Syntax) -- कोनहु भाषाक वाक्य रचनाक साधारण विवरण प्रस्तुत करैछ।

(ख) ऐतिहासिक वाक्य-विचार (Historical Syntax) — भाषाक वाक्य-रचनाक इतिहास प्रस्तुत करैछ।

(ग) तुलनात्मक वाक्य-विचार (Comparative Syntax) — दू भाषाक परस्पर रचना प्रकियाक वाक्यक तुलना कयल जाइछ।

(२) रूप-विज्ञान (Morphology) — एकरा पद-विचार वा पद-विज्ञान सेहो कहल जाइछ — Morphos - (Gk. Word—Meaning) आकृति — (Shape)। वाक्य विज्ञानक अपेक्षा एकर अध्ययन विस्तार सँ भेल अछि कारण ई ओकरा सँ अपेक्षाकृत सरल अछि। एहि मे शब्दक विभिन्न अंश

(आकृति, बनावट) — मूल — (प्रकृति) एवं ओहि मे प्रयुक्त अन्य अंश (प्रत्यय) केर विचार कयल जाइछ तें एकरा प्रकृति-प्रत्यय विचार सेहो कहल जाइछ। एकरहु वर्णनात्मक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन कयल जाइछ।

(३) ध्वनि-विज्ञान (Phonology) – भाषाक भौतिक आधार थिक ध्वनि, किएक तँ स्वयं शब्दक निर्माण ध्वनि सँ होइछ। ध्वनि-विज्ञान भाषा-विज्ञानक नीरस क्लिष्ट किन्तु अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण विषय अछि। ध्वनि-विज्ञानमे सर्वप्रथम प्रधानता ध्वनि-परिवर्तन अथवा ध्वनि-विकार कें देल जाइत अछि। एकरा अन्तर्गत ध्वनिक उच्चारणक प्रक्रिया प्रयत्न एवं ध्वनिक उच्चारण मे प्रयुक्त कण्ठ, तालु आदि भिन्न-भिन्न शरीरक अवयवक तथा उच्चरित ध्वनि कें ग्रहण करबाक प्रक्रियाक अध्ययन कयल जाइछ।

एकरा अन्तर्गत मूल परिवारक भाषाक ध्वनिक तुलनाक आधार पर कतिपय नियम, सिद्धान्त कयल जाइछ। एहि मे ध्वनिक इतिहास पर सेहो विचार कयल जाइछ।

(४) अर्थ-विज्ञान (Semantics) — एहि पर विचार विमर्श होएब — एक नूतन (प्रयोग) वस्तु थिक। भाषा विज्ञानक प्रगतिक प्रतीक, भाषाक मानसिक आधार, अर्थविज्ञानक सम्बन्ध भाषाक रूप सँ नहि अपितु ओकर अभीष्ट अर्थ सँ अछि। भाषाक शरीर वाक्य सँ चलि ध्वनिक इकाइ पर समाप्त होइछ। एकर पश्चात् ओकर आत्मा पर विचार करऽ पड़ैछ। अर्थक अध्ययन — वर्णनात्मक, तुलनात्मक ओ ऐतिहासिक तीनू रूप मे। एहि मे शब्दक अर्थ मे विकास एवं ओकर कारण पर प्रमुख रूप सँ विचार कयल जाइछ। संगहि अर्थ ओ ध्वनिक सम्बन्ध आदिक सेहो विवेचना कयल जाइछ।

——

प्रागैतिहासिक खोज

(LINGUISTIC PALAEONTOLOGY)

अत्यन्त प्राचीन काल, जकर क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहि अछि, ओहि समयक पाषाण-खंड, माटि, लोहा, ताम्बा आदिक द्वारा बनाओल वस्तु सिक्का आदि प्राप्त होइत अछि। एहि आधार पर प्रागैतिहासिक कालक मानव-जीवनक पता लगाओल जा सकैत अछि। एहि खोजमे पुरातत्त्वशास्त्र, भूगर्भ-विद्या, भूगोल आ मानव-विज्ञानक विना भाषामूलक खोज नहि चलि सकैत अछि।

भाषामूलक खोजक रीति—प्रागैतिहासिक खोजमे सर्वप्रथम कोनो भाषामे प्राचीनतम शब्द सभकेँ एकत्र कयल जाइत अछि। एहि शब्द सभकेँ अनेक वर्गमे बाँटल जाइत अछि, यथा —

(१) नाम– मनुष्य, जाति ओ जानवरक।
(२) प्रकृति सम्बन्धी—पहाड़, नदी, वृक्ष, ऋतु आदि।
(३) क्रियापद।
(४) सामाजिक शब्द, धार्मिक शब्द, आर्थिक शब्द आदि।

एहि वर्गीकृत शब्दक आधार पर ई जानल जाइत अछि जे जाहि कालक ई शब्द थिक ओहि कालमे कोन तरहक लोक सभ रहैत छलाह, हुनक जाति की छल, हुनका लग कोन-कोन तरहक जानवर छल, एहि जानवरक हुनक सामाजिक जीवनमे की योग छल तथा एहिसँ हुनक रहन-सहनक अनुमान लगाओल जाइत छल। पहाड़, नदी, ऋतु ओ वनस्पतिक नामसँ ई पता लगाओल जाइत अछि जे ओहि भाषाक रचना कयनिहार कतय रहैत छलाह। उदाहरणक लेल वेदमे प्राप्त स्थल, पहाड़, नदी, जलवायुक आधार पर हुनक मूल निवास-स्थानकेँ जानबाक अनुमान कयल जा सकैत अछि। क्रिया-पदसँ अनुमान कयल जाइत अछि जे लोक सभ की-की करैत छलाह। हुनक बोल-चाल, व्यवहार, दस्तकारी, उद्योग धन्धा, कला-कौशल मननशीलता, चिन्ता-धारा सभ पर अनुमान लगाओल जाइत अछि। शब्दहि बता दैत अछि जे ओ कोन प्रकारक समाजमे रहैत छलाह, हुनकामे सामाजिक चेतना छल वा नहि।

हुनक किछु देवी-देवता छल, हुनक विचार करबाक किछु पद्धति छल, हुनका अनुष्ठान आदि सभक पता विभिन्न प्रकारक शब्दक समूहसँ चलैत अछि आ एहि तरहेँ आदिम युगक एक रेखा-चित्र उपस्थित भऽ जाइत अछि।

एक भाषाक शब्दक संग्रहक पछाति ओहिसँ मिलैत-जुलैत अन्य भाषाक संकलन तथा दुनू भाषाक शब्दसँ तुलना कयल जाइत अछि। प्रायः एक मूलक भाषा परिस्थितिवश अनेक वर्ग ओ देश-देशान्तरमे बँटा जाइत अछि, तँयो मूल होयबाक कारणे परवर्ती शब्द भिन्न होइतहुँ किछु मौलिक साम्य रखैत अछि। एहन अवस्थामे एकहि मूलक शाखा-प्रशाखामे कहियो तँ साम्य भेटैत अछि आ कहियो नहि। तखन अर्थ ध्वनि ओ रूप तीनूक विचार कऽ ओहि शब्दक अध्ययन कयल जाइत अछि। दू भाषामे जखन समान शब्द उपलब्ध होइत अछि, मुदा ओहिमे अर्थ तथा ध्वनिमे, भेद अछि, तँयो ओहि शब्दक संग्रह कयल जाइत अछि, किएक तँ ध्वनि ओ अर्थक परिवर्त्तन कालान्तरमे सम्भव अछि। कहियो कहियो शाखा-प्रशाखामे किछु शब्द लुप्त भऽ जाइत अछि। एहि हेतु कम शब्द द्वारा सेहो अनुमानक क्रम चलाओल जाइत अछि।

संज्ञा शब्दसँ क्रिया शब्दक संग अध्ययन कयल जाइत अछि। उदाहरणक लेल जँ कोनो भाषामे बरद भेटैत अछि, मुदा जोतब क्रिया नहि उपलब्ध होइत अछि तँ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे बरद तँ रहल होयत, मुदा सम्भवतः ओकर प्रयोग ओहि समयमे हर जोतलामे नहि होइत छल। एहि तरहेँ भाषामूलक प्रागैतिहासक खोजक रीतिमे शब्दार्थ-विज्ञान बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। अनुमानक प्रधानता अवश्य रहैत अछि, मुदा ओकर आधार तर्क, भूगोल तथा पुरातत्त्वक तथ्य ओ मानव-शास्त्रक सिद्धान्त रहैत अछि।

——

भाषा विज्ञानक उपयोगिता

प्रत्येक वस्तुक अपन उपयोगिता एवं महत्व होइत अछि। जे वस्तुक जतेक उपयोगी होयत ओकरा सम्मानक तथा समाजक ओतबे कल्याण सम्भव अछि। मानव जाति तथा संस्कृतिक समृद्धि तथा कल्याण करब विज्ञान मात्रक उद्देश्य अछि। भाषा विज्ञानक योगदान सेहो एहि सम्बन्धमे उपेक्षणीय नहि अछि। भाषा विज्ञानक अध्ययनसँ हमरा लोकनिके निम्नलिखित लाभ अछि।

(१) भाषा एवं शब्द—मानव विवेक प्रधान प्राणी अछि। भाषा तथा शब्द सम्बन्धी अनेको प्रश्न एकरा मस्तिष्कमे घुमैत रहैत अछि। ओकर एहि तरहक जिज्ञासा साहित्य तथा व्याकरणक अध्ययन करबा काल अधिक बढ़ि जाइत अछि। भाषा विज्ञान एहि जिज्ञासाकेँ तृप्ति करबाक चेष्टा करैत अछि तथा संगहि भाषा सम्बन्धी अनेक समस्याक समाधान उपस्थित करैत अछि।

(२) भाषाविज्ञानक क्षेत्र अत्यन्त विशाल एवं विस्तृत अछि। ओ कोनो भाषाक बन्धनकेँ स्वीकार नहि करैत अछि अपितु ओ विश्वक कोनो कोनक भाषाकेँ अपन विराट रूपमे आत्मसात् कऽ लैत अछि, संगहि एकर संबंध अनेको शास्त्र तथा विज्ञानसँ अछि। इतिहास, मनोविज्ञान, पुरातत्त्व, समाज-शास्त्र आदिक सहायतासँ ई अपन अध्ययनकेँ वैज्ञानिक तथा तर्क सम्मत बना दैत अछि आ ज्ञानक वृद्धि करैत अछि।

(३ व्याकरण ओ साहित्यक सम्बन्ध पुरान अछि—भाषाविज्ञानक व्याकरण ओ साहित्य सँ सम्बन्ध अछि। भाषाविज्ञानक क्षेत्र मे शाब्दिक तथा साहित्यिक अध्ययन सँ हमरा कोनो विशेष जाति वा मानसिक अवस्थाक परिचय भेटैत अछि आ ओहि विचार धाराक विकास सँ हम अवगत भऽ जाइत छी। प्रत्येक जातिक विचार अभिव्यक्तिक साधन भाषा अछि। भाषाक सम्यक अध्ययन भाषाविज्ञान करैत अछि।

(४) पाठककेँ अधिक व्यापक बनबैत अछि—भाषाविज्ञान पाठकक दृष्टि केँ अधिक व्यापक आ उदार बनबैत अछि। यैह कारण अछि जे ई अपन व्यापकत्वक कारणे एक राष्ट्रक सीमित परिधि केँ लाँघि विश्व बन्धुत्व तथा मानव मात्रक ऐक्य भावनाक संचार करैत अछि। ओ सभ भाषाक प्रति सम, उदार तथा आदरक दृष्टि रखैत अछि। अतः संसारक समस्त भाषाक समान

रूप सँ अध्ययन कयला सँ मानव मात्र मे एकताक भावना स्वमेव उत्पन्न भऽ जाइत अछि।

(५) विश्वक लेल सामान्य भाषाक विकास तथा निश्चय करबा मे भाषा-विज्ञानक अध्ययन परम उपयोगी अछि।

(६) ऐतिहासिक तथा प्रागैतिहासिक सभ्यता आ संस्कृतिक आकलन मे हमरा भाषा बिज्ञान सँ अधिक सहायता भेटैत अछि। हम सहजहि एकर अध्ययनक माध्यम सँ अज्ञान तथा अन्धकारमय अतीतक अन्तःस्थल मे प्रवेश कऽ मानवीय संस्कृति ओ सभ्यताक रहस्यक अनावरण कऽ दैत अछि। जाहि युगक इतिहास केँ सेहो ज्ञात नहि, भाषा विज्ञान ओहि कालक इतिहास लिखबा मे समर्थ अछि। आर्यक निवास स्थानक खोज मे भाषाविज्ञान सभ सँ अधिक सहयोग लेने अछि।

(७) प्राचीन साहित्यक अर्थ ध्वनिक उच्चारण शब्दक प्रयोग सम्बन्धी अनेक प्रश्नक उत्तर हमरा भाषाविज्ञानक अध्ययन सँ प्राप्त होइत अछि। एकरहि माध्यम सँ भाषाशास्त्री लोकनि मूल वा आदिम—भारोपीय अक्षर माला तथा शब्द सभक शोध कऽ ओकर अनुमानित रचना कयने छथि।

(८) भाषाविज्ञानक तुलनात्मक अध्ययनक आधार पर तुलनात्मक विज्ञानक अनेकहु शाखाक उत्पत्ति भेल अछि; जेना—तुलनात्मक नीति ओ धर्म विज्ञान। अनेकहु जातिक धर्मं तथा मतक तुलना शुरू भऽ गेल अछि।

(९) विदेशी ध्वनि शिक्षा ग्रहण करबा मे भाषा-विज्ञानक अध्ययन सँ लाभ होइछ। ओकर ठीक रूप तथा सहज ग्राह्य प्रणाली सँ हम अवगत भऽ जाइत छी।

(१०) भाषा तथा लिपि केँ अधिक शुद्ध तथा व्यापक बनेबा मे एकर अध्ययन अत्यन्त उपयोगी अछि। भाषाविज्ञान भाषा सम्बन्धी समस्याक समाधान करैत अछि। दोषक निवारण तथा गुणक वृद्धि कऽ ई भाषा केँ अधिक सम्मुन्नत तथा समृद्धि बनबैत अछि। भाषा, ध्वनि ओ अर्थक परिवर्त्तनक कारणक खोज करैत अछि।

(११ भाषाविज्ञान वाक-चिकित्साक आवश्यक अंग बनि गेल अछि। क्यो तोतराइत अछि तँ ओहि सँ ओकर अभिव्यंजना बाधित होइत अछि। तोतरेनाइक की कारण अछि? ध्वनिक उच्चारण मे की भूल भऽ रहल अछि?

ओकरा कोना दूर कयल जा सकैत अछि ? आदि प्रश्नक समाधान भाषाविज्ञानहि द्वारा होइत अछि।

(१२) भाषाविज्ञान सँ संचारक साधन केँ समुन्नत करबाक लेल सेहो सहायता लेल जाइत अछि। यथा—दूर-संचार वा यांत्रिक अनुवादक लेल संकेत निर्माण वा तत्सम्बन्धी सिद्धान्तक प्रणयन तखन सम्भव अछि जखन भाषिक संकेत सँ परिचय हो आ भाषिक संकेतक पूर्ण परिचय भाषाविज्ञानक बिना अकल्पनीय अछि।

एहि तरहेँ साध्य ओ साधन दुनू रूप मे भाषाविज्ञानक अध्ययन उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

भाषाविज्ञानक ज्ञानक अन्य शाखासँ सम्बन्ध

ज्ञानक एहन अनेक शाखा अछि जे परस्पर सापेक्ष नहि, एक-दोसराक पूरक सेहो अछि; एकक ज्ञानक बिनु दोसराक ज्ञान अपूर्ण रहत। उदाहरणक लेल, इतिहास ओ राजनीतिकेँ वा राजनीति ओ अर्थशास्त्रकेँ लिअ। राजनीति सँ प्रेरित घटना सभक द्वारा इतिहासक निर्माण होइत अछि आ ऐतिहासिक घटना बादक राजनीतिक दिशा-निर्देश करैत अछि। एही तरहेँ बहुत बेर राजनीतिक निर्माण अर्थशास्त्रीय कारण सँ होइत अछि। एहि हेतु एककेँ बुझबाक लेल दोसराक ज्ञान अनिवार्य अछि। भाषाविज्ञान सँ सेहो अनेक ज्ञान, विज्ञान एवं शास्त्रक अनेक स्तर मे विभिन्न प्रकारक सम्बन्ध अछि। एतय किछु प्रमुखक संग भाषाविज्ञानक सम्बन्ध केँ स्पष्ट कयल जा रहल अछि—

(क) व्याकरण – भाषाविज्ञान ओ व्याकरण एक-दोसराक एतेक समीप अछि जे कहियो-कहियो दुनूकेँ एक बुझि लेल जाइत अछि। यैह कारण अछि जे व्याकरण केँ विवरणात्मक वा वर्णनात्मक भाषाविज्ञान कहल जाइत अछि, किएक तँ ओकर कार्य विवरण वा वर्णन प्रस्तुत करब थिक। जाहि तरहेँ भाषाक नियमक जानकारीक लेल व्याकरणक आवश्यकता अछि, ओहि तरहेँ व्याकरणक नियमक जानकारी ओ व्याख्याक लेल भाषाविज्ञानक आवश्यकता अछि।

(ख) साहित्य—ऐतिहासिक ओ तुलनात्मक दृष्टि सँ साहित्य भाषावैज्ञानिक अध्ययनक लेल पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करैत अछि। संस्कृत, ग्रीक, लातिन, ईरानी, स्लाविक वा यूरोपक अनेक अन्य भाषा, जकरा आइ हम भारत यूरोपीय परिवार मे रखैत छी; एकहि स्रोत सँ बहरायल अछि। एकर जानकारी साहित्य द्वारा सम्भव भऽ सकल। भाषाविज्ञान भाषा अध्ययनक लेल सभ सामग्री साहित्य सँ लैत अछि। दोसर दिस साहित्य सेहो भाषाविज्ञान सँ कम सहायता नहि लैत अछि। भाषाविज्ञान ओकर क्लिष्ट अर्थ एवं विचित्र प्रयोग आ उच्चारण-सम्बन्धी समस्या पर प्रकाश निक्षेप करैत अछि।

(ग) मनोविज्ञान—मनोविज्ञानक बिना भाषाक सभ पक्षक पूर्ण विवेचन सम्भव नहि अछि। कोनो शब्दक हमरा पर अनुकूल प्रभाव पड़ैत अछि वा

प्रतिकूल, ई सोचबाक वस्तु थिक । "अहाँ कतेक सुन्दर छी," ई सुनि कऽ हमर मन आनन्दित भऽ जाइत अछि आ "अहाँ कतेक मूर्ख छी," ई सुनि कऽ मन तमसा जाइत अछि। सुन्दर ओ मूर्ख शब्दमे एतेक पैघ शक्ति सन्निहित अछि। एहि शब्दक मन पर एहन प्रभाव-एक अनुकूल आ दोसर प्रतिकूल—किएक पड़ल, एकर व्याख्या मनोविज्ञान कऽ सकैत अछि। भाषाक उत्पत्तिक आधार तँ मनोविज्ञान अछिए, ओकर परिसमाप्ति सेहो मनोविज्ञानहि मे होइत अछि। विचारक विश्लेषण आदि मे रा भाषाविज्ञानक सहायता अपेक्षित अछि। दुनक एहि घनिष्ट सम्बन्धक कारणहि आब भाषाविज्ञानक एक नव शाखा अस्तित्वमे आबि गेल अछि जकरा मनोभाषाविज्ञान कहल जाइत अछि ।

(घ) शरीर विज्ञान —भाषाविज्ञानक शरीर विज्ञान सँ सम्बन्ध अन्योन्याश्रित अछि। भाषाक लेल कम सँ दू व्यक्ति आवश्यक अछि—एक वक्ता आ दोसर श्रोता। लिखित भाषाक ग्रहण आँखि सँ होइत अछि, अतएव एहि प्रक्रियाक अध्ययन भाषाविज्ञानक अंतर्गतहि अबैत अछि आ एहि लेल सेहो ओकरा शरीरविज्ञानक ऋणी होबऽ पड़ैत अछि। एहि तरहेँ सुरलहर, अक्षर बलाघात, आदिक अध्ययन शरीर विज्ञानक बिना नहि भऽ सकैत अछि।

(च) भूगोल—भाषाविज्ञानसँ भूगोलक सेहो घनिष्ट सम्बन्ध अछि।

(क) संस्मरक हजारो भाषाक सीमा-निर्धारण भूगोलक सहायता सँ कएल जाइत अछि। जँ भूगोलक ज्ञान नहि रहय तँ कोन भाषाक सीमा कतय धरि मानब, ई कहब कठिन भऽ जायत।

(ख) कोनो देशक जलवायुक प्रभाव ओहिठामक निवासीक शरीर पर आ शरीरक प्रभाव भाषाक उच्चारण पर पड़ैत अछि।

(ग) कोनो भाषाक दुर धरि विस्तार किएक होइत अछि आ कोनो भाषा छोट सीमा धरि घेरायल रहि जाइत अछि, एकर समाधान सेहो भूगोलहि द्वारा होइत अछि।

(घ) शब्दक अर्थ पर सेहो भुगोलक प्रभाव देखा पड़ैत अछि। यथा-केसर केँ संस्कृत मे 'काश्मीर' कहल जाइत अछि जे स्पष्ट एहि बातक सूचक अछि जे केसरक उपज आरम्भ मे कश्मीर मे होइत छल। ई रोचक उदाहरण भाषाक विकास मे भुगोलक प्रभाव केँ निभ्रन्ति रूपसँ व्यक्त करैत अछि।

इतिहास – जाहि तरहेँ भूगोल सँ भाषाविज्ञानक निकटक सम्बन्ध अछि, ओहि तरहेँ इतिहास सँ सेहो। दुनू एक दोसराक लेल बहुत उपादेय आ सहायक अछि। इतिहासक निर्माण मे भाषाविज्ञान सँ बहुत सहायता भेटैत अछि। प्राचीन अभिलेख, शिलालेख, सिक्का आदिकेँ पढ़ला पर एहन तथ्य सोझाँ अबैत अछि जे इतिहास निर्माणक आधार प्रस्तुत करैत अछि। एहि तरहेँ हम देखैत छी जे भाषाविज्ञान इतिहासक उपकारक अछि, मुदा इतिहास सेहो भाषाविज्ञानक लेल कम उपयोगी नहि अछि। भाषाविज्ञानक अनेक समस्याक समाधान इतिहाससँ होइत अछि। यथा—मैथिली मे अरबी, फारसी वा अंग्रेजी शब्दक बाहुल्यक कारण इतिहास बतबैत अछि।

(ज) भौतिकशास्त्र—वक्ता ओ श्रोताक बीच कोनो सम्पर्क नहि रहैत अछि। तैयो, वक्ताक ध्वनि श्रोता धरि कोना पहुँचैत अछि? बेतारक अविष्कार केँ हम आश्चर्यक दृष्टि सँ देखैत छी, मुदा बेतार सँ हम सभ दिन कार्य लैत छी। प्रश्न ई अछि जे ध्वनि एक स्थान सँ दोसर स्थान धरि कोन माध्यमक द्वारा जाइत अछि, एहि प्रश्नक समाधान भौतिकी करैत अछि।

(झ) तर्कशास्त्र – ओना तर्कशास्त्रक भाषाविज्ञान सँ कोनो सोझ सम्बन्ध नहि अछि तथापि भाषाविज्ञान वर्णनात्मक विषय नहि भऽ कऽ व्याख्या-प्रधान अछि आ व्याख्या मे बिना तर्कक कार्य नहि चलि सकैत अछि, अतएव ओकरा तर्कशास्त्रक ऋणी होबऽ पड़ैत छैक। दोसर दिस तर्कशास्त्र सेहो भाषाविज्ञानक कम ऋणी नहि अछि। तर्क भाषाक द्वारा चलैत अछि।

(ट) मानवविज्ञान—मानव विज्ञान मानवक उत्पत्ति ओ विकासक विवेचना करैत अछि। मनुष्यक विकास मे ओकर भाषाक सेहो महत्वपूर्ण योग अछि। भाषाक सम्बन्ध मानव सँ अछि आ मानवक अध्ययनक प्रयास जाहि शास्त्र मे होयत ओ भाषाविज्ञानक अंतर्गत आओत।

(ठ) दर्शन —भाषाक विशेषतः अर्थविज्ञानक दर्शन सँ घनिष्ट सम्बन्ध अछि। भारत मे मीमांसक, नैयायिक आदि दार्शनिक लोकनि अपन विषय पर बिचार करैत भाषाविज्ञानक अनेक बात पर सेहो बिचार कयलनि अछि। ग्रीस मे सेहो सर्वप्रथम भाषाक विवेचन दार्शनिक लोकनि द्वारा कयल गेल। भाषा, भाषाविज्ञान आ व्याकरणक सेहो अपन दर्शन होइत अछि।

(ड) समाजविज्ञान – समाजविज्ञान मे समाजक अध्ययन होइत अछि।

सामाजिक प्राणीक रुप मे मनुष्यक आचार, विचार-व्यवहार आदिक विश्लेषण कयल जाइत अछि। भाषा सेहो सामाजिक सम्पत्ति थिक। ओ समाज मे उत्पन्न ओ विकसित होइत अछि। एहि तरहेँ भाषाविज्ञान समाज-सापेक्ष अछि।

एहि तरहेँ संक्षेप मे भाषाविज्ञानक ज्ञानक दोसर शाखा सभसँ की सम्बन्ध अछि ओ एक दोसराक अध्ययन मे कतेक दूर धरि सहायक भऽ सकैत, अछि एहि बातकेँ बुझबाक लेल एहि विषय सभक ज्ञान आवश्यक अछि।

—

भाषाक विभिन्न रूप

वस्तुतः जतेक व्यक्ति अछि, ओतेक भाषा अछि, कारण ई जे दू गोट व्यक्तिक बजबाक ढंग एक रंगक नहि होइत अछि। एकर मुख्य कारण ई अछि जे अन्हार मे सेहो ककरो वाणी सुनि कऽ हम चिन्हि जाइत छी। ई अन्तर मात्र बजबाक ढंगहिटा मे नहि, उच्चारण, शब्द-भण्डार, एतेक धरि जे वाक्यविन्यास मे सेहो देखल जाइत अछि। साहित्य मे एकर अध्ययन शैलीक अन्तर्गत होइत अछि। विद्यापतिक भाषा कवीश्वर चन्दा झा सँ भिन्न अछि आ 'सुमन'क यात्री सँ। मैथिलीक प्रयोग ओना सभ क्यो करैत छथि, फेर ई अन्तर किएक? जे क्यो एहि लेखक वा कविक भाषा सँ परिचित छथि, ओ दू-चारि पंक्ति पढ़ैत-पढ़ैत कहि दैत छथि जे ई अमुक व्यक्तिक भाषा थिक। विद्यापति ओ गोविाद दास किंवा कवीश्वर चन्दा झाक भाषा मे किनका कखनो भ्रम नहि भऽ सकैत अछि। ई एहि हेतु जे ओहि भाषाक पाछाँ हुनक व्यक्तित्व अछि। व्यक्तित्वक ई प्रभाव शिक्षित व्यक्तिक भाषाटा मे नहि अपितु अशिक्षित लोकक भाषा मे सेहो ओही रूप मे पाओल जाइत अछि। जकर जेहन व्यक्तित्व अछि, हुनक भाषा ओहने होइत अछि।

एहि तथ्य केँ जखन हम स्वीकार कऽ लैत छी तखन भाषाक असंख्य रूप भऽ जाइत अछि। व्यक्ति ओ समाज भाषाक पूरक छथि, एकक बिना दोसराक सत्ता सम्भव नहि अछि। भाषाक पार्थक्य मे उपर्युक्त कारणक अतिरिक्त इतिहास, भूगोल, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति सामाजिक स्थिति आदिक सेहो पर्याप्त प्रभाव पाओल जाइत अछि। भाषाक रूप पर विचार करैत समय एहि सभ बातक स्मरण रखनाइ जरूरी अछि। किछु मुख्य भाषा रूप पर विचार कयल जा सकैत अछि।

(१) परिनिष्ठित भाषा—भाषाक प्रयोग शिक्षा, शासन ओ साहित्य रचनाक लेल होइत अछि। मैथिली, भोजपुरी, बंगला, हिन्दी, अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी एहि श्रेणीक भाषा थिक। भाषाक एहि रूप केँ मानक, आदर्श किंवा परिनिष्ठित कहल जाइत अछि जे अंग्रेजीक स्टैण्डर्ड शब्द रूपान्तर थिक। परिनिष्ठित भाषा विस्तृत क्षेत्र मे प्रयुक्त आ व्याकरण सँ नियन्त्रित होइत अछि।

(२) विभाषा (बोली)—एक परिनिष्ठित भाषाक अन्तर्गत अनेक विभाषा वा बोली भेल करैत अछि। भाषाक स्थानीय भेद सँ प्रयोग-भेद मे जे अन्तर

अवैत अछि, ओहिक आधार पर विभाषाक निर्माण होइत अछि। भाषाक ई रूप भूगोल पर आधारित अछि। उदाहरणार्थ—

खड़ी बोली—जाता हूँ।
ब्रजभाषा—जात हौं।
भोजपुरी - जात हई।
मगही – जा ही।
मैथिली – जाइत छी।

एहि पाँचो वाक्य केँ देखला सँ विभाषाक रूप स्पष्ट भऽ जाइत अछि। स्थान-भेद सँ एकहिटा क्रिया विभिन्न रूप धारण कऽ लैत अछि। तैयो ई रूप एतेक भिन्न नहि अछि जे परस्पर बुझबा मे नहि आबि सकय तँ ओ विभाषाक नहि, भाषाक भेद बनि जाइत अछि। यथा—'जाता हूँ'क बदला मे जँ 'आइ गो' कहय तँ दुनू मे कोनो सम्बन्ध नहि रहि जाइत अछि। 'जाता हूँ' बुझनिहार जँ अंग्रेजी नहि जनैत होइथ तँ 'आइ गो' नहि बुझि सकैत छथि। भाषा-भेद ओ विभाषा-भेदक अन्यतम आधार बोधगम्यता अछि। प्रायः विभाषा मे सँ कोनो परिस्थितिक अनुकूलता सँ भाषा बनि जाइत अछि। भाषा ओ विभाषाक अन्तर बहुव्यापकता तथा अल्पव्यापकताक अछि जकर मूल मे भौगोलिक सीमा कार्य करैत अछि। अंग्रेजी मे विभाषा केँ 'डायलेक्ट' कहल जाइत अछि।

(३) अपभाषा - 'अपभाषा' भाषाक ओ रूप थिक, जकरा परिनिष्ठित एवं शिष्ट भाषाक तुलना मे विकृत वा अपभ्रष्ट बुझल जाइत अछि।

(४) विशिष्ट भाषा व्यवसाय वा कार्य आदिक अनुसार भिन्न-भिन्न वर्गक अलग-अलग भाषा भऽ जाइत अछि। ई भाषा आदर्श भाषाक विभिन्न रूप होइत अछि, जे अधिकतर शब्द-समूह मुहावरा तथा प्रयोग आदि मे कहियो कहियो उच्चारण सम्बन्धी अन्तर सेहो देखा पड़ैत अछि। छात्रलोकनिक भाषा वा छात्रावासक भाषा, व्यापारीक भाषा, सोना चाँदीक दलालक भाषा, कहरियाक भाषा, धार्मिक संघक भाषा, राजनयिक भाषा, राजनैतिक संस्थाक भाषा तथा साहित्यिक गोष्ठीक भाषा एही अर्थ मे विशिष्ट अछि। ककरो पर अंग्रेजीक प्रभाव अधिक रहैत अछि तँ ककरो पर संस्कृतक आ ककरो पर गामक बोलीक तँ ककरो पर गूढ़ वा पारिभाषिक शब्द समूहक।

(५) कूटभाषा (Code language —भाषा सामान्यतः अपन बात दोसरा धरि पहुँचयबाक माध्यम थिक अर्थात् भाषाक प्रयोग अभिव्यंजनक लेल

होइत अछि, मुदा भाषाक एक उपयोग आओरो अछि। संसार मे जतेक मिथ्या-भाषण होइत अछि, ओ सभ कोनो-ने-कोनो बात केँ छिपएबाक लेल। जँ छिपाएब उद्देश्य नहि हो तँ मिथ्या भाषणक कोनो आवश्यकता नहि छल आ मात्राक दृष्टि सँ मिथ्या-भाषण किछु कम नहि होइत अछि। एहि हेतु एक विद्वान् कहने छथि जे भाषाक कार्य बात केँ बताएब नहि, छिपाएब थिक। अलंकारशास्त्र मे व्याजोक्ति वा छेकापद्धति आदि अलंकार गोपनक आधारहि पर ठाढ़ अछि।

सामान्य भाषा मे जतय बोध्यता अभीष्ट होइत अछि ओतय कूटभाषा मे अबोध्यता। कूट-भाषाक दू प्रमुख प्रयोजन अछि—(१) मनोरंजन ओ (२) गोपन। विद्यापतिक कूट एकर मनोहर उदाहरण थिक।

(६) कृत्रिम-भाषा—एहि भाषाक दू रूप कयल जा सकैत अछि—(क) गुप्त भाषा ओ (ख) सामान्य भाषा।

(क) गुप्तभाषा—गुप्त भाषाक प्रयोग प्रायः सेना, गुप्तचर विभाग, चोर-डाकू, क्रांतिकारी तथा बालक आदि मे होइत अछि। एकर प्रमुख उद्देश्य अपन बात केँ अनपेक्षित लोक केँ नहि बुझऽ देब थिक।

(ख) सामान्य भाषा—गुप्त भाषा बातचीतक लेल बनैत अछि, अतएव प्रचलित भाषा सँ अधिकाधिक दूर राखल जाइत अछि, ताकि क्यो बुझि नहि सकय। मुदा, सामान्य भाषा मे एना नहि होइत अछि। ओ प्रचलित भाषा सँ मिलैत-जुलैत अछि आ एहन बनाओल जाइत अछि जे यथाशीघ्र लोक ओकरा बुझि कऽ ओकर प्रयोग कऽ सकय।

डॉ० जमेनहाफ़क बनाओल एसपरंतो भाषा एहन भाषा मे सभ सँ अधिक प्रसिद्ध अछि। ई संसार भरिक लेल बनाओल गेल अछि। एकर बहुत देश मे प्रचार अछि तथा विज्ञापन-सम्बन्धी एवं किछु अन्य विषयक सेहो, अनेक पत्रिका एहि भाषा मे बहराइत अछि। एहि प्रकारक एक दर्जन सँ ऊपर भाषा बनाओल गेल अछि, जाहि मे 'इडो', 'नोवियल', 'इंटरलिंगुवा' 'ऑक्सिडेंटल' आदि प्रमुख अछि।

(७) मिश्रित भाषा – जाहि मे एक सँ अधिक भाषाक मिश्रण हो; यथा—पिजिन (Pidgin) इंग्लिश केँ लिअ, जकर प्रयोग चीन मे होइत अछि। पिजिन इंग्लिश मे शब्द अंग्रेजीक रहैत अछि, मुदा ध्वनि-प्रक्रिया ओ व्याकरण चीनीक। एही तरहेँ भूमध्यसागरक बन्दरगाह मे सबीर नामक एक भाषाक

प्रयोग होइत अछि जाहि मे फांसीसी, स्पेनी, इतालवी, ग्रीक ओ अरबीक मिश्रण अछि। एहि खिचड़ी भाषा सँ सामान्य आवश्यकताक पूर्ति भS जाइत अछि।

उपर्युक्त चर्चा सँ ई स्पस्ट अछि जे भाषाक उद्देश्य अभिव्यंजनहिटा नहि अपितु गोपन सेहो अछि आ भौगोलिक, व्यक्तिक, व्यावसायिक आदि दृष्टि सँ एकर अनेक रूप भS जाइत अछि। उपर्युक्त भेद मे अन्य सभ भेद सेहो समाहित भS जाइत अछि। प्रान्तीय भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा आदि भेद अमान्य अछि, किएक तँ एहि मे रुप-भेद नहि होइते अछि। उदाहरणार्थ, राजभाषा ओ राष्ट्रभाषाक विभाजन रेखा की होयत ?

——

भाषा ओ बोलीमे अन्तर

भाषाक निर्धारण मे शिक्षा, संस्कार, व्यवसाय, पालन-पोषण, सामाजिक स्थिति, वातावरण आदिक भेद सहायक होइछ। एहि सँ ई सिद्ध होइत अछि जे एक व्यक्तिक भाषा दोसर व्यक्तिक भाषा सँ भिन्न भS जाइत अछि। भाषा ओ बोली मे शुद्ध भाषा विज्ञानिक स्तर पर भेद करब कठिन अछि। एहि मे अन्तर तात्त्विक नहि भS कS व्यावहारिक अछि। एहि तथ्य केँ अनेक विद्वान् स्पष्ट शब्द मे स्वीकार कयलनि अछि। एहि सम्बन्ध मे ग्रियर्सन कहैत छथि—

"The two words 'Language' and dialect' are in this respcet like 'mountain' and 'hill'. One has No hesitation in saying that, sav everest is a mountain and holborn hill, a hill, but between these two the dividing line cannot be accurately drawn."

व्यक्तिक प्रवृत्ति केन्द्रापगामी होइत अछि आ समाजक केन्द्राभिगामी—व्यक्ति अपन रूचि तथा शक्तिक अनुसार भाषा केँ अपन मनोनुकूल ढंग सँ व्यवहृत करS चाहैत छथि, मुदा समाज हुनक रूचि ओ शक्तिक अनियन्त्रित नहि छोड़S चाहैत छथि, किएक तँ भाषाक प्रयोग अन्ततः सामाजिक व्यवहारक

लेल होइत अछि। भाषा ओ बोलीक एहि सैद्धान्तिक भेद स्वीकार कS लेला पर ओकर बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खीचब बड़ कठिन अछि। 'सपीर'क मन्तव्य एहि सम्बन्ध मे ध्यातव्य थिक—

"To the linguist there is no real difference between dialect and a language.

पेई महोदयक कथन छनि –

"There is no intrinsic difference between language and dialect."

भाषा ओ बोलीक प्रमुख भेद निम्नलिखित अछि—

(१) भाषाक क्षेत्र अपेक्षाकृत व्यापक होइत अछि आ बोलीक सीमित अर्थात् एक भाषाक क्षेत्र मे अनेक बोली होइत अछि, मुदा एक बोलीक क्षेत्र मे अनेक भाषा नहि भS सकैत अछि।

(२) बोली दैनिक व्यवहारक वस्तु थिक, तथा भाषा साहित्य, शासन ओ शिक्षा आदिक लेल प्रयोग होइत अछि। सूक्ष्म दृष्टि सँ देखल जाय तँ ई ग्राह्य नहि किएक तँ मैथिलीक बोली मे सेहो उत्कृष्ट कोटिक रचना सभ उपलब्ध अछि।

(३) एक भाषाक विभिन्न बोली बजनिहार परस्पर एक-दोसराक भाषा केँ बुझि जाइत छथि, मुदा विभिन्न भाषा बजनिहार एक-दोसराक भाषा नहि बुझि सकैत छथि। दोसर शब्द मे एना कहि सकैत छी जे कोनो भाषाक विभिन्न बोली मे परस्पर बोधगम्यता रहैत अछि, मुदा विभिन्न भाषा मे नहि।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे बोली ओ भाषा मे कोनो मौलिक अन्तर नहि अछि। L. H Gray अपन पुस्तक Foundations of language मे एहि बातक पुष्टिकरण करैत कहने छथि—

"It is impossible to draw the exact lines of demarcation between Either dialects or languages, though at their frontiers they merge imperceptibly one into another."

तात्त्विक अन्तर नहि भेला पर सेहो जे भेद भS सकैत अछि, ओ परिस्थिति आदिक कारणहि होइत अछि आ कोनो बोली परिस्थितिक कारणेँ भाषाक रूप ग्रहण करैत अछि। अतएव एहि कारण पर विचार करब आवश्यक बुझना जाइत अछि।

बोली कें भाषा बनबा मे सभ सं पैघ हाथ सम्पर्क होइत अछि। व्यक्तिक आपसी सम्पर्क जतेक अधिक होयत बोली ओतबे जल्दी भाषाक रूप धारण कऽ लैत अछि। सम्पर्कक कारणें भाषाक भेद नहि लुप्त होइत अछि, ओकर रूक्षता मिटा जाइत अछि। सम्पर्क कम भेला पर वा नहि भेला पर बोली बोलीए रहि जाइत अछि। अतएव सम्पर्कक सहायक कारणहि बोली सं भाषा बनबाक महत्त्व प्राप्त करैत अछि। बोली सं भाषा बनबाक निम्नलिखित कारण अछि—

(१) प्राकृतिक—भाषिक समुदायक सम्पर्क मे पहाड़, नदी, जंगल, मरुभूमि आदि प्राकृतिक अवरोधक तत्त्व अछि। पहाड़ी क्षेत्र मे बसल जाति वा आदिवासीक भाषा अपन क्षेत्र सं बाहर नहि जा सकल आ नहि दोसर भाषा सं प्रभावित भऽ सकल। पहाड़ी क्षेत्र मे रहनिहारक भाषा सम्पर्क मे नहि अयबाक कारणें जड़वत रहैत अछि। एकर विपरीत समतल मैदान मे आवागमनक सुविधा रहैत अछि आ बोली शीघ्र भाषाक रूप धारण कऽ लैत अछि।

प्राकृतिक अवरोध जेना-जेना दूर भेल जाइत अछि, तेना-तेना भाषाक क्षेत्र विस्तार भऽ जाइत अछि। यैह कारण अछि जे प्राचीन समय मे प्राकृतिक अवरोधक कारणें आजुक अपेक्षा बोलीक संख्या अधिक छल आ आगाँ जा कऽ एकर आरो कम होयबाक संभावना अछि।

(२) सामाजिक सम्पर्कमे बोलीक संख्यामे कमी आ भाषाक संख्यामे वृद्धि करबामे सहायक होइत अछि। एहि दृष्टिसँ विवाह, मेला, खेल-कूद महत्वपूर्ण अछि। जखन दू बोली बजनिहारक परिवारमे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भऽ जाइत अछि तं दोसराकें प्रभावित करैत अछि एवं संबंध स्थापनाक प्रयत्न कयल जाइत अछि। एहिसँ बोलीमे स्वाभाविक रूपसँ परिवर्त्तनक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होइत अछि। आधुनिक युगमे दूरवर्ती प्रदेश वा स्थानमे विवाह सम्पन्न होबऽ लागल अछि जे भूतकालमे आवागमनक सुविधाक कमीक कारणें कम होइत छल। ई सम्बन्ध-स्थापन निश्चित रूपसँ बोलीक अवरोध तोड़बामे सहायक सिद्ध होइत अछि। एहि तरहें मेला, दशहरा, खेल-कूदमे विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रक लोक एकत्र होइत छथि जे माध्यम मार्ग अपना कऽ अपन मन्तव्य प्रदर्शित करैत अछि। ई मध्यम मार्ग आरो कोनो नहि भऽ कऽ परिनिष्ठित भाषा होइत अछि। एहि तरहें बोलीसँ भाषा बनबामे सामाजिक स्तरक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।

(३) धार्मिक—धार्मिक श्रेष्ठता सेहो बोलीक महत्त्व बढा दैत अछि। राम-सम्बन्धी प्रधान तीर्थ अयोध्या अछि तथा कृष्ण-सम्बन्धी मथुरा। सीता-

सम्बन्धी प्रधान तीर्थ जनकपुर अछि। फलाफल ई भेल जे एहि स्थान सभक बोली एक दोसरासँ मिश्रित भऽ गेल आ जाहिसँ ब्रजभाषाक जन्म भेल।

(४) साहित्यिक - साहित्यिक श्रेष्ठताक कारणें सेहो बोली महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। यथा—विद्यापतिक रचनामे मैथिली साहित्यिक लेल प्रयुक्त भेल। अतएव मैथिलीक आन भाषाक अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण भऽ जायब स्वाभाविक अछि।

(५) राजनीति—जतय राजनीतिक केन्द्र होयत, ओतय बोली अवश्य महत्वपूर्ण भऽ कऽ भाषा बनि जायत। दिल्लीक खड़ी बोली आइ हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तक प्रमुख भाषा अछि, मैथिली, अवधि एवं ब्रज जेहन प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण बोलीकें दबा कऽ राष्ट्र भाषाक स्थानकें ग्रहण कऽ लेलक अछि। पेरिसक फ्रेंच आ लन्दनक अंग्रेजी बोली, अपन अन्य बहिनकें दबा कऽ अपन देशक राष्ट्रभाषा बनि गेल अछि। एहि प्रकारक असंख्य उदाहरण देल जा सकैत अछि।

(६) शिक्षण - शिक्षाक माध्यम बनि जयबाक कारणें, सेनामे स्वीकृत होयबाक कारणें, व्यापारमे प्रयुक्त होयबाक कारणें तथा विज्ञान आदिमे प्रयुक्त होयबाक कारणें बोली महत्त्व प्राप्त कऽ लैत अछि।

(७) आर्थिक—आर्थिक कारण सेहो भाषाक प्रसारमे बहुत दूर धरि सहायक बनैत अछि। आर्थिक कारणसँ एक केन्द्र पर अनेक उद्योग आरम्भ भऽ जाइत अछि, जाहिमे अनेक क्षेत्रसँ कार्यकर्त्ता पदार्पण करैत छथि, जनिक बोली स्वाभाविक रूपसँ परिनिष्ठित भाषाक मदतिसँ अभिव्यक्तिमे समर्थ बनि जाइत अछि आ ओतय बोली भाषामे विकसित होइत दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि तरहें नगरमे अनेक स्थानसँ लोक सभ आबि कऽ बैसि जाइत अछि आ हुनक भाषा एकरूप होइत अछि, जाहिमे बोलीक समावेश होइत अछि। व्यापारिक दृष्टि सेहो एहि कार्यमे सहायक होइत अछि। अंग्रेज व्यापार करबाक लेल जतय-ततय गेल छलाह, मुदा अंग्रेजी हुनका संग गेल छल आ जे आइ अन्तर्राष्ट्रीय विचार-विनिमयक माध्यम बनल अछि। ई व्यवसाय पर आर्थिक प्रभावहि तँ थिक।

एहि तरहें हम देखैत छी जे बोली ओ भाषामे अल्प अन्तर रहितो अनेक कारणें बोलीकें भाषाक संज्ञा प्रदान करबामे मदति करैत अछि।

भाषा अर्जित सम्पत्ति

भाषा परम्परागत-सम्पत्ति होयबाक संग एक अर्जित सम्पत्ति सेहो थिक। एकर स्थिति एक एहन निधि जकाँ अछि जकरा किनको पूर्वज जमीनमे गाड़ि कऽ छोड़ि गेलाह अछि। जँ ओ जमीन खोदता तँ हुनका अपन पैतृक सम्पत्ति भेटतनि। वास्तवमे मनुष्य, भाषाक क्षमता, परम्परासँ लऽ कऽ जन्म लैत छथि। मुदा समाजमे रहि कऽ ओकरा सीखैत मनुष्य भाषाक अर्जन करैत छथि। एहि अर्जनक प्रकृतिक कारण भाषाक विकास ओ परिष्कार होइत अछि। जखन एक देशक निवासी व्यापार अथवा अन्य कोनो कारणसँ दोसर देशमे जा कऽ बसि जाइत छथि तखन अर्जनक प्रकृति दुनू दिससँ कार्य करऽ लगैत अछि। अयनिहार नव देशक भाषा ओ ओकर विशेषताकेँ अर्जित करैत छथि आ देशक मूल निवासी अयनिहार लोकक भाषाक विशेषताकेँ ग्रहण करैत छथि। एहि अर्जनक प्रकृतिक फल थिक जे अंग्रेज सभ भारतीय भाषाकेँ सिखलनि आ भारतीय लोक अंग्रेजीकेँ। दुनू भाषामे मात्र शब्दक आदान-प्रदानहिटा नहि भेल वरन् रचना विधि आदिक अर्जन सेहो भेल। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे भाषा अर्जित सम्पत्ति थिक।

भाषोत्पत्ति विषयक विभिन्न मत

भाषाक उत्पत्तिक प्रश्न अनादि कालहि सँ महत्त्वपूर्ण रहल अछि। भाषोत्पत्तिक प्रश्नक सम्बन्ध मे अनेक सिद्धान्त सँ भाषा ओ भाषाविज्ञाक छात्र सभ केँ किछु-ने-किछु महत्त्वपूर्ण विशेषताक ज्ञान होइत रहैत अछि। एतय भाषाक उत्पत्तिक विषय मे विभिन्न विद्वान सभ द्वारा देल गेल सिद्धान्तक विवेचन कयल जाइत अछि।

(१) दैवी उत्पत्तिक सिद्धान्त (Divine theory)— संसारक सभ ग्रंथक कथन जे जेना ईश्वर सृष्टिक रचना कयल तहिना भाषाक सेहो। हिन्दू लोकनि वेदकेँ अपौरुषेय ओ संस्कृत केँ देववाणी मानैत छथि। इएह आदि भाषा भेल ओ पश्चात संसारमे एकर प्रसार भेल। पाणिनिक कथनमें संस्कृत व्याकरणक मूल १४ सूत्र शिवक डमरू सँ निःसृत भेल जाहि उक्ति सँ एहि सिद्धान्त केँ बल भेटैछ। एहिना इसाइ लोकनि (old testament) क भाषा

'हिब्रू' ओ मुसलमान कुरानक भाषा केँ संसारक आदिभाषा मानैत छथि। बौद्ध लोकनि 'पालि' केँ ओ जैन लोकनि 'अर्धमागधी' केँ मूल भाषा मानैत छथि। एकरा पाछाँ धार्मिक भावना सभ सँ पंथ कार्य करैछ।

पश्चात् लोक केँ एहि पर शंका भेलैक। जँ ईश्वर-प्रदत्त तँ सर्वत्र एकै भाषा रहइत। मुदा भाषाक भिन्नता ओ मिश्रक राजाक प्रयोग एकरा निराधार सिद्ध कयलक। मात्र भाषणक शक्ति ईश्वर प्रदत्त थिक। जँ भाषा ईश्वर-प्रदत्त रहत तँ समस्त संसार में ओ आरम्भहि सँ विकसित होइतय, मुदा इतिहास मे एकर उनटा प्रमाण भेटैत अछि।

(२) सांकेतिक उत्पत्ति—भाषोत्पत्ति विषयक मत पर विचार कयनिहार रूसो आदि विचारक ई मानल जे मनुष्ये भाषाक निर्माण कयल। आवश्यकता आविष्कारक जननी थिक, एकर अनुसारेँ विचार विनिमयक हेतु संकेत स्थिर कयल गेल। एकर कोष क्रमशः बढ़ैत गेल। दैवी उत्पत्तिक अपेक्षा ई मत तर्क सम्मत अछि। मुदा पुनः ई प्रश्न उठैत अछि जे जखन मनुष्य केँ भाषाक ज्ञाने ने छलैक तखन मूक सृष्टि कोन प्रकारेँ संगठन कयल ओ कोना व्यक्त ध्वनि-संकेतक निर्माण भेल। वास्तव मे इहो मत केवल अनुमानहि पर आधारित अछि। वैज्ञानिक दृष्टिसँ ई सबल नहि अछि तथापि निष्कर्ष पर पहुँचबा मे ई किछु योगदान अवश्ये करैछ।

(३) धातु सिद्धान्त—जर्मन विद्वान हेस (Heyse) ओ मैक्समूलर आदि भाषा सभक तुलनात्मक अध्ययनक आधार पर एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे आदि मानव चारि पाँच सय धातुक (क्रियापद) निर्माण कयल। एही धातु सभसँ उपचारक आधार पर शब्द समक निर्माण होइत गेल ओ भाषाक रचना भेल। ई मत सेहो सांकेतिक उत्पत्तिक दोसर रूप अछि। आदि मानव आखिर किएक ओ कोना एहि धातु सभक निर्माण कयलक ? मुदा संसारक सभ भाषा तँ धातुअहि पर आधारित नहि अछि। चीनी आदि एकाक्षरात्मक भाषा मे तँ एकोटा धातु नहि अछि। अर्थात् इहो केवल अनुमानहि पर आधारित अछि।

(४) अनुकरणमूलकतावाद— भाषाक उत्पत्तिक प्रसंगेँ एक गोट इहो मत अछि जे मानव अनुकरणक आधार पर भाषा सीखल। पशु-पक्षीक व्यक्त ध्वनि सुनि मानव ओकर अनुकरण कयल। कोइलीक 'कुहू-कुहू' (Cuckoo) बिलाड़िक 'म्याउँ' (Mew), काकक 'काँव-काँव' (Crow), घोड़ाक 'हिन-हिनाएब' आदि बहुतो शब्द प्राचीन भाषामे भेटैछ। संसारक प्रत्येक भाषा

मे अनुकरणात्मक शब्द भेटैत अछि। एतबा तँ युक्तिसंगत अछि, मुदा एकर तात्पर्य ई नहि जे अनुकरणात्मक शब्दहिसँ भाषाक सृष्टि भेल। अनुकरणात्मक शब्दमे केवल ध्वनिक उच्चारण अछि जे मानवकेँ ईश्वर-प्रदत्त अछि तँ ओ किएक एहि हेतु अनकर सहायता लितए। दोसर गनल-गुथल अनुकरणात्मक शब्द सँ भाषाक निर्माण नहि भ सकैछ सेहो मानव तँ सृष्टिक सर्वश्रेष्ठ प्राणी अछि आ सेहो बौद्धिक दृष्टिएँ, तखन ओ कोना पशु-पक्षीक सहायता लितए। जँ ओकरा अनकर भाषाक अनुकरण करबाक सामर्थ्य छलैक तँ ओ स्वयं भाषाक निर्माण करितए। दोसर शब्द मे केवल अनुकरण शब्दसँ भाषाक निर्माण नहि भऽ सकैत छल। एतबा धरि अवश्य जे अनुकरणमूलक शब्दसँ मानवकेँ अपन बिचारक अभिव्यक्ति अहुमे सहायता भेटलैक।

एही प्रकारेँ विद्वान लोकनिक इहो मत जे प्रकृतिक अवलोकन करैत अथवा कोनो घटनाक कारण मानव अपन मनोभावकेँ व्यक्त करैत छल, किछु ध्वनि उच्चारित करैत छल (छिः छिः धत्, ओह, धिक्, हुश)।

मुदा इहो आंशिक सत्य – सभ भाषामे एहि हेतु एके प्रकारक शब्द नहि अछि जर्मन – औ, फ्रेंच – अहि' अंग्रेजी – OH, हिन्दी – आह—सभ अछि। एकर ई निष्कर्ष जे एहि केर कारण किछु आओर अछि केवल मनोभाव प्रधान नहि अछि।

(५) यो हो-हो अथवा प्रतीकवाद—परिश्रम करबा काल श्रम परिहारक हेतु किछु ध्वनिक उच्चारण – धोबी, नाविक, ठेलावला आदि … … …मानव सामूहिक रूपेँ शिकार करबा काल किछु सम्मिलित ध्वनि व्यक्त करैत छल—मुदा इहो आंशिके छल, अस्तु एकरहु पूर्ण रूपेँ स्वीकार नहि कयल गेल।

(६) विकासवादी सिद्धान्त—एहि मतक अनुसार भाषाक धीरे-धीरे विकास भेल। सिद्धान्ततः तँ ई ठीक अछि, मुदा एहिमे विकास वा उत्पत्ति एवं अर्थ-ध्वनिक संबंधक संकेत नहि अछि।

(७) टा-टा सिद्धान्त (Ta Ta Theory)—टा-टा सिद्धान्तक जनकक विचार अछि जे कार्य करैत समय किछु ध्वनि उत्पन्न होइत होयत। ओहि अनुकरण पर ध्वनि-संयोगसँ शब्दक उच्चारण भऽ जाइत छल। एहीसँ भाषाक धीरे-धीरे विकास भेल। सर्वप्रथम अनुकरणक बात इंगितवाला सिद्धान्त मिलैत अछि। वास्तविकता यैह अछि जे अनुकरण नहि तँ आधुक [illegible]

मानव करैत छथि नहि असभ्य मानव। वास्तविकता ई अछि एहि सँ सेहो भाषाक उत्पत्तिक प्रश्न नहि सोझराइत अछि।

(८) सम्पर्क सिद्धान्त (Contact Theory)—एहि सिद्धांतक प्रतिपादक जी० रेवेज छथि। ओ भाषा सिद्धांतक लेल तीन प्रकारक भाषाक कल्पना कयलनि अछि – अभाषिक चिचिआएब, सोद्देश्य शोर पारब ओ शब्द। मुदा इहो सिद्धान्त अपना मे पूर्ण नहि अछि।

(९) इंगित सिद्धान्त (Gestural Theory)—एहि सिद्धांतकेँ माननिहारक कथन छनि जे भाषाक उत्पत्ति इंगित द्वारा भेल होयत। आरम्भ मे ई इंगित आंगिक रहल होयत, मुदा आवश्यकतानुसार ई ध्वन्यात्मक रूप धारण करैत चलि गेल आ भाषाक समर्थ रूप निर्मित भऽ गेल। मुदा आंगिक संकेतक आधार पर ध्वनि आदिक उत्पत्ति असम्भव अछि।

(१०) संगीत सिद्धांत (Sing-Song Theory]—'मानवक प्रवृत्ति सहज संगीत सुलभ अछि।' आदिम पुरुष भावुक रहल होयताह। ओ जखन गुनगुनाइत छलाह तखन हुनक गुनगुनाएब सँ भाषाक उत्पत्ति भेल। मुदा गुनगुनाएब अनुमान पर आधारित अछि। अतएव स्वीकार करबामे संकोच होयब स्वाभाविके अछि।

(११) मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धान्त—एकरा अंग्रेजी मे Pooh Pooh वा Interjectional Theory कहल जाइत अछि। एहि सिद्धांतक अनुसार मनुष्य भावात्मक प्राणी छल आ दुःख-सुख, हास्य, विष्मय आदिक लेल हुनका मुख सँ आह, ओह, उह, फई आदि बाहर भऽ जाइत छल जे बादमे विकसित भऽ कऽ भाषा बनि गेल। डार्विन महोदय एहि सिद्धांत केँ शारीरिक कारणसँ निसृत मानैत छथि।

एहि सिद्धांत केँ स्वीकार करबामे सेहो तारतम्य अछि। किएक तँ भिन्न-भिन्न भाषामे एकहिटा भाषाकेँ व्यक्त करबाक लेल एक समान शब्द नहि भेटैत अछि।

(१२) समन्वय सिद्धान्त—किछु भाषा-वैज्ञानिक सभ सिद्धांतकेँ भाषाक उत्पत्तिक आधार मानलनि अछि। एहि तरहेँ एक-एक सिद्धांत केँ फराक-फराक मानबाक अपेक्षा ओकर समन्वयकेँ भाषाक उत्पत्तिक कारण मानब निश्चित रूपसँ व्यापक अछि। मुदा सभ सिद्धांतकेँ समन्वित कऽ देलाक बादहुँ भाषाक अत्यन्त अंशक उत्पत्तिक समाधान भऽ पबैत अछि। आधुनिक भाषा-विज्ञान एहि विषय-वस्तु पर चिन्तन करब समयक अपव्यय मानैत छथि।

भाषाक परिवर्तनशीलता

कोनो भाषाक पाँच शताब्दीक इतिहासक अध्ययनसँ ओकर रूप मे भिन्नता देखना जाइत अछि। जाहि प्रकारेँ मानवक उद्‌भव ओ क्रमिक विकास भेल, ठीक ओहि रूपेँ भाषहुक जन्म ओ विकास भेल। विकासहिक दोसर नाम परिवर्तन थिक। यैह परिवर्तनशीलता भाषाक विकास थिक। वस्तुतः परिवर्तनक नामहि उत्पत्ति, विकास वा विनाश थिक। ई तीनू परिवर्तनक विभिन्न रूप थिक मुदा परिवर्तनक गति सभ वस्तु मे एक रंगक नहि होइछ।

मानव समाजमे भाषाक अर्जन करैछ। शैशवावस्थहि सँ माता ओ अन्य सदस्यक संसर्ग मे ओ एकर अर्जन करैछ। पैतृक संपत्ति रूपें ओकरा संसार भेटैत छैक मुदा ई आवश्यक नहि जे ओ पैतृक भाषा सैह बाजय। जँ ओकरा अन्य भाषाभाषीक मध्य राखि देल जाय तँ ओ अपन मातृभाषाक बदलामे अन्य भाषा सीखत। मुदा ई स्मरणीय जे भाषा लोक समाजहि अर्जन करैछ। भाषाण सिखबाक प्रारम्भिक शिक्षा वस्तुतः भाषण-ध्वनिक अनुकरण करब थिक। एवं प्रकारेँ संसर्ग ओ अनुकरणसँ जे भाषाणकृत भेद होइछ से स्वाभाविक भेल जाइछ। मानवक प्रवृत्ति साधारणतया ई रहैछ जे ओ परम्परागत प्राप्त ध्वनिक रक्षा करबाक प्रयास करैछ (हाथ, 7 हाँथ 7 हात—हाथ संस्कृत-संस्किर्त…) तथापि शिक्षित ओ अशिक्षित भाषा मे बड़ परिवर्तन (भेद) बुझना जाइछ। पढ़ल-लिखल लोक जखन कोनो नव शब्द सीखैत छथि तखन ओकर शुद्ध ओ संस्कृत रूप ओ उच्चारणकेँ ग्रहण करैत छथि मुदा अपढ़ लोकक भाषामे किछु ने किछु विकार भइए जाइछ।

भाषा परिवर्त्तनशील अछि ओ एही परिवर्त्तनशीलतामे एकर विकास परम्परा निहित छैक। ई परिवर्त्तन दू रूपेँ होइछ—वाह्य ओ आभ्यान्तर। आभ्यान्तर परिवर्त्तन भाषाक विकासक सहज जातिमे स्वतः होइछ। ओ भाषा स्वतः कठिन रूपकेँ छोड़ि सरल दिस अग्रसर होइछ जकर फलस्वरूप भाषामे स्वाभाविक रूपें जे विकार उत्पन्न होइछ सैह एकर परिवर्त्तनशीलता अछि।

वाह्य परिवर्त्तन वाह्य प्रभावक कारण होइछ। अन्य भाषाक सम्पर्क विदेशी प्रभाव, विभिन्न संस्कृतिक संगम, आदि भाषाक क्षेत्रकेँ विस्तृत बनबैछ। फलस्वरूप भाषामे विकास अथवा परिवर्त्तन स्वाभाविक ओ अनिवार्य भऽ जाइछ।

एहि परिवर्त्तनक अनेक कारण अछि। एहि परिवर्त्तनकेँ दू वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि—(१) आभ्यान्तर वर्ग ओ (२) वाह्य वर्ग।

(१) आभ्यान्तर कारण वा वर्ग—भाषा विकासमे जतय बाह्य कारण होइत अछि, ओतय आभ्यन्तर कारण सेहो होइत अछि, जकर उपेक्षा नहि कयल जा सकैत अछि। एहि अन्तर्गत किछु कारण भाषाक प्रकृतिसँ संबंधित होइत अछि आ किछु प्रयोगकर्ताक अभिवांछित प्रयत्न-लाघव ओ दुःख सुखक कारण सम्भव होइत अछि। वास्तवमे आभ्यन्तर वर्गक अन्तर्गत ओ सभ कारण अबैत अछि जे बाहरसँ प्रभावित नहि होइत अछि। संक्षेपमे मुख्य कारणक वर्णन एतय कऽ रहल छी।

(क) रचनागत अन्तरिक कारण—'भाषा पारस्परिक बोधक महत्त्वपूर्ण ध्वन्यात्मक सामाजिक साधन थिक।' उद्‌देश्यक प्रभावपूर्णता ओ प्राप्तिक लेल भाषा बोझिल ओ अस्पष्ट भऽ जाइत अछि, दोसर दिस ओ भावक प्रेषणीयतामे बाधक सिद्ध होइत अछि।

(ख) प्रयोगसँ घिसा जायब—अधिक प्रयोगसँ भाषा सेहो परिवर्तित होइत अछि।

(ग) **बल अथवा बलाघात**—किछु ध्वनि पर बल देल जाइत अछि, जाहि कारणेँ अन्य ध्वनि कमजोर पड़ि जाइत अछि आ समाप्त भऽ जाइत अछि। सामान्यतः कहल जाइत अछि जे मैथिलोमे बलाघात नहि अछि। तैयो वक्ता कहियो-कहियो कोनो बात पर जोर देबाक लेल संबद्ध शब्द पर आघात करैत अछि, जेना सभ भाषामे होइत अछि आ एहन बलाघातक गणना स्वनिम (Suprasegmental Phoneme) मे होइत अछि। मैथिली मे एहन बलाघात सामान्यतः प्रथम अक्षर पर पड़ैत अछि। एहि प्रसंगमे एक विशेष बात ई अवलोकनीय अछि जे बलाघात जखन ह्रस्व स्वर पर, खास कऽ अ पर पड़ैत अछि तखन एकर फलस्वरूप अगिला व्यंजन दोहरा जाइत अछि। यथा—

मानक	आधातित
कतेक	कत्ते
हमर	हम्मर
अपन	अप्पन
एतेक	एत्ते
बड़	बड्ड
असल	अस्सल

(घ) प्रयत्न लाघव मनुष्य सभ कार्यमे कम-सँ-कम परिश्रममे अधिक सँ अधिक कार्य करबाक प्रवृति रखैत अछि। भाषाक क्षेत्रमे सेहो कम-सँ-कम बाजि कऽ ओ अधिक सँ अधिक बात कहऽ चाहैत अछि, जाहिसँ बोलीमे नव-नव परिवर्त्तन देखा पड़ैत अछि। यथा भावावेशमे चमार 7 चमरा बाँहि 7 बहियाँ अछि।

ध्वन्यात्मक स्तर—अनाजक नाज, उपाध्यायक ओझा वा झा, एतय लोप भेल अछि। कतहु-कतहु आगम सेहो होइत अछि—कृष्ण मे कन्हैया, प्रसादक परसाद अदि। ई मुख-सुखक लेल कयल जाइत अछि।

व्याकरणिक स्तर—वाक्य मे ई घटित होइत अछि। पूरा वाक्य नहि बाजि क' छोट क' देल जाइत अछि। दू प्रकारक वाक्यैकदेश होइछ, तिङन्तपद विरहित ओ विभक्त्यन्त पदविरहित। एहि दुनू प्रकारक वाक्यैकदेशक प्रयोग सुरेन्द्र झा 'सुमन' कलात्मक ढंगसँ अपन गद्य-शैलीमे कयने छथि। हुनक निबन्ध "गाँधीजी की छलाह ?" शीर्षकक किछु पंक्ति दृष्टव्य—

"दरिद्रनारायण, तेँ अर्धनग्न। वृद्धवत् उपदेशक। युवकवत् सदा संघर्ष लए प्रस्तुत। बालक जकाँ स्वच्छ सरल ओ स्मितमुख।"

एहि तरहक प्रयोगक वर्णन ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर' ओ अन्यत्र भेटैत अछि।

एकर अतिरिक्त मुख-सुख, मानसिक स्तर वा सजगता, अनुकरणक अपूर्णता तथा बुझि-सुझि कऽ बाजब मे परिवर्तन देखाओल जा सकैत अछि।

(२) बाह्य कारण वा वर्ग--भाषा पर भौतिक वातावरणक सर्वाधिक प्रभाव पड़ैत अछि। एहि मतकेँ माननिहारमे हेइनरिख, बेन्फी, कॉलिन्स आदि छथि। एहि मतक अनुसार गरमी' सर्दी, कठिन वा कम परिश्रम, रहन-सहन, स्वभाव एवं आचरण आदिक भाषा पर प्रभाव पड़ैत अछि।

(क) भौगोलिक वा भौतिक वातावरण—मैदानमे भाषामे दूर धरि एकरूपता बनल रहैत अछि; किएक तँ प्रजाक सम्पर्क बनल रहैत अछि। एकर विपरीत पहाड़ वा एहन मार्गमे जतय जयबाक साधन कम रहैत अछि वा एकदम नहि रहैत अछि, नदी आदि बीचमे व्यवधान उपस्थित करैत अछि, जाहिसँ सम्पर्कमे बाधा उपस्थित होइत अछि, परिणामस्वरूप भाषाक

विकास अलग-अलग होइत अछि तथा कतेको भाषा ओ बोली विकसित भ' जाइत अछि।

सम्पन्न लोकक भाषा अधिक विकसित होइत अछि, अपेक्षाकृत पिछड़ल वर्गक भाषासँ; किएक तँ पिछड़ल वर्गके जीवन ओ जीविकाक लेल संघर्ष कर' पड़ैत छैक। अतएव विचार शक्ति कम होइत अछि। सहीं कारणे हुनक भाषा विकसित नहि होइत अछि। एकर अतिरिक्त समृद्ध लोक गूढ़ विषय पर मनन करैत छथि, अपन विचारकेँ व्यक्त करैत छथि, अतएव हुनका अभिव्यंजना-शक्ति अधिक होइत अछि। परिणामस्वरूप भाषा सेहो विकसित होइत अछि। सम्पन्नता पर उपजाऊ भूमि ओ औद्योगिक विकासक सेहो प्रभाव पड़ैत अछि।

(ख) ऐतिहासिक कारण—भाषाक परिवर्तन पर भूगोलक अलक्षित प्रभाव पड़ैछ, मुदा इतिहासक बहुत स्पष्ट। ऐतिहासिक कारणमे विदेशी आक्रमण, राजनीतिक विप्लव, व्यापारीक सम्बन्ध आदि अबैछ। विदेशी ध्वनि ओ शब्द—तथा वाक्यविन्यास सभमे प्रभाव—एकर बहुलता सभ भाषामे।

(ग) सांस्कृतिक कारण—संस्कृति समाजक आवश्यक अंग थिक। एकर प्रभाव सेहो भाषा पर पड़ैत अछि।

सांस्कृतिक प्रभावक चर्चा सेहो इतिहासक अन्तर्गत कयल जा सकैत अछि, किएक तँ सांस्कृतिक प्रभाव सेहो ऐतिहासिक घटनाक एक गोट अंग अछि; मुदा स्पष्टताक हेतु एहि पर पृथक विचार करब अपेक्षित अछि। पुनः इहो आवश्यक नहि जे संस्कृतिक संगम राजनीतिक कारणसँ प्रेरित भेल हो। संसारक विभिन्न देशमे अनेक बेर सांस्कृतिक जागरण भेल अछि – एकर प्रभाव भाषा पर सेहो –

संस्कृतिक सम्मेलनसँ ग्रीक-अंग्रेजी, आस्ट्रिक-द्रविड़, आर्य-यवन आदि भाषामे अनेक परिवर्त्तन भेल अछि।

(घ) साहित्यिक कारण—साहित्यिक प्रभाव सेहो भाषा परिवर्त्तनमे सहायक सिद्ध होइत अछि। भक्ति साहित्यिक भाषा जनभाषा अछि। प्रगतिशील साहित्य ओ नव लेखनक कारण भाषामे परिवर्त्तन रूपसँ परिलक्षित अछि।

(च) वैयक्तिक कारण—किछु व्यक्ति एहन प्रभावशाली होइत छथि जे हुनक भाषापर सेहो प्रभाव पड़ैत अछि।

(छ) बजनिहारक उन्नतिक कारण सेहो भाषा परिवर्तित वा विकसित होइत अछि। कहियो-कहियो पुरान शब्दक नव अर्थ आबि जाइत अछि वा नव शब्दक आगमन भ' जाइत अछि।

एहि तरहें आभ्यन्तर एवं वाह्य प्रभाव कलान्तरमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

———

भाषाक वर्गीकरण

वाक्यविज्ञान एवं पदरचनाक दृष्टिसँ कोन-कोन भाषा कोन रूपें कोन भाषासँ साम्य रखैत अछि, एकरहि दृष्टिमे राखि ओकरा सभकें विभिन्न वर्गमे बाँटल गेल अछि। एकर आधार वाक्य-विचार ओ प्रकृति प्रत्यय विचार (पदरचना) अछि। संसारमे भिन्न-भिन्न लोकक भाषा-शैली भिन्न-भिन्न अछि। अतः ओहि सभ भाषामे वाक्यरचना ओ पदरचना एक समान नहि अछि। उदाहरण स्वरूप तुर्की ओ चीनी भाषाकें देखि सकैत छी। चीनी भाषामे प्रत्येक शब्द अपन पृथक सत्ता रखैछ, एकर शब्द प्रकृति-प्रत्ययसँ रहित होइतहुँ वाक्य बनबैछ। मुदा तुर्की भाषा ठीक एकर विपरीत अछि। एकर शब्द सभकें सर्वथा सम्बद्ध राखए पड़ैछ संगहि एहिमे प्रकृति-प्रत्यय भेद सेहो अस्पष्ट अछि। मुदा संस्कृत लैटिन ओ आधुनिक भाषा के प्रकृति प्रत्यय भेद स्पष्ट अछि। अतः वाक्य-विज्ञान ओ पद-रचनाक दृष्टिसँ कोन भाषा ककरासँ साम्य रखैछ तकरे ध्यानमे राखि आकृतिमूलक वर्गीकरण कयल गेल।

आकृतिमूलक वर्गीकरणक दृष्टिसँ भाषा दू वर्गमे विभक्त कयल जाइछ—

(१) अयोगात्मक (Isolating) ओ (२) योगात्मक (Agglutinating)

(१) **अयोगात्मक (Isolating)**—एहिमे प्रत्येक शब्दक स्वतन्त्र सत्ता रहैछ; एहिमे पृथक-पृथक सम्बन्ध-तत्त्व अथवा अर्थ तत्त्वकें व्यक्त करबाक क्षमता रहैछ। कोनो शब्द कर्त्ता अछि किंवा कर्म अथवा विशेषण से सम्बन्ध वाक्यमे प्रयोगहिसँ स्पष्ट होइछ, अन्यथा नहि। चीनीक वाक्य देखू—

ङगो त नि —हम मारैत छी तोरा (I beat you)

[illegible] (You beat me)

एहि प्रकारें अयोगात्मक भाषामे सम्बन्ध तत्त्वक बोध स्वतंत्र शब्दें ओ पदक्रमें विभक्ति आदि जोड़ि कऽ नहि। सम्बन्ध तत्त्व ओ अर्थतत्त्वकें व्यक्त करबाक सामर्थ्य प्रत्येक शब्दकें पृथक-पृथक रहैत छैक। वाक्यक पदक्रमकें उनटि देलासँ शब्दमे कोनो विकार नहि होइछ।

(२) **योगात्मक भाषा (Agglutinating)**—योगात्मक शब्दसँ स्वयं स्पष्ट अछि जे एहि वर्गक भाषामे प्रत्यय, विभक्ति अर्थात् 'सम्बन्ध-तत्त्व' आदि जोड़ि कऽ शब्द ओ वाक्यक निष्पत्ति कयल जाइत अछि। विशेष बात ई जे अर्थ-तत्त्व ओ सम्बन्ध तत्त्व एक-दोसरासँ मिलल रहैत अछि। योगात्मक कें निम्नलिखित तीन वर्गमे राखल जा सकैत अछि—

(क) अश्लिष्ट योगात्मक (Simile Agglutinating)

(ख) श्लिष्ट योगात्मक (Inflecting)

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक (Incorporating)

(क) **अश्लिष्ट योगात्मक भाषा**—अश्लिष्ट योगात्मक भाषामे सम्बन्ध तत्त्व ओ अर्थ-तत्त्व एहि प्रकारसँ जोड़ल रहैत अछि जे दुनूक स्थित स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि प्रकारक भाषाक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण तुर्की अछि; यथा—

एव - घर (एक वचन)

एव देन—घर सँ

एव इम—हमर घर

एव-इम-देन —**हमर घर सँ**

अश्लिष्ट योगात्मक भाषाकें अर्थ-तत्त्वमे रचना-तत्त्वक योगक स्थानक कारण चारि वर्गमे विभाजित कयल जाइत अछि—

(१) पूर्व योगात्मक (Prefix Agglutinative)

(२) मध्य-योगात्मक (Infix Agglutinative)

(३) अन्त-योगात्मक (Suffix Agglutinative)

(४) पूर्वान्त-योगात्मक (Presuffix Agglutinative)

डॉ. भोलानाथ तिवारी एक अन्य भेद 'आंशिक योगात्मक' (**Partially** Agglutinative) सेहो मानलनि अछि। हुनक कथन छनि जे एहि वर्गक भाषा योगात्मक एवं अयोगात्मक दुनूक मध्यमे पड़ैत अछि आ दुनूक चिह्न एहिमे भेटैत अछि।

(१) **पूर्व-योगात्मक भाषा (Prefix Agglutinative Languages)**—

एहि भाषाक शब्दक रचनामे योग आगाँ होइत अछि। प्रत्ययक स्थान पर उपसर्ग लगैत अछि। अफ्रीकाक बांटू भाषामे ई प्रवृत्ति पाओल जाइत अछि। हुनक काफिर ओ जुलू भाषाक उदाहरण देखल जाय—

जुलु—उमुन्तु—एक आदमी

अबन्तु—कतेको आदमी

एतय, उमु—एकवचनक चिह्न

अब—बहुवचनक चिह्न अछि जकर मिलनसँ उपर्युक्त शब्द बनैत अछि।

काफिर भाषामे कु—लेल

ति—हम

एकर योगसँ कुति बनैत अछि, जकर अर्थ अछि हमरा लेल। अंग्रेजीमे सेहो एहि प्रकारसँ रचना-तत्त्व पहिने आबि जाइत अछि—

फॉर मी—हमरा लेल।

(२) मध्य योगात्मक भाषा (Infix Agglutinative Languages)—

एहि भाषामे योग मध्यमे होइत अछि। शब्द प्रायः दू अक्षरक होइत अछि। उदाहरणक लेल संथाली भाषा 'मपन्झि' केँ लेल जा सकैत अछि।

प—बहुवचन चिह्न

मन्झि—मुखिया

मपन्झि—बहुत मुखिया

(३) अन्त्य योगात्मक भाषा (Suffix Agglutinative Languages)—

एहि वर्गक भाषामे योगक क्रिया शब्दक अन्तमे सम्पन्न होइत अछि। भारतक द्रविड़ भाषा तथा यूराल-अल्टाइक परिवारक भाषा एही वर्गक अन्तर्गत अबैत अछि। उदाहरणक लेल कन्नड़ भाषाक 'सेवक' जे बहुवचनमे कारकमे प्रयुक्त होइत अछि एवं तुर्कीक 'एवं' शब्द लेल जा रहल अछि—

कन्नड़—सेवक	बहुवचन
कर्त्ता—	सेवक-रू
कर्म—	सेवक-रन्नू
करण—	सेवक-रिन्द
सम्बन्ध—	सेवक-र

तुर्की—एव

सेव—घर

एवलेर—कतेको घर

एवलेर इम—हमर घर

एहि तरहेँ शब्दक अन्तमे रचना तत्त्व जोड़ि कऽ अर्थ बदलि देल जाइत अछि।

(४) पूर्वान्त योगात्मक (Pre-suffix Agglutinative)—पूर्वान्तक अर्थ होइत अछि पहिने अन्तमे। अतएव शब्दमे पहिने ओ अन्तमे जोड़िकऽ शब्द वा पद बनाओल जाइत अछि। एकर उदाहरण न्यूगिनीक मकोर भाषामे भेटैत अछि, उदाहरणक लेल—'म्नफ' शब्दकेँ लेल जाय, जकर अर्थ अछि 'सूनब' एहि शब्दक आरम्भमे 'ज' ओ अन्तमे 'उ' जोड़ि कऽ 'हम सुनैत छी तोहर बनाओल जाइत अछि। अतः

म्नफं—सुननाइ

ज-म्नफ-उ—हम सुनैत छी तोहर।

(ख) श्लिष्ट योगात्मक (Inflecting Agglutinative)—जखन कोनो भाषामे रचनात्मक तत्त्वक योगसँ अर्थ-तत्त्वक भाग पर सेहो परिवर्त्तनक दर्शन होइत अछि, मुदा रचना-तत्त्वक दर्शन अवश्य होइत अछि तखन ओ भाषा श्लिष्ट-योगात्मक भाषा होइत अछि आ ई भाषा श्लिष्ट-योगात्मक वर्गक अन्तर्गत अबैत अछि, उदाहरणक लेल—अरबीक क्-त्-ल् (मारब) धातुकेँ लेल जा सकैत अछि, जाहिमे विभिन्न रचना तत्त्वक योग कऽ—क् त् ल—मारब—कतल—खून, कातल—मारएबला, किरल—शत्रु, कितल ....प्रहार, यकतुल—ओ मारैत अछि।

संस्कृतक किछु शब्दक उदाहरण दऽ कऽ अपन मन्तव्यकेँ ओरो स्पष्ट कयल जा सकैत अछि—

वेद—वैदिक

इतिहास—ऐतिहासिक

भूगोल—भौगोलिक

एहि शब्दमे 'इक' जोड़ल गेल अछि, मुदा आरम्भिक 'वे', 'इ' ओ 'भू' मे विकार आबि गेल अछि।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे विकार आबि गेला पर सेहो रचना-तत्त्व ओ अर्थ-तत्त्वकेँ चिह्नवामे कोनो कठिनता नहि होइत अछि। विशेष बात ई अछि जे एहि परिवारक भाषा विश्वमे सर्वाधिक सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित भाषा अछि। भारोपीय, सामी ओ हामी परिवारक भाषा श्लिष्ट योगात्मक वर्गक अन्तगत अबैत अछि।

किछु व्यक्ति 'संस्कृत' ओ 'अरबी' केँ लऽ कऽ एहि वर्गक दू भेद 'बहिर्मुखी' ओ 'अन्तर्मुखी' कयलनि अछि, जे बहुत मान्य नहि अछि। ओना

अन्तर्मुखीक सेहो दू वर्ग—'संयोगात्मक' ओ 'वियोगात्मक' दू भेद भाषावेत्ता कयलनि अछि। एही नामसँ 'वहिर्मुखी'क सेहो दू भेद कयल गेल अछि।

श्लिष्ट भाषाक उपभेद – एहि वर्गक भाषाक सेहो दू उपवर्ग कयल गेल अछि—

(१ अन्तर्मुखी ओ (२) बहिर्मुखी श्लिष्ट।

(१) अन्तर्मुखी श्लिष्ट (nternal Inflactlonal)—अन्तर्मुखी श्लिष्ट मे जोड़ल भाग अर्थतत्त्वक बीचमे घुलि-मिलि जाइछ। 'सेमेटिक' ओ 'हेमेटिक' कुलक भाषा एही उपवर्गक अछि। एहिमे अधिकतर धातु तीन वर्णक होइत अछि तथा सम्बन्ध तत्त्व अधिकांशतः 'स्वर' होइत अछि। सम्बन्ध तत्त्व धातु सँ घुलि-मिलि जाइत अछि। अरबी भाषाक धातु 'कतुब' सँ बनल शब्द 'किताब' 'कातिब' (लेखक) 'कुतुब' (पुस्तक) मकतब (पाठशाला) आदि एकर उदाहरण अछि।

अन्तर्मुखी श्लिष्ट भाषाक सेहो दू उपभेद कयल जाइत अछि—

(क) संश्लेषणात्मक (Synthetic) एवं विश्लेषणात्मक (Analytic)।

संश्लेणात्मकके संयोगात्मक एवं विश्लेषणात्मकके वियोगात्मक सेहो कहल जाइत अछि।

विभक्तियुक्त भाषा कम अथवा बेशी अंशमे अवश्ये संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक होइत अछि। संश्लेषणात्मक भाषासँ आशय अछि ओ भाषा जाहिमे एक शब्दक द्वारा जटिल वा संश्लिष्ट-जुड़ल (अनेक शब्दक एक संग) अर्थ प्रकट कयल जाय। एकरा अभेदात्मक सेहो कहल जा सकैछ। एहिमे सहायक क्रिया, तथा परसर्ग आदिक आवश्यकता नहि छल। शब्दमे सम्बन्ध तत्त्व जुटल रहैत छल। (यथा—जिगमिषति, जिगमिषामि, एकरा विपरीत विश्लेषणात्मक भाषा ओ अछि जाहिमे ओही अर्थक अभिव्यक्तिक हेतु अनेक शब्दक प्रयोग कयल जाय (भेदात्मक-वियोगात्मक) करोति · (सः करोति—He is doing ओ करैत अछि। वह करता है—)

भारोपीय भाषा-परिवारक लैटिन, ग्रीक, अवेस्ता, संस्कृत संश्लेषणात्मक छल। एहि परिवारक लिथुआनिअन भाषा अपन भौगोलिक स्थितिक कारणे एखनहु संश्लेषणात्मक अछि। (अधिक परिवर्त्तन नहि होयबाक कारणे)

ग्रीक लैटिन भाषाक रचनामे संस्कृतहि जकाँ अधिक संश्लेषणात्मक पाओल जाइछ। एहिमे Person, Number, Tense, Verb आदि सभ एकहिमे जुटल रहैत छल। आधुनिक कालमे हिन्दी एवं अंगरेजी विश्लेषणात्मक सभसँ नीक उदाहरण अछि। एकरा सभके देखि ओ आकृतिक परिवर्तनक प्रवृत्तिकेँ ध्यानमे राखि सामान्य रूपेँ ई कहल जा सकैछ जे भारोपीय कुलक भाषा सम्प्रति विश्लेषणात्मक भेल जा रहल अछि। आधुनिक आर्य भाषा सभमे एहि प्रवृतिक अनेको उदाहरण अछि। संस्कृत तँ संश्लेषणात्मक छल, प्राकृत भाषाक सौर सेनी भेद आदि संश्लेषणात्मक रहल मुदा आधुनिक भाषा सभ एकर विपरीत विश्लेषणात्मक देखि पड़ैछ। एकर कारण ई भेल जे (भाषाक परिबर्त्तन क्रमशः संस्कृतक विभक्ति सभक लोप होइत गेल एवं पृथक शब्द अलगसँ लगएबाक आवश्यकता पड़ि गेल—परसर्ग, सहायक क्रिया आदि लगाओल गेल। (पठति—पढ़ैत अछि—अछि पूर्वमे पठतिमे निहित छल, आब एकरा हेतु पृथक शब्द)

आधुनिक आर्यभाषामे—

बंगाली —आमि जाइते छी।

आमि जाच्ची>जाच्ची।

मैथिली—सँ-कारणसँ (कारणे), हाथसँ - हाथेँ

हिन्दीसँ विपरीत एहिमे विभक्ति संगहि लागल रहैत अछि। आधुनिक कालमे बंगला ओ मैथिलीमे संश्लेषणात्मक प्रवृत्ति देखना जाइछ। भारोपीय परिवारक भाषामे सेहो किछु उदाहरण—

संश्लेषणात्मक—गुजराती —मैं कह्यूं जे>भकुंजे (हम ओ कथा कहल)

मेरठक बोली - उसने कहा>उन्नेका

मुदा एहि वर्गक भाषा वियोगात्मक भेल जा रहल अछि।

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषा (Incorporative Languages)—एहि वर्गक भाषामे अर्थ-तत्त्व ओ रचना तत्त्व एक दोसरमे एतेक घुलि-मिलि जाइत अछि जे ओकरा फराक करब तँ दूरक बात भेल, चिन्हब सेहो कठिन भऽ जाइत अछि। वास्तविकता तँ ई अछि जे शब्दांशक योगस नव शब्द बनैत अछि। एहन शब्द पूर्ण वाक्यक अर्थ देबऽ लगैत अछि। एहि लेल संस्कृतक एक शब्द लऽ कऽ स्पष्टीकरण कयल जा सकैत अछि—

जिगमिषति —ओ जाय चाहैत अछि।

एहि एक शब्द 'जिगमिषति' मे ओ जाय, चाहैत तथा वर्तमान कालिक क्रिया आदि आशयक ज्ञान भऽ जाइत अछि एवं एकहिटा शब्दसँ पूर्ण वाक्यक ज्ञान भऽ जाइत अछि। भाषावेत्ता सभ एहि वर्गके सेहो दू भागमे विभाजित कयलनि अछि—

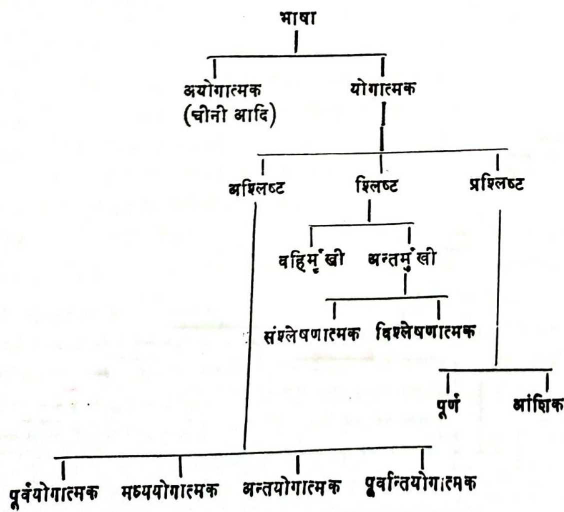
(अ) पूर्ण—प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषा ओ (ब) आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषा।

प्रथममे पूर्ण योग होइत अछि आ दोसरमे सर्वनाम तथा क्रियाक सम्मिश्रण एहि ढंगसँ होइत अछि जे क्रिया अपन महत्त्वकेँ गमा कऽ सर्वनामक पूरक भऽ जाइत अछि। प्रथमक उदाहरण ग्रीनलैण्डक मूल निवासीमे भेटैत अछि; यथा—

अडलिसर्—माछ मारब
पेअर्तोरि—कोनहु कार्यमे संलग्न होयब
पिन्नेसुअपोर्क—ओ शीघ्रता करैत अछि
अउलिसरिअतोर्रसुअर्पोक—ओ माछ मारबाक हेतु शीघ्रतासँ जाइत अछि।

दोसर वर्गक उदाहरण पेरानीज पश्चिमी भागक भाषा 'बास्क' मे भेटैत अछि। यथा—'दकारि किओत' क अर्थ होइत अछि जे 'हम हिनका हुनका लग लऽ जाइत छिऐन' तथा 'नकारसु'क 'अहाँ हमरा लऽ जाइत छी'। एहि दुनू वाक्यमे सर्वनाम ओ क्रिया अछि, मुदा योग एहन अछि जे ओ क्रिया) सर्वनामक पूरक मात्र अछि।

किछु दिन पूर्व धरि आकृतिमूलक वर्गीकरणक बहुत महत्त्व छल, मुदा आब अनुभव कयल जाइछ जे एहि वर्गीकरणक आधार पर वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि बाहर कयल जा सकैछ। किएक तँ श्लिष्ट वा प्रश्लिष्टमे स्पष्ट विभाजन रेखा खींचब संभव नहि अछि। एहि सम्पूर्ण वर्गीकरणकेँ निम्नांकित चित्र द्वारा औरो स्पष्ट कयल जा सकैत अछि—



पारिवारिक वर्गीकरण

सत्रहम शताब्दी मे जखन यूरोपीय विद्वानलोकनि केँ संस्कृतक पता लागल आ ओ लोकनि ग्रीक, लैटिन आदि भाषाक संग एकर तुलनात्मक अध्ययन कयल तँ ई निष्कर्ष बहरायल जे एतेक समानता आकस्मिक नहि भऽ सकैछ। अवश्ये ई सभ भाषा कोनो एक मूल भाषा सँ बहरायल अछि। उदाहरण लेल डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा द्वारा प्रस्तुत निम्न सारणी सँ एहि तथ्यकेँ देखल जा सकैत अछि —

संस्कृत	लातिन	फारसी	अंग्रेजी	जर्मन
पितृ	पातेर	पिदर	फादर	फातेर
मातृ	मातेर	मादर	मदर	मुत्तेर
भ्रातृ	फातेर	बिरादर	ब्रदर	ब्रूदेर

वास्तव मे एहि भाषायी क्षेत्र मे हजारो कोसक दूरी रहलाक बादहु एतेक सादृश्य होयब आश्चर्यजनक वस्तु थिक। एहि साम्यक एकमात्र कारण प्रतीत होइत अछि—एकर कोनो एक मूल भाषा मे विकसित होयब। यैह समानता निश्चित रूप सँ भाषाविज्ञानक भूमिका प्रस्तुत करैत अछि।

भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणक लेल वा भाषा सभ केँ एकहिटा परिवारक अन्तर्गत रखबाक लेल हमरा निम्नलिखित बात पर विचार करऽ पड़ैत अछि, जाहि केँ पारिवारिक वर्गीकरण आधारक संज्ञा देल जाइत अछि।

(१) शब्द भण्डार (शब्द ओ अर्थ), (२) पद-रचना, (३) वाक्य रचना, (४) ध्वनि (५) अर्थ तथा स्थानिक नैकट्य। किछु विद्वान एहि केँ तीन श्रेणी मे रखैत छथि— (१) शब्द-भण्डार, (२) व्याकरण-रचना, (३) ध्वनि। वास्तविकता तँ ई अछि जे एहि महत्व पर भाषाविज्ञान वेत्ता सभ मे मतैक्य नहि अछि। क्यो ककरो महत्त्वपूर्ण मानैत छथि तँ क्यो ककरो। ध्वनि केँ सुदृढ़ मानबा मे कतेको बात कहल जाइत अछि। कालान्तर मे ध्वनि परिवर्तित भऽ जाइत अछि। एक परिवारक भाषा सिद्ध भऽ गेलाक बादहुँ ध्वनि सभ भाषा मे उपलब्ध नहि होइत अछि; उदाहरणक लेल—संस्कृतक ड, ढ, ध्वनि आब ड़, ढ़ (दृढ़, गूढ़) उच्चरित होबऽ लागल अछि। कहबाक तात्पर्य जे ध्वनि साम्य कोनो महत्वपूर्ण आधार नहि अछि, किएक तँ एकहिटा शब्द

कतेको भाषा मे प्रयुक्त होइत अछि, उदाहरणक लेल—मैथिली मे फारसीक शब्द अरबो सँ आयल अछि। आब एक शब्द तीनू भाषा मे उपलब्ध होइत अछि वा अंग्रेजी शब्द तीनू भाषा मे एक रंगक बनि गेल अछि। एहि शब्दक आधार पर एहि भाषा सभ केँ एक परिवारक मानब समीचीन नहि होयत। अर्थ परिवर्त्तन सेहो एही तरहेँ अनिश्चितता सँ परिपूर्ण अछि; उदाहरणक लेल– संस्कृत मे 'मृग' शब्द पशुमात्रक द्योतक छल, मुदा आगाँ जा कऽ एकर अर्थ पशु-विशेषक वाचक भऽ गेल। ई छल एक उदाहरण अर्थ संकोचक; आब अर्थ विस्तारक सेहो एक उदाहरण अपन मन्तव्य स्पष्ट करबाक लेल पर्याप्त होयत। 'स्याही' शब्द 'कारी' स्याहीक लेल प्रयुक्त होइत छल, मुदा आब नीली, लाल, हरिअर आदि स्याही भऽ गेल।

शब्द समूहक एकरूपताक अपेक्षा समानता अधिक महत्वक वस्तु थिक। एहि कार्य मे तत्सम शब्दक अपेक्षा तद्भव शब्द अधिक महत्वपूर्ण होइत अछि। तत्सम शब्द अपन सही रूप मे अपना लेल जाइत अछि, मुदा तद्भव शब्द अर्थ तत्वक वास्तविक समानताक बोध करबैत अछि।

व्याकरणक समानता शब्द समूहक समानता सँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। एहि विचार सँ जँ कोनो दू गोट भाषाक व्याकरण मे समानता अछि तँ ओकरा एक गोट परिवारक मानि लेबाक चाही।

एहि तीनू विशेषताक समानताक आधार पर भाषाक पारिवारिक (ऐतिहासिक) वर्गीकरण कयल जा सकैत अछि।

संसारक भाषाक वर्गीकरण संसारक सभ भाषाक एखन धरि वैज्ञानिक अध्ययन नहि भऽ सकल अछि आ एहि कारणे ई कहि सकनाइ जे संसार मे कतेक भाषा परिवार अछि आ ओहि कुल सँ कतेक उपकुल ओ कोन-कोन शाखा, उपशाखा आदि विकसित भेल अछि, अत्यन्त कठिन बात अछि। फ्रेडरिक मैक्समूलर संसार मे प्राय: सय भाषा परिवार बतओलनि अछि आ अन्य विद्वान भारोपीय, सेमेटिक, हैमेटिक, चीनी, यूराल अल्ताई, द्राविड़, मैलेपालिनेशिया, बंटू, मध्य अफ्रीकी, आस्ट्री पैसफिक आदि कुल मे विभाजन कयल अछि। मुदा ई वर्गीकरण बहुत ओझरायल अछि। अत: विभिन्न खंडमे एकरा बाँटि कऽ एकर अध्ययन करब अपेक्षित बुझना गेल।

संसारक भाषाक चक्र विभाजन—

(क) अमरीका भाषा चक्र (उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका) (ख) प्रशान्त महासागरीय भाषा चक्र (ग) अफ्रीका भाषा चक्र (घ) यूरेशियाई भाषा चक्र।

(क) अमरीका भाषा चक्र—एहि मे उत्तरी ओ दक्षिणी अमेरिकाक प्राय: सभ प्रमुख भाषा सम्मिलित अछि। एहि खण्ड मे प्राय: ३०० भाषा अछि जकरा ३० वर्ग मे राखल जा सकैत अछि। अधिकांश भाषा असंस्कृत अछि मुदा किछु भाषा में प्राचीन ओ सुन्दर साहित्य सेहो अछि। (मय, नहुअत्ल-प्राचीन) एक विशेषता किछु क्षेत्र मे पुरुष एक भाषा ओ स्त्री दोसर भाषा—एकर कारण ऐतिहासिक—(अरौनक भाषा भाषी पर करीब भा०क विजय, पुरुष सभकेँ मारि देल ओ स्त्रीगण सँ विवाह कयल। अद्यावधि स्त्रीगणक भाषा अरौनक ओ पुरुष करीब 'मय' ओ 'नहुअत्ल' भाषा मे लिपि ओ साहित्य दुनू उपलब्ध अछि।

एहि भाषा चक्रक वर्गीकरण भौगोलिक आधार पर एहि तरहेँ कयल गेल अछि—

	देशक नाम	भाषा
उत्तरी अमरीका	ग्रीनलैंड	एस्किमो
	कनाडा	अथबस्की
	संयुक्त राज्य	अकानकी (आदि)
		नहुअत्ल (प्राचीन)
	मेक्सिको	अजेतक
	युकत्तन	समय
दक्षिणी अमरीका	उत्तरी प्रदेश	करीब, अरोवक
	मध्य प्रदेश	गुअर्नी तुपी
	पश्चिमी प्रदेश	
	(पेरू ओ चिली,	अरौकन कुइचुआ
	दक्षिणी प्रदेश	चको, तिपरा देल, फूगो

(ख) प्रशांत महासागरीय चक्र—हिन्द महासागर एवं प्रशांत महासागरीय द्वीप खंडक प्रचलित भाषा सभ एहि चक्र मे परिगणित अछि। किछु भाषा अफ्रिकाक दक्षिणपूर्व मैडागास्कर तथा दक्षिण अमरीकाक पश्चिम मे स्थित ईस्टर द्वीप धरि प्रचलित अछि। एहि सभ मे परस्पर बहुत समानता अछि, ध्वनिक किछु विभिन्नता रहितहुँ साम्ये बेसी अछि। धातु दू अक्षरक, प्रथम अक्षर पर बलाघात, क्रिया मे उपसर्ग, प्रत्यय, विभक्ति लगैछ। संज्ञा मे लिङ्ग भेद नहि होइछ। थोड़ेक-थोड़ेक दूर पर बोली-भाषा मे परिवर्त्तन,

साहित्यिक भाषा कमहि अछि; मलायाक भाषामे नीक साहित्य अछि। प्रायः अश्लिष्ट योगात्मक रूप मे भेटैछ। मुदा बुझना जाइछ जे पूर्व मे ओ योगात्मक छल।

एहि चक्र मे अनेक भाषा अछि तथा ओहि अन्तर्गत असंख्य बोली अछि, मुदा ई भाषा तथा बोली सर्वथा संस्कार रहित अछि एवं ओहि मे साहित्य नाम मात्रक अछि। एहि मे सँ मात्र सुमात्रा-जावाक बोली 'मलाया' मे किछु साहित्य भेटैत अछि। एहि भाषा कें पाँच परिवार मे बाँटल जाइत अछि—

(१ मलायाई अथवा इन्डोनेशियाई परिवार

(२) मलेनेशियाई परिवार

(३) पालीनेशियाई परिवार

( ) पापुआई परिवार

(५) आस्ट्रेलियाई परिवार

एहिमे सँ पहिल तीन पैघ परिवार अछि आ शेष दू छोट। पहिल तीनके कहियो-कहियो एक पैघ 'मलय-पालीनेशियाई परिवार'क नाम सेहो दऽ देल जाइत अछि तथा कहियो पाँकोटाकें एही नामसँ सम्बोन्धित कयल जाइत अछि।

(ग) अफ्रीकी भाषा चक्र—अमरीकी चक्रक भाँति एहि चक्रक सेहो अधिकतर भाषा असभ्य जाति द्वारा बाजल जाइत अछि मुदा ओहिकें बजनिहार अमरीकी चक्रक भाषा बजनिहारक अपेक्षा अधिक सभ्य ओ संस्कृत अछि। एहि क्षेत्रमे (अ) बुशमैन परिवार (ब) बंटू परिवार (स) सूडान परिवार (द) सामी अथवा सेमेटिक परिवार तथा (इ) हामी अथवा हैमेटिक परिवारक भाषा बाजल जाइत अछि।

उत्तरी भागमे प्रायः दू हजार वर्ष धरि भाषाक प्राबल्य रहल मुदा दू-तीन सय वर्षसँ यूरोपीय जातिक लोक एहि प्रदेशक दक्षिणी भागपर अपन अधिकार जमा लेलक अछि आ एहिठामक मूल निवासी पड़ा कऽ भीतरक भागमे जा बसल अछि। सम्प्रति एकर संख्या प्रायः दस करोड़ अछि। पशुवत प्रपीड़ित कयलाक बादहुँ ई अपन सत्ता बनोने अछि। ई अपन संस्कृति तथा अपन अन्य विशेषता सभक पालन एखन धरि कऽ रहल छथि।

विदेशी द्वारा एहिठामक व्यापार आदिकें हथियालधबाक कारणें एहिठाम किछु वर्णसंकर भाषा निग्रो-अंग्रेजी, निग्रो-पुर्तगाली, निग्रो-फ्रेंच आदिक

प्रचलन सेहो भऽ गेल अछि। एकर अतिरिक्त अफ्रीकाक हउडा भाषा अधिकांश अफ्रीकी क्षेत्रमे प्रयुक्त होइत अछि।

(अ) बुशमैन परिवार—ई भाषा एही नामक जातिमे बाजल जाइत अछि। एहि जातिक लोक दक्षिणी अफ्रीकाक मूल निवासी बुझल जाइत अछि। हिनका लोकनिक असंख्य बोली अछि। साहित्यिक रूपमे मात्र किछु ग्रामगीत तथा ग्राम कथा उपलब्ध होइत अछि।

(ब) बंटू परिवार—ई भाषा सम्पूर्ण दक्षिणी अफ्रीकाक भूमध्य रेखाक भागमे बाजल जाइत अछि। एकर दक्षिण पश्चिम होटेंटाट आ बुशमैन परिवारक क्षेत्र ओ उत्तरमे सुडान परिवारक भाषा होटेंटाटक उत्तरमे अन्ध महासागर धरि एकरा बजनिहार पसरल छथि। एहि परिवारमे प्रायः १५० भाषा अछि; जकर वर्णन एहि तरहें कऽ सकैत छी।

(१) पूर्वी वर्ग—एहिमे काफिर, जुलु, किसुअहिली ओ किकांबा आदि अबैत अछि।

(२) मध्यवर्ग—एहिमे सेचुना, सेसुतो, सेरोलांग आदि तेकेजा आदि अबैत अछि।

(३) पश्चिमी वर्ग—एहिमे हरेरो, बुन्दा कांगो, इसबु ओ दुअल्ला आदि भाषा अबैत अछि।

एहि भाषामे कोनो साहित्य नहि अछि। जंजीबार ओ ओकर समीपवर्ती समुद्रतटक भाषा स्वहीलीमे किछु साहित्य उपलब्ध होइत अछि। एकर लिपि अरबी थिक। एकर अतिरिक्त एकर शेष ज्ञान पादरी सभक ओहि पुस्तक सभसँ होइत अछि जे ओ धर्म प्रचारक लेल बनौलनि अछि। लिपि रोमन अछि।

(स) सूडान परिवार—एहि परिवारक भाषा अफ्रीका महाद्वीपमे विषुवत रेखाक उत्तरमे पश्चिमसँ लऽ कऽ पूर्व धरि पसरल अछि। एहि भाषा क्षेत्रक उत्तरमे हामी परिवारक भाषा अछि। एहि परिवाकें सभ मिला कऽ ४३५ भाषा अछि, मुदा प्रायः ५ वा ६ कें लिपि अछि। एहिमे सँ बोलोफ, ईव, फ्यूल, हौसा, मोमा ओ नोबी आदि प्रधान अछि। एकर विभाजन निम्नलिखित चारि वर्गमे भऽ सकैत अछि—

(१) निग्रो सेनेगल भाषा—बोलोफ आदि।

(२) ईव भाषा आशानी परब्बा आदि।

(३) मध्यवर्ती हौंसा, सोंछराई आदि।

(४) नीलोत्तरी—बारी, डेंका आदि।

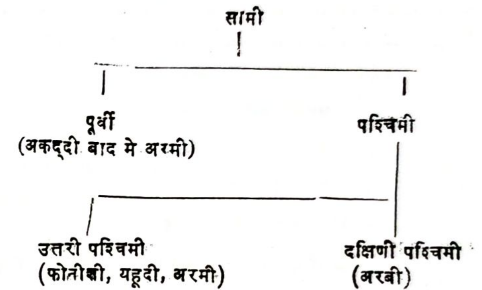
ई भाषा बड़ प्राचीन छि आ एहि मे चारिम सँ सातम शताब्दी धरिक लेख उपलब्ध होइत अछि।

(द) हैमेटिक अथवा हामी परिवार —बाइबिलक कथाक अनुसार हजरत नोहक पुत्र हैम अफ्रीका महाद्वीप रहनिहार मिश्रवासी, फोनेशियन, इथियोपियन, कन्नानाइट आदि-लोकक ओही तरहें आदि पुरुष मानल जाइत छथि जहि तरहें आर्य अथवा भारतवासीक मनु। हिनके नाम पर एहि भाषाक नामकरण भेल अछि। एहि परिवारक भाषा उत्तरी अफ्रिकामे पसरल अछि आ एहि भाषाकें बजनिहार किछु दक्षिणी-मध्य-अमेरिकामे सेहो पसरल अछि। एहि परिवारिक बहुत भाषाकें सामी परिवारक भाषा नष्ट कऽ देलक। एहि परिवारिक किछु भाषामे धार्मिक साहित्य तथा ऐतिहासिक महत्त्वक किछु शिलालेख भेटैत अछि। एहि परिवारक वर्त्तमान बोली अन्य परिवारसँ प्रभावित अछि। 'हौसा' भाषा जकर चर्चा सूडानी परिवारक अन्तर्गत भऽ चुकल अछि, एकर प्रमाण थिक। किछु विद्वानक मत अछि जे भाषा जे अफीकाक राष्ट्र-भाषा थिक—एही परिवारक अछि मुदा सुडानी परिवारसँ अधिक प्रभावित होयबाक कारणहि ओहि परिवारक अन्तर्गत गिनल जाइत अछि।

(इ) सामी अथवा सेमेटिक परिवारक भाषा —हजरत नोहक उभसँ पँच बालकक नाम सेम छल। ओ एशियाक दक्षिण-पश्चिम भागक बहुत लोकक अरब, असीरिया, तथा सीरियावलाक आदि पुरुष कहल जाइत छथि। यहूदी लोक कें सेहो हिनके सभक भाइ-बन्धु कहल जाइत अछि। हिनके नाम पर एहि क्षेत्र मे बाजल गेनिहार भाषा परिवारक नाम सेमेटिक पड़ल। एहि विभागक भाषा मुख्य रूपसँ एशिया मे बाजल जाइत अछि मुदा एहि परिवारक एक भाषा अरबी सम्पूर्ण उत्तरी अफ्रिका मे पसरि गेल अछि। पश्चिम मे मोरोक्को सँ लऽ कऽ पूबमे स्वेज धरि सम्पूर्ण मिश्र मे यैह सर्वेसर्वा अछि। अल्जीरिया ओ मोरोक्कोक राजभाषा सेहो यैह अछि। कार्थेज तथा हब्श देशमे सामी परिवारक भाषा बहुत प्राचीन काल सँ बाजल जाइत अछि। हब्शी राजभाषा सामी अछि ओ कतेको अन्य सामी भाषा ओ बोली एतय बाजल जाइत अछि।

एहि कें तथा हामी कें अनेक विद्वान लक्षण सभक आधार पर एकहि परिवारक मानैत छथि।

सामी भाषा बहुत महत्त्वक अछि। वास्तव मे प्राचीन सभ्यता विषयक ज्ञानक माध्यम मात्र आर्य चीनी ओ सामी भाषा अछि। सामी परिवारक भाषा कें पूर्वी ओ पश्चिमी विभाग मे बाँटल जाइत अछि। पश्चिमी भाषाकें उत्तरी पश्चिमी ओ दक्षिणी पश्चिमी नामक दू उपभेद मे बाँटल जा सकैत अछि। निम्नलिखित चित्र एकर परिचायक थिक।



पूर्वी सामीक भाषा अकद्दी प्राचीन बेबीलोनिया ओ असीरिया मे बाजल जाइत छल। ईसा सँ ३८०० वर्ष पूर्व धरिक इतिहास एहि भाषाक उपलब्ध होइत अछि। संस्कृतक भाँति एकरहु अत्यधिक महत्वपूर्ण बुझल जाइत अछि, मुदा बावेरू (प्राचीन वेबीलोनिया)क पतनक उपरान्त एकर स्थान अरमी भाषा लऽ लेलक।

उत्तरी पश्चिमी वर्गक प्राचीन भाषा फोनीशी यहूदी ओ अरमी छल। फोनेशीक लेख ९०० ई० पू० धरि उपलब्ध होइत अछि। एहि भाषाक स्थान भूमध्य सागरक तट छल आ व्यापार कुशल एकर बजनिहार उत्तरी अफ्रीका आदि मे सेहो एकर प्रचार ओ प्रसार कयलक। लिपिक प्रचार मे सेहो पर्याप्त कार्य कयलक। अरमी भाषा बाद मे एकरा समाप्त कऽ देलक।

यहूदी भाषा—फिलस्तीन मे बाजल जाइत छल आ बाइबिलक पुरान टेस्टामेंट एहि भाषाक प्राचीन रूप कें प्रस्तुत करैत अछि। अनुमान कयल जाइत अछि जे एकर किछु अंश ईसाक एक हजार वर्ष पूर्व धरि विद्यमान छल। ईसा सँ पूर्व पाँचम शताब्दी मे बाइबिलक पुरान अंशक सम्पादन भेल आ तखन एकर भाषा मे किछु परिवर्त्तन कऽ देल गेल।

अरमीक क्षेत्र उत्तर मे सोपोटैमिया मे छल। एतहि सँ एकर प्रसार सीरिया मे तथा चैल्डिया मे भेल एवं प्रायः ८०० ई० पू० मे ओ सम्पूर्ण प्रदेशक भाषा बनि गेल।

एहि तीनक अतिरिक्त एहि वर्गक एक अन्य भाषा 'सारी' सेहो अछि। ई भाषा सीरिया मे प्रायः १००० ईसवी धरि बाजल जाइत छल, मुदा आब ओकर स्थान अरबी लऽ लेलक अछि।

दक्षिणी पश्चिमी वर्गक सर्वप्रमुख भाषा अरबी अछि। अरब देशक उत्तरी, दक्षिणी ओ मध्य भाग मे फराक-फराक भाषा बाजल जाइत रहल अछि। मुदा एहि मे सँ प्रमुख मध्य भागक भाषा सँह रहल अछि। एहि भाषामे ईसवी चारिम शताब्दीक पूर्वहिक ग्रन्थ ओ लेख आदि उपलब्ध नहि होइत अछि, मुदा एतेक धरि अवश्य जे ईसाक सातम शताब्दी (मुहम्मद साहबक अविर्भाव काल)क पूर्व सेहो एहि भाषा मे नीक साहित्य सभ छल। कुरानशरीफ एही मध्यवर्ती अरबी मे अछि आ ओकर साहित्यिक विशेषताक आधार पर ई अनुमान कयल जा सकैत अछि जे अरब मे एकर पूर्व सेहो साहित्य-सेवा होइत छल। इस्लामक प्रचारक संग अरबीक प्रसार संसारक अन्य देश मे सेहो भेल। सम्प्रति अरबी सम्पूर्ण अरब मे उत्तर अफ्रीका तथा पश्चिमी अफ्रीका मे बाजल जाइत अछि। माल्टा मे सेहो एकरहि प्रयोग होइत अछि। एक समय स्पेनक मूर लोक सेहो एही भाषाक प्रयोग करैत छलाह। फारसी, उर्दू ओ तुर्की आदि अनेक भाषा कें ई प्रभावित कयलक। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे प्रयोग मे अयनिहार विज्ञान आदिक अनेक शब्द (अल्जेबरा, सिफर, जीरो, मैगजीन आदि) एही भाषाक अछि। वर्तमान अरबी भाषा आयोगा-वस्था मे अछि ओ बहुत सोझ तथा सरल अछि। कुरानक विकसित भाषा रहितहुँ वर्तमान अरबी कुरान शरीफक अरबी सँ बहुत भिन्न अछि एवं एहि ग्रंथक आधार पर आजुक अरबी भाषा ओ ओकर विचारधाराक पूर्ण ज्ञान नहि प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

एबीसीनियाक भाषा 'हब्शी' सेहो सामी परिवारक एक शाखा थिक। ई प्रागैतिहासिक काल मे लाल सागर कें पार कऽ ओतय पहुँचि गेल छल। गठनक दृष्टि सँ ई हामी ओ सामीक मध्यक अछि। एकर एक बोली गीज मे बाइबिलक अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि। ई अनुवाद ईसाक चारिम शताब्दी मे भेल—एहन अनुमान कहल जाइत अछि।

(घ) यूरेशिआई भाषा चक्र

एकरा फिनो-तातारिक, सीशियन ओ तूरानी आदि सेहो कहल जाइछ मुदा कोनो नाम उपयुक्त नहि बुझि पड़ैछ। भौगोलिक दृष्टिएँ यूराल-अल्टाइक नाम उचित ओ उपयुक्त अछि। एकर भाषा यूराल ओ अल्टाइ

पर्वतक बीच मे टर्की, हंगरी ओ फिनलैंड सँ लऽ कऽ पूब मे ओखस्टक सागर पर्यन्त ओ भूमध्य सागर सँ लऽ कऽ उत्तर मे उत्तरी सागर धरि पसरल अछि। क्षेत्रक दृष्टिएँ भारोपीय भाषा-परिवार कें छोड़ि संसारक कोनो अन्य परिवार एतेक विस्तृत नहि अछि। मुदा एहि परिवार मे एतेक विशेषता ई अछि जे एकर भाषा-सभ परस्पर बहुत साम्य नहि रखैछ तें विद्वान लोकनि एकरा परिवारक बदला मे समुदाय मानैत छथि। एकरा ध्वनि ओ धातुक (शब्द समूह) दृष्टिएँ वस्तुतः दुनू परिवार यूराल ओ अल्टाइक पृथक बुझना जाइछ, मुदा व्याकरणक दृष्टिएँ एकर एकता कें अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ।

भाषा सभ अश्लिष्ट अन्त योगात्मक अछि। धातु मे प्रत्यय जोड़ि कऽ पद बनाओल जाइछ। किछुक भाषाक प्रवृत्ति श्लिष्ट दिस (फिनिश—भारोपीय वर्ग मे परिगणित होएबा योग्य)। सभ भाषाक धातु अव्यय जकाँ अछि जाहि मे कहियो विकार नहि अबैछ।

यूराल-अल्टाइक

- फिनो-अग्रिक
  - फिनिक
  - फिनिश
  - मगिआर
- समोयेदी
- टुंगूज
- मंगोलिअन
- तुर्क-तातारी (तुर्की)

फिनिक भाषा मे सोलहम शताब्दीक पश्चात् सुसंस्कृतक साहित्य उपलब्ध अछि। एहि मे २ हजार छन्दक प्रसिद्ध महाकाव्य 'कलेबला' अछि। एहि भाषा मे भारोपीय परिवारक शब्दक बहुलता अछि। हंग्रीक भाषा मगियारमे बारहम शताब्दी सँ साहित्य भेटैछ। तुर्की पर राजनैतिक कारणे अरबी ओ फारसीक प्रभाव, मुदा इहो ओकरा सभकें प्रभावित कयने अछि। (भारतीय मे—तोप, लाश, चकमक, आलमारी, उर्दू, चाकू, तमगा) तुर्कीक साहित्य वेश समृद्ध अछि। एहिठामक काव्य ओ कथा-साहित्य अत्यन्त प्राचीन अछि। तुर्कीक लिपि पूर्व मे अरबी मुदा आब रोमन लिपि ग्रहण कयल गेल अछि। भारतक प्रथम मुगल बादशाह बाबर अपन जीवन वृत्तान्त 'तुजुक-बाबरी' एही भाषा मे लिखल। सम्प्रति एहि भाषा सँ अरबी सभ कें बहार कऽ तुर्की शब्दक स्वागत भऽ रहल अछि। मुस्तफा कमाल पाशा सर्वप्रथम क्रान्ति आनल। एहि मे प्रायः २८ गोट बोली अछि।

चीनी (एकाक्षर) परिवार

एहि परिवारक प्रधान भाषा चीनी अत: एकर नामकरण चीनी सँह भऽ गेल अछि। चीन, श्याम तिब्बत ओ वर्मा मे ई परिवार पसरल अछि। बजनिहारक दृष्टिएँ भारोपीय परिवारक पश्चात् संसार मे एकरे नाम अबैछ।

एहि परिवारक भाषा सभ अयोगात्मक अथवा स्थान-प्रधान, व्यास प्रधान सेहो कहल जाइछ। दू शब्द कथमपि मिलि कए एक नहि होइछ। सम्बन्धक पता बहुधा वाक्य मे शब्दक स्थान सँ लगैछ। यथा 'हुआ पओ मीन' = राजा प्रजाक रक्षा करैछ ओ 'मीन पओ हुआ' = प्रजा राजाक रक्षा करैछ। प्रत्येक शब्द एक अक्षरक होइछ तेँ एकर नाम एकाक्षरात्मक कुल सेहो अछि। शब्द एक प्रकारेँ अव्यय अछि जकरा मे कोनो विकार नहि होइत छैक। एहि एकाक्षर शब्दक संख्या पाँच सय सँ एक हजारक बीच अछि। चीनक साहित्यक ओ राष्ट्रभाषा मन्दारिन मे ४०० शब्द अछि जे ४२ हजार भिन्न-भिन्न अर्थक द्योतक अछि। समस्या अछि जे एतेक कम शब्देँ कोना ओतेक वेशी अर्थ प्रकट कयल जाय। प्रथमत: सुर (Tone-तान) भेद सँ ई कार्य कयल जाइछ। ओना तँ प्रधान सुर चारिएटा अछि मुदा किछु उप-भाषा अथवा बोली मे वेशिओ अछि (मन्दारिन मे पाँच, फूकिन मे आठ) केवल सुर सँ काज नहि चलैछ अत: द्वित्वक प्रयोग होइछ। यथा—

ताओ = सड़क, झंडा, गल्ला (अन्न), ढक्कन
लू = ओस, जवाहर, घुमाव, सड़क

एतय ताओ एवं लू दुहूक अर्थ सड़क होइछ। अत: सड़कक हेतु जँ ताओ एवं लू दुनू शब्दक प्रयोग कयल जाय तँ कोनोटा सन्देह नहि रहत। एहि मे सर्वदा पर्यायवाची शब्द नहि राखल जाइछ। यथा नोनक संग महीन अथवा रोड़ा ओ पानिक संग गर्म अथवा शीतलक वाचक शब्द लिखल जाइछ। भारोपीय परिवार जकाँ एकर व्याकरण नहि अछि। एकेटा शब्द आवश्यकतानुसार संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि भऽ जाइछ। यथा - त ओ ता > पैघ, पैघत्व ओ पैघ होयब (महान) आदि होइछ।

मु = माता, त्जु = पुत्र, छिह = वह, जायब, सम्बन्ध राखब आदि मुदा मु छिह त्जु = माताक पुत्र। (आधुनिक रूप एकर 'मूछिन् ट् अङ् दज्') एतय छिह षष्ठी विभक्तिक काज कयल।

अनुनासिक ध्वनिक बहुलता प्राय: विश्वक कोनो अन्य भाषा मे एतेक ङ् ओ ञ् क प्रयोग नहि भेटत। एहि परिवारक प्रमुख लक्षण स्पष्ट रूपेँ आब

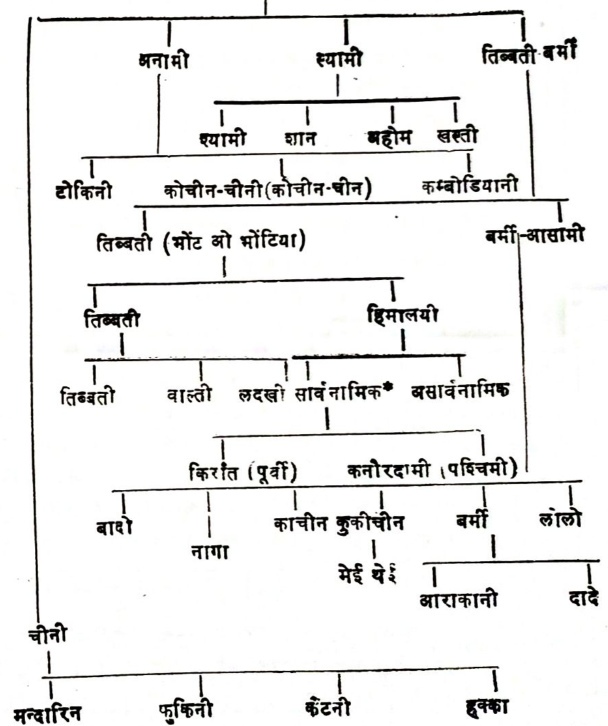
केवल चीनी भाषा मे भेटैछ। अन्य भाषा सभ आर्य-परिवार ओ अन्य भाषा सभ सँ प्रभावित होयबाक कारणे वर्ण-संकर भऽ गेल अछि।

चीनी भाषा मे विश्वक सभ सँ प्राचीन साहित्य उपलब्ध होइछ। कतिपय तँ तीन हजार ई० पू० क अछि। चीनक इतिहास—ग्रंथक (शु—किंग) प्रथा (परम्परा) आदि अति प्राचीन अछि। ५०० ई० पू० मे प्रसिद्ध चीनी दार्शनिक विद्वान कन्यफ्यूशियस एकरा सभक (ग्रंथ सभक) सम्पादन कयल ओ सम्भवत: तत्कालीन भाषा केँ ध्यान मे राखि यत्र-तत्र ओहि प्राचीन ग्रंथ सभ मे संशोधन कयल। तथापि जाहि प्राचीन चीनीक रूप भेटैछ से आधुनिक चीनी सँ बेसी भिन्न नहि अछि।

एहि परिवारक किछु भाषा भारत मे सेहो पसरल अछि। एहि हेतु किछु गोटा एकरा भारत-चीनी परिवार सेहो कहैत छथि।

चीनी भाषाक परिचय-वृक्ष एहि तरहेँ बनाओल जा सकैत अछि—

चीनी (एकाक्षर) परिवार



* सर्वनाम जँ कर्म एवं कर्त्ता हो तँ ओकरा क्रिया मे प्रत्यय जकाँ जोड़ि देल जाइछ –(हिप = मारब; ु = ओकरा; ङ्ग = हम) = हिप्तुङ्ग (हम ओकरा मारैत छी)।

थाई समूह - एहि समूहक बोली आसामक पूर्वोत्तर भाग मे ब्रह्माक किछु भाग मे बाजल जाइत अछि। एहि मे सँ 'शान', 'अहोम' ओ 'खाम्ती' आदि मुख्य अछि। तिब्बती-ब्राह्मी समूहक बोली तिब्बत ओ ब्रह्मा मे बाजल जाइत अछि। अनुमान कयल जाइत अछि जे एहि भाषाक आदि विकास स्थान चीनक पश्चिमोत्तरी भाग छल। ओतय सँ एकर बजनिहार दक्षिणक किछु प्रदेश मे जा कऽ बसि गेल। स्थान ओ समय व्यवधान एहि भाषा केँ मूल चीनी परिवार सँ एतेक फराक कऽ देलक अछि जे किछु विद्वान एकरा चीनी परिवार सँ सम्बद्ध होयबा मे सेहो सन्देह करऽ लगलाह अछि।

तिब्बती समूह—एहि समूहक लद्दाखी आदि बोली अछि। एहि मे नीक साहित्य उपलब्ध अछि। एकर ब्राह्मी भागक प्रमुख बोली ब्राह्मी अछि। एहि समूहक प्रायः १५६ बोली अछि।

अनामी—किछु विद्वान अनामी केँ चीनी परिवार मे नहि रखैत छथि मुदा ओहि मे चीनीक सभ लक्षण भेटैत अछि। एहि मे पन्द्रहम शताब्दी धरिक भाषा मे लिखल ग्रंथ सेहो उपलब्ध अछि।

काकेशी परिवार—एकर प्रमुख दू गोट विभाग अछि—उत्तरी काकेशी तथा (२) दक्षिणी काकेशी। एहि दुनूक बीच मे पर्याप्त अन्तर अछि तथा उत्तर काकेशीक बजनिहार प्रायः पाँच लाख ओ दक्षिणीक प्रायः पन्द्रह लाख अछि।

उत्तरी शाखा मे व्यंजनक बहुतायत अछि ओ स्वरक अत्यधिक कमी अछि मुदा दुनू मे पद रचना अत्यधिक जटिल अछि। उत्तर काकेशीक नहि साहित्य अछि आ नहि कोनो लिपि, मुदा दक्षिणी मे दसम शताब्दीक बाद सँ साहित्य सेहो उपलब्ध अछि आ ओकर स्वतन्त्र लिपि सेहो अछि। एकर प्रमुख बोली जार्जी अछि।

एकर अतिरिक्त सुमेरी, मितानी, कोस्सी, बन्नी, एलामाइट, हिट्टाइट, कप्पडोसी, एत्रुस्कन, जापानी, कोरियाई ऐन हाईपरबेरी, तथा बास्क आदि किछु प्रमुख प्राचीन तथा अर्वाचीन भाषा अछि।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे चीनी मे कथित भाषाक रूप लिखित भाषा सँ

भिन्न अछि। किछु बोली तँ एक दोसरा सँ ततेक ने भिन्न भऽ गेल अछि जे एक केँ बजनिहार दोसरा केँ बुझिओ ने सकैछ।

भारोपीय भाषा-परिवार

सामान्य-परिचय—एहि परिवारक भाषा प्रमुख रूप सँ भारत, ईरान, आर्मीनिया, सम्पूर्ण योरप महाद्वीप, अमरीका ओ अफ्रीकाक दक्षिणी पश्चिमी कोन तथा आस्ट्रेलिया मे बाजल जाइत अछि। बजनिहारक संख्या ओ विस्तार क्षेत्रक विचार सँ ई संसारक सर्व प्रधान भाषा परिवार थिक। भाषा-विज्ञानक दृष्टि सँ एकर अद्वितीय महत्व अछि। वास्तव मे एही परिवारक भाषाक तुलनात्मक अध्ययन सँ भाषाविज्ञानक विकास भेल अछि।

नामकरण—एहि भाषा परिवार केँ अनेक नाम देल गेल। सर्वप्रथम 'इण्डोजर्मनिक' नाम सँ सम्बोधित कयल जाइत छल। ई नाम एहि भाषा परिवारक क्षेत्र मे बजनिहार सभ भाषाक बोध नहि करबैत छल, एहि हेतु छोड़ि देल गेल। एकर उपरान्त एकरा 'केल्टिक' नाम देल गेल मुदा ईहो प्रचलित नहि भऽ सकल। एहि तरहेँ एकर 'जैफाइट', 'जैफेटिक' ओ 'सांस्कृतिक' नाम सेहो नहि चलि सकल।

तदनन्तर किछु विद्वान एहि परिवारक लेल आर्य शब्दक प्रयोग कयल मुदा एहि मे दूटा आपत्ति उठाओल गेल। एक तँ ई आर्य शब्दक सम्बन्ध जाति-विशेष सँ अछि आ एहि परिवारक भाषाक बजनिहार आर्यें टा नहि छथि। दोसर बात ई जे आर्यक सम्बन्ध भारत-ईरानहिटा सँ छल। एहि हेतु ई नाम सेहो प्रचलित नहि भऽ सकल।

भारोपीय (इंडो-यूरोपियन) नामक प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसीसी द्वारा भेल। भारत-जर्मनिक अपेक्षा भारत-यूरोपीय नाम एहि परिवारक भाषाक भौगोलिक विस्तार केँ अधिक स्पष्टता सँ व्यक्त करैत अछि। एहि नामक प्रसिद्धि अछि। नामकरण मे प्रसिद्धि एक पैघ वस्तु थिक आ ओकर अकारण उपेक्षा नहि होयबाक चाही। अतएव सभ दृष्टिकोण सँ भारत-यूरोपीय नाम संगत बुझि पड़ैत अछि।

मूल भारोपीय भाषाक स्थान

भारोपीय भाषा-भाषी केँ किछु विद्वान 'आर्य' कहब बेसी पसंद करैत छथि। आर्यक अर्थात् मूल भारोपीय भाषा केँ बजनिहारक आदि स्थान

कतय छल, एहि लऽ कऽ एकमत नहि अछि। मैक्समूलरक अनुसार आर्यक निवास स्थान मध्य एशिया छल। मध्य एशिया सँ ओ दू दिस बढ़लाह। एक दल पूर्व दक्षिण कें गेल आ दोसर दल पश्चिम दिस। जे दल पूर्व दक्षिण कें गेलाह ओ सर्वप्रथम आक्सस ओ जाकीज नदीक कात मे बसलाह आ ओकर उद्गम दिस ओकरह तथा बदखशांक उच्च भूमि पर पहुँचलाह। एतय सँ ओकर दू गोट शाखा भेल—एक फारस दिस बढ़ल आ ईरान, अरब, मिश्र आदि दिस बढ़ि गेल तथा दोसर काबुल नदीक संग बढ़ि कऽ भारत मे आयल आ आर्य कहौलक।

जे दल पश्चिम दिस गेल छल ओ कैस्पियन सागर धरि तँ एकहि टा दल मे गेल छल, मुदा ओतय सँ ओकर अनेक शाखा यूरोप मे पसरि गेल।

डा० लैथन आर्य कें स्कैंडिनेवियाक मूल निवासी बतओलनि अछि। डा० लैथन स्कैंडिनेवियन भाषाक विशेषज्ञ छलाह, हुनका स्कैंडिनेवियनक प्राचीनतम भाषा मे प्राचीन आर्यक किछु चिन्ह भेटल छलनि।

किछु विद्वान जर्मनी कें सेहो आर्यक मूल निवास स्थान मानैत छथि आ किछु बाल्टिक सागरक दक्षिणी पूर्वी तट कें। किएक तँ प्राचीन लिथुआनियन मे प्राचीन आर्यक किछु संकेत प्राप्त होइत अछि।

डा० प्रो० श्रेडरक मत छनि जे आर्यक मूल निवास स्थान वाल्गा नदीक मुहानाक भूमि छल। डा० पीटर गाइल्स हंगरी प्रान्तक कार्पेशियन पर्वतक लगपास मे आर्यक मूल स्थान बतओलनि अछि। भारतीय विद्वान सर देसाई बाल्कश झीलक लगपास आर्यक मूल निवास मानलनि अछि किएक तँ ओतय सप्तसिन्धु वा सात नदीक देश अछि जकर उल्लेख ऋग्वेद मे अछि। किछु व्यक्ति मेसोपोटामिया कें सेहो आर्यक मूल स्थान मानैत छथि, किएक तँ हिट्टाइकक किछु शिलालेख मे वैदिक देवताक उल्लेख प्राप्त भऽ जाइत अछि।

पं० बालगंगाधर तिलक आर्यक मूल निवास स्थान उत्तरी ध्रुव प्रदेश मानलनि अछि। आदि स्थान लऽ कऽ ऐकमत्य नहि अछि। भारत सँ लऽ कऽ उत्तर पश्चिम स्कैंडिया धरि तथा उत्तरी ध्रुव सँ लऽ कऽ कास्पियन सागरक तट धरि आर्यक मूल स्थान कें स्थापित करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। वस्तुत: एहि विषय कें लऽ कऽ जे विभिन्न मतवाद प्रवर्तित भेल अछि, ओकर अध्ययन एक स्वतन्त्र विषय थिक। एहि पर विभिन्न देशक विद्वान द्वारा एतेक लिखल गेल अछि जे प्रश्न सोझरयबाक बदला मे ओरो ओझराइत चलि गेल

अछि। एहि समस्याक समाधान नहि होयबाक कारण ई अछि जे विद्वानक दृष्टि वस्तुनिष्ठ नहि भऽ कऽ आत्मनिष्ठ रहल अछि। मनुष्यक सतत ई कमजोरी रहल अछि जे ओ अपना कें वा अपना सँ सम्बद्ध कें, गौरव एवं श्रेयक अधिकारी बनबऽ चाहैत छथि। एहि भावनाकें लऽ कऽ ई प्रश्न आरो जटिल भऽ गेल। एहि सम्बन्ध मे एतेक कहल जा सकैत अछि जे कोनो एक स्थान एहन छल जतय सँ आर्य विभिन्न दिशा मे गेलाह। एकर अतिरिक्त निश्चयात्मक रूप सँ किछु कहब असम्भवप्राय अछि।

भारतीय साहित्य मे कतहु एहि बातक उल्लेख नहि अछि जे आर्य बाहर सँ एहि देश में आयल छलाह। आर्य मूलत: भारतक निवासी छलाह। एतय सँ ओ विभिन्न दिशा मे गेलाह। किएक गेलाह, ई प्रश्न सेहो असमाहित अछि।

प्राचीन आर्यक सामाजिक जीवन—खोजक द्वारा ज्ञात कयल गेल अछि जे आदिम युगमे आर्यक पास उक्ष, गो, सूअर, अवि तथा अश्व, सम्पत्तिक रूप मे मानल जाइत छल आ ओ एकर वंश-वृद्धि मे तत्पर रहैत छलाह। ओहि समय आजीविकाक मूल आधार पशुएटा छल, 'गवेषणा' गविष्ट, 'गवाशिर' ओ 'गवा' एकर प्रमाण थिक। मांसक पर्यायवाची शब्द सेहो प्राचीन भाषा मे भेटैत अछि। 'पंच' 'चरु' आदि शब्द एहि बातक द्योतक अछि जे भोजन आरम्भ मे नहि होइत छल, खेती करब लोक बाद मे सिखलनि। अत: आदि आर्य पशुक पालन करैत छलाह आ ओहि सँ उत्पन्न पदार्थ दूध, दही, ऊन, चमड़ा आदि अपन व्यवहार मे अनैत छलाह।

'जन', 'विश', 'पू:', 'दम', 'द्वार' आदि शब्द सभ सँ ई पता चलैत अछि जे ई सभ बस्ती मे रहैत छलाह। घर बनबैत छलाह। एहि तरहे 'मधु', 'मृदु', मेथु', 'मीड' आदि शब्दक द्वारा ई पता चलैत अछि जे कोनो मीठगर पेय अवश्य प्रयोग मे अबैत छल। 'सोम' ओ 'हाओम' शब्द सेहो बतबैत अछि जे कोनो वृक्षक रस सँ सेहो कोनो पेय पदार्थ बनैत होयत।

मूल्य मे गाय देल जयबाक उल्लेख भेटैत अछि। एहि सँ सिद्ध होइत अछि जे पदार्थक विनिमय सेहो होइत छल। लोहा, ताँबा आदि धातु सेहो छल। कपड़ा बुननाइ, सीनाइ, तीर चलेनाइ, माटि-लोहाक बर्त्तन बनेनाइ सेहो जनैत छलाह।

पारिवारिक व्यवस्थाक चिह्न सेहो उपलब्ध होइत अछि; यथा—'दुहिता' शब्दक अर्थ 'दुहनिहारि' कहल जाइत अछि, अर्थात कनियाँ गाय दुहबाक काज

करैत छलीह। 'वधू' ओ 'वहतु' शब्द सेहो भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त पति-पत्नी; पुत्री आदि शब्द सेहो उपलब्ध होइत अछि।

'जन्' ओ 'विश्' शब्द सामाजिक संगठन दिस संकेत करैत अछि। 'जन्' साधारण लोकक लेल ओ 'विश्' जनसमुदायक लेल प्रयुक्त होइत छल। विश्वपति जनसमुदायद नायक होइत छलाह। 'राजा' शब्द सेहो उपलब्ध होइत छलाह। राजाक चुनाव समिति करैत छल। दण्ड आदिक सेहो व्यवस्था छल।

अग्नि, वरुण, इन्द्र आदि प्रकृति-देवताक पूजाक विधानसे हो भेटैत अछि। हेमन्त, समा (गर्मी) तथा शरद ऋतु एवं दिन-राति (दाघनक्त)क सेहो उल्लेख भेटैत अछि। एहि तरहें आदि-भाषाक शब्दक संकलन ओ तुलनात्मक परिणाम-स्वरूप उपर्युक्त तथ्य एकत्रित कयल गेल अछि। एहि सँ प्रागैतिहासिक कालक आर्य-जीवन पर किछु प्रकाश पड़ैत अछि।

——

भारत-यूरोपीय परिवारक महत्त्व

कतेको दृष्टिएँ संसारक भाषा मे भारत-यूरोपीय परिवारक महत्त्व सभ सँ अधिक अछि। एहि महत्त्वक निम्नलिखित कारण अछि—

(१) जनसंख्याक दृष्टि सँ एहि परिवारक स्थान प्रथम अछि, किएक तँ जतेक लोक एहि परिवारक भाषा बजैत छथि, ओतेक कोनो दोसर परिवारक भाषा नहि।

(२) भारत-यूरोपीय परिवारक भाषा सम्पूर्ण संसार मे पसरल अछि। अन्य भाषा एक-एक स्थान मे सीमित अछि, अतएव ओकरा ओ व्यापकता उपलब्ध नहि अछि जे एहि परिवारक भाषा में अछि।

(३) साहित्यिक दृष्टि सँ एहि परिवारक समृद्धि कोनो दोसर भाषा सँ अधिक अछि। जतेक प्राचीन, जतेक विविध आ जतेक उत्कृष्ट साहित्य भारोपीय परिवारक अछि ओतेक औरो कोनो भाषिक परिवारक नहि।

(४) सभ्यता ओ संस्कृतिक दृष्टि सँ सेहो एहि परिवारक भाषा-भाषी अन्य भाषा-भाषी सँ आगाँ छथि।

(५) एहि परिवारक भाषा मे विद्यमान वैज्ञानिक साहित्य सेहो अप्रतिम अछि।

(६) भारोपीय परिवारक भाषाक महत्वक अन्यतम कारण राजनीतिक प्रभाव सेहो अछि। यूरोपक देश संसारक पँच भाग मे अपन सत्ता कायम कयलक आ बहुतो देश कें अपन उपनिवेश बनौलक। स्वभावतः उपनिवेश मे शासकक भाषा अपनाओल गेल आ ओकर प्रसारक आशातीत अवसर भेटल।

(७) भाषा विज्ञानक दृष्टि सँ एहि परिवारक जतेक अध्ययन भेल अछि ओतेक अन्य परिवारक नहि।

एहि तरहें जनसंख्याक, विस्तार, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति, वैज्ञानिक, प्रगति, राजनीतिक एवं भाषा वैज्ञानिक महत्त्व, एहि सभ दृष्टि सँ भारोपीय परिवार संसारक भाषा मे अग्रगण्य अछि।

——

भारोपीय परिवारक विशेषता

(१) ई परिवारक श्लिष्ट योगात्मक (विभक्ति प्रधान) अछि। विभक्ति प्रायः बहिर्मुखी अछि।

(२) एहि परिवाक भाषा संहित सँ व्यवहृत होइत अछि।

(३) मुख्यतः धातु सं शब्द निष्पन्न होइत छल।

(४) एहि भाषा मे प्रत्ययक बहुलता छल, एहि हेतु रूप मे सेहो बाहुल्य छल।

(५) उपसर्गक सम्भवतः अभाव छल। उपसर्गक बदला मे पूर्ण शब्दक प्रयोग होइत छल जे बाद मे घिसाइत-घिसाइत परिवर्तित भऽ गेल आ स्वतन्त्र रूप सँ अर्थबोधक शक्ति बिसरि उपसर्ग कहबय लागल।

(६) ओहि भाषा मे तीन लिंग छल—पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग।

(७) तीन वचन छल—एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

(८) तीन पुरुष छल—उत्तम, मध्यम, प्रथम।

(९) संस्कृतहि जकाँ विभक्ति आठ छल।

(•) क्रिया मे फल भोक्ता के छथि, एहि आधार पर आत्मनेपद ओ परस्मैपद होइत छल।

(११) क्रियाक रूप मे भूत, भविष्य आदि कालक धारणा तं छल, मुदा ओकर अवान्तर भेद नहि छल।

(१२) समास एहि भाषाक अन्यतम विशेषता थिक।

(१३) स्वर-क्रमक चलैत अर्थ मे अन्तर भऽ जाइत छल।

(१४) भाषा संगीतात्मक छल, एहि हेतु उदात्त आदि स्वरक प्रयोग सं अर्थबोध मे सहायता लेल जाइत छल।

(१५) अनेक रूप मे धातुक अभ्यास भऽ जाइत छल।

— —

भारोपीय परिवारक वर्गीकरण

प्रागैतिहासिक काल मे भारोपीय भाषा मे दू विभाषा छल। एहि सं बहरायल ध्वनि मे पार्छा जा कऽ भेद भऽ गेल। आदिम भाषा मे क वर्गक उच्चारण तालव्य गौण सहायता सं होइत छल। ओ कंठ ध्वनि (क आदि) ग्रीक, लैटि आदि मे ओही रूप मे रहि गेल। संस्कृत, ईरानी आदि मे वैह 'घर्षक' 'ऊष्मा' (स, श आदि) बनि गेल अछि। एही आधार पर ब्रंड के एहि परिवारक शतम ओ केंटुम दू वर्ग कयल। शतम अवेस्ताक शब्द थिक केंटुम लैटिनक। मूल भाषा मे एहि लेल चतोम् (kmtom) शब्द छल। मूल शब्द 'यतोम्' दुनू वर्ग मे एहि तरहें व्यवहृत भेल—

शतम वर्ग	केंटुम वर्ग
अवेस्ता-सतम्	लैटिन—केन्टुम्
फारसी—सद	ग्रीक—अकोतम्
संस्कृत—शतम्	इटैलियन—केन्टो
हिन्दी—सौ	फ्रेंच—केन्ट
रूसी—स्तो	केल्टी—कैन्ट
बल्गोरियन—सुतो	गेलिक—क्युड
लिथुआनियन—स्जिम्तास	तोखारी—कन्च
	गाथिक खुंद

'केंटुम' समूहक भाषा योरोप महाद्वीपक अधिकांश क्षेत्र मे व्यवहृत होइत अछि। एहि उपकुलक परिचय अधोलिखित अछि –

ग्रीक—'केंटुम' समूहक ई सभ सं प्राचीन भाषा थिक। महाकवि होमर, महान विचारक अरस्तु तथा सुकरातक अमरवाणी एहि भाषा मे प्रस्फुटित भेल। यूनान देशक वर्त्तमान भाषा एकरे बोलीक विकसित रूप थिक।

(२) इटैलिक—प्राचीन रोमन साम्राज्यक भाषा लैटिनक कारणहि एहि उपकुलक विशेष महत्त्व अछि। इटली, फ्रांस, स्पेन, रूमानिया, तथा पुर्तगाल आदिक भाषा एकरे सन्तान थिक। योरोपक अधिकांश भाषा कें ई प्रभावित कयल अछि। विज्ञानक अधिकतर पारिभाषिक शब्द ग्रीक ओ लैटिन सं लेल गेल अछि।

(३) केल्टिक- एहि भाषा उपकुलक दू गोट प्रमुख भेद अछि। एकक वर्त्तमान रूप 'आयरलैण्ड' मे भेटैत अछि आ दोसरक स्काटलैंड वेल्स तथा कार्नवाल प्रदेश मे। एहि उपकुलक एक प्राचीन भाषा छल गाल जे आब जीवित नहि अछि।

(४) जर्मनिक (Germanic Tertnic) - एकर प्राचीन रूप गाथिक तथा नार्स भाषा मे भेटैत अछि। प्राचीन नार्स भाषाक समीपवर्त्ती ऐतिहासिक काल मे स्वीडेन, नार्वे, डेन्मार्क, आइसलैंड आदि भाषाक विकास भेल अछि। जर्मन, डच, फ्लेमिश ओ अंग्रेजी भाषा एही उपकुलक थिक। शतम समूहक अधिकांश भाषा एशियाई क्षेत्र मे बाजल जाइत अछि। किछु भाषा योरोप महाद्वीपक भौगोलिक क्षेत्र मे सेहो बाजल जाइत अछि। एकर सेहो चारि उपकुल अछि।

(१) आर्य वा भारत ईरानी—एहि उपकुलक भाषा भारत मे बाजल गेनिहार आर्य भाषा, ईरानी तथा दरद वा पैशाची थिक।

(२) आरुमेनियन – आर्य उपकुलक क्षेत्र पश्चिम मे आर्मेनिया अछि। एहिठामक भाषा योरोप एवं एशियाक मध्य भागक भाषा थिक। एहि मे ईरानी भाषाक संख्या बेसी अछि।

(३) बोल्टो स्लेपैनिक – काले समुद्रक उत्तर मे प्रायः सम्पूर्ण रूस मे एहि उपकुलक भाषाक प्रसार अछि। आर्य उपकुलक भांति एकर सेहो दू गोट शाखा अछि। बाल्टिक शाखा मे लिथुआनियन, लेटिश ओ प्राचीन प्रशियन बोला

अबैत अछि तथा स्लेवेनिक शाखा मे बलगेरियाक प्राचीन भाषा, रूसक भाषा, सर्वियन, स्लोवेन, पोलैन्डी, जेक (चेक) बोहेमियन ओरो सर्वप्रमुख अछि।

(३) अलबेनियन – शतम समूहक चारिम उपकुल अलबेनियन अछि। एहि पर सेहो निकटवर्त्ती भाषाक अभाव अछि। प्राचीन साहित्य एहि मे नहि अछि।

एहि भाषाक प्राचीन ओ अर्वाचीन सभ रूपक अध्ययन कयला सँ यैह पता लगैत अछि जे एहि सभ भाषाक मूल स्रोत कोनो आदिम भाषा रहल होयत। संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक लैटिन आदिक प्राचीन रूपक अध्ययन सँ यैह अनुमान पुष्ट होइत अछि। एहि भाषाक तुलनात्मक आधार पर सेहो यैह सिद्ध होइत अछि जे एहि भाषा मे किछु विशेष ध्वनि, सन्धि नियम, संस्था आदि रहल होयत।

आर्य अथवा भारत ईरानी उपकुल—एहि भाषा-उपकुलक महत्त्वपूर्ण होयवाक अनेक कारण अछि। एहि मे 'ऋग्वेद' तथा 'अवेस्ता' जेहन आय जातिक प्राचीनतम ग्रंथ उपलब्ध होइत अछि। प्राचीनताक दृष्टि सँ एहि ग्रंथक तुलना मे 'महाकवि होमर' क कृति कें राखल जा सकैत अछि, यद्यपि ओहो एकर बादक रचना थिक। एकर मुख्य कारण ई अछि जे संसारक अन्य भाषा मे साहित्य निर्माण बहुत बाद मे शुरू भेल। एहि उपकुलक 'भारतीय आर्य' 'ईरानी' तथा 'दरद' भाषा मे किछु एहन लक्षण अछि, जाहि कारणे एहि भाषा कें संसारक अन्य भाषा सभ सँ पृथक राखल जा सकैत अछि।

( ) **ईरानी** – भारत-ईरानी उपकुलक एहि प्राचीन भाषा मे साहित्यक प्रचुरता छल। एहि साहित्यक सभ सँ पैघ भण्डार सिकन्दर (३२३ ई० पू०) आ अरब विजेता द्वारा (६५: ई० पू०) जरा कऽ छाउर कऽ देल गेल। प्राचीनतम साहित्यक ना। पर आब तँ पारसीक धर्म ग्रन्थ अवेस्ता तथा हल्मानी बादशाहक ईसा पूर्वक छठम शताब्दीक शिला-लेख शेष भेंटैत अछि। प्रसिद्ध शासक दाराक प्राचीनतम रूप सँ मिलैत-जुलैत रहितहु एहि मे तथा ओकर बोली मे पर्याप्त अन्तर अछि।

मध्यकालीन ईरानी वा फारसी-एकर बादहुँ मध्यकालीन ईरानीक स्वरूप शिलाखण्ड पर तथा ईटा सभ पर खोदल लेख सभ सँ भेंटैत अछि। एकर प्राचीनतम लेख (५२२-४८६ ई० पू०)क अछि। एहि भाषाक कतेको सबो बाद वाला रूप पहलवी अछि जाहि मे 'अवस्ता' क टीका अछि। वास्तव मे इतिहासक कालक्रमानुसार मध्यकालीन ईरानी भाषा यैह थिक। पहलवी एकर

मुख्य रूप थिक। शासनवंशी राजा लोकनि, ईसाक तेसर सँ सातम शताब्दी धरिक अपन शासन काल में एकर प्रचार-प्रसार ओ उन्नयन कयल। एकर एक शैली अछि 'हुआरेवश' जाहि मे सामी शब्दक बाहुल्य अछि। एकर विपरीत एकर दोसर शैली 'पाजन्द' वा 'पार्सी' मे सामी शब्दक नितान्त अभाव अछि।

प्राय: पचास वर्ष पहिने मध्यकालीन ईरानीक किछु पुस्तक मध्य एशिया तुर्किस्तान मे उपलब्ध भेल छल। एहि मे सँ दू-तीन गोट तँ ईसाइ धर्मक अछि आ शेष बौद्ध धर्मक। प्राय: ई सभ ईसाक आठम शताब्दीक थिक मुदा एहि मे सँ एक ईसवी सन्‌क आरम्भ कालक मानल जाइत अछि। एहि पुस्तकक भाषा कें पश्चिमोत्तरी प्रदेशक ईरानी बताओल जाइत अछि। एहि भाषाक नाम 'सोग्धी' अछि तथा एकर मंचूरिया मे कोनो समय प्रचार छल।

आधुनिक ईरानी अथवा नव ईरानी—ईरानी भाषाक एहि भेदक प्राचीनतम रूप 'फिरदौसी'क 'शाहनामे' मे भेटैत अछि। एकर एक विचित्र विशेषता ई अछि जे एहि सामी भाषा बहिस्तून पहाड़क चट्टान पर खोदाओल गेल शिलालेख एहि मे सँ अछि।

ईरानी भाषाक ऐतिहासिक कालक्रम—इतिहासक प्रगतिक क्रमानुसार ईरानीक तीन रूप देखवा मे अबैत अछि—

(१) प्राचीन ईरानी

(२) मध्यकालीन ईरानी

(३) आधुनिक अथवा नवीन ईरानी।

(१) **प्राचीन ईरानी**—एकर प्राचीनतम स्वरूप हमरा अवेस्ती उपशाखा मे देखबाक लेल भेटैत अछि। एहि भाषाक प्राचीनतम वृत्ति पारसीक धर्मग्रंथ 'अवेस्ता' अछि तथा एहिक भाषा के 'अवेस्ती' कहल जाइछ। एहि ग्रंथक प्राचीनतम अंश कें ईसा सँ प्रायः चउदहम शताब्दी पूर्वक रचना मानल जाइत अछि। एकर भाषा ओ ऋग्वेदक भाषा मे बहुत किछु साम्य अछि। ई कोनो आश्चर्यक बात नहि थिक। ईरानक शासक अपन पूर्वज कें गर्व-पूर्वक आर्य मानल अछि। एहि ग्रंथ मे सेहो एहि बातक उल्लेख अनेक स्थल पर अछि। एहि पुस्तकक टीका जेन्द (पहलवी) भाषा मे अछि। एहि हेतु कहियो-कहियो एकर भाषा कें जेन्द आ सम्पूर्ण पुस्तक कें जेन्देवस्ता कहि देल जाइत अछि। वैदिक संहिता जकाँ एहि मे सेहो सूक्त अछि। भाव ओ भाषाक विचार सँ एकर सेहो अनेक श्रेणी कयल जा सकैत अछि। किछु स्थलक रचना ईसा सँ शताब्दी पूर्वक प्रतीत होइत अछि आ किछु स्थल ईसाक बादक रचना थिक।

पारसीक शब्द कें जानि-बुझि कऽ नहि आबऽ देल गेल अछि। मुदा आब तँ अरबीक शब्दक भरमार भऽ गेल अछि।

आधुनिक फारसी वा ईरानीक साहित्य प्रायः नवम शताब्दी सँ आरम्भ होइत अछि। आकृति सँ ई अयोगात्मक अछि आ सरल सेहो अत्यधिक अछि। सुनबा मे सेहो ई मधुर लगैत अछि। अंग्रेजक भारत सँ पूर्व यैह एहि-ठामक राज्य भाषा छल आ एकर अनेक शब्द लहंदी, सिन्धी, पंजाबी, उर्दू आदि मे प्रवेश पाबि गेल अछि। आधुनिक ईरानी मे फारसीक अतिरिक्त बलोची, पश्तो, पामीरी आदिक महत्त्व अछि। एकर अतिरिक्त कुर्दी आदि बोलीक नाम सेहो आदरक संग लेल जाइत अछि। पश्तो अफगानिस्तान ओ पाकिस्तानक पश्चिमोत्तरी सीमान्त प्रदेशक लोकक भाषा थिक। एकर बजनिहारक संख्या प्रायः ५० लाख अछि। सोलहम शताब्दीक बाद सँ एहि मे साहित्य सेहो भेटैत अछि। एकर लोक गीत विशेष प्रशंसनीय अछि।

विलोची – विलोचिस्तान ओ सिंधक पश्चिमी भागक बोली थिक। साहित्यक प्रायः एहि मे अभाव अछि।

पामिरी हिन्दु कुश पर्वत ओ पामीरक तराइ मे एही समूहक बोली बाजल जाइत अछि। यैह पामीरी कहबैत अछि। गठनक विचार सँ एहि मे ओ काश्मीरक लगपास मे बजनिहार ईरानी बोली मे समानता अछि। एकरहि समीप मे भारतीय आर्य भाषाक क्षेत्र अछि।

दरद—अनुमान कयल जाइत अछि जे आर्य भारत मे दू मार्ग देने आयल छलाह एक तँ हिन्दू कुश पर्वतक पश्चिम भऽ कऽ काबुल देने आ दोसर वक्षु (आकसस) नदीक उद्गम स्थान सँ दक्षिण पश्चिम दिस सँ अनेक दुर्गम पहाड़ी कें पार करैत आयल छलाह। दोसर मार्ग सँ अयनिहार आर्यक सम्बन्ध मे एहन अनुभव कयल जाइत अछि जे ओ सभ भारतक मैदान मे पहुँचलाह आ हिमालयक पहाड़ी क्षेत्र मे अटकि गेलाह। हिनका लोकनिक भाषा पर संस्कृतक कोनो प्रभाव नहि पड़ि सकल। वास्तव मे संस्कृतक विकास तँ भारत मे आबि कऽ भेल आ एही लेल ई संभव नहि भऽ सकल। संस्कृतक प्रभाव सँ मुक्त आर्यक एहि भाषाक बजनिहार सम्प्रति कश्मीर तथा ओकर उत्तर मे स्थित दुर्गम हिमालय प्रदेश मे पाओल जाइत अछि। हिनक भाषाक नाम दरद वा पैशाची थिक। काश्मीर प्रदेशक भाषा एही शाखाक भाषा मे सँ एक थिक। एकर मूल लिपि 'शारदी' अछि मुदा आब फारसी लिपिक प्रयोग सेहो होबऽ लागल अछि। पुराण मे सेहो 'दरद' जातिक उल्लेख भेटैत अछि। एहि भाषाक खोवार, काफिरी ओ दरदी आदि मुख्य समूह अछि। एकर बजनिहारक संख्या प्रायः १५ लाख अछि।

'खावार' समूहक प्रमुख बोली 'चित्राली' अछि। 'दरदी' विशिष्टक प्रमुख बोली 'काश्मीरी' ओ 'शीना' अछि। कश्मीरी प्रदेश संस्कृत साहित्यक केन्द्र रहल अछि। 'काश्मीरी' मे साहित्य सृजन चउदहम शताब्दी सँ निरन्तर होइत आबि रहल अछि। 'लालदेह'क कविता प्रसिद्ध अछि। 'काश्मीरी' कें छोड़ि कोनो अन्य भाषा मे साहित्य नहि अछि। एहि मे व्याकरणक लक्षण सभसँ बेसी सुरक्षित अछि।

भारतीय आर्य भाषा

काल क्रमानुसार एकर तीन भेद कयल जाइत अछि—

(क) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (प्राभा) – १५०० ई० पू० सँ ५०० ई० पू० धरि) ई वैदिक संस्कृतक नाम सँ जानल जाइत अछि, जकर प्राचीनतम रूप ऋग्वेद मे भेटैत अछि। मैथिली भारतीय वा आर्यभारतीय शाखा मे अबैत अछि। भारतीय शाखा ईरानी शाखाक निकट अछि। एतेक धरि जे ई दुनू अलग-अलग शाखा नहि, अपितु एकहिटा भारत-ईरानी शाखाक दू उपशाखा अछि।

वैदिक साहित्यक अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक ओ उपनिषदक गणना होइत अछि। विद्वान सभक धारणा छनि जे जाहि भाषा मे ऋग्वेदक रचना भेल अछि ओ बोल-चालक भाषा नहि भऽ कऽ ओहि समयक परिनिष्ठित साहित्यक भाषा छल। वैदिक भाषा श्लिष्ट योगात्मक अछि। रूप-रचना मे विविधता एवं जटिलता अछि। स्वर प्रधान अछि। तीन लिंग एवं तीन वचन होइत अछि। उपसर्गक प्रयोग मूल शब्द सँ दृष्टिओ कें भऽ सकैत अछि।

प्राभाक विकासक सम्बन्ध मे दू तीन गोट बात विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि, जकर ज्ञान मैथिली सहित उत्तरकालीन भाषाक विकास कें सही रूपमे बुझबाक लेल सहायक होयत। पहिल बात ई जे आर्यभाषा जखन भारतमे प्रविष्ट भेल तखन सँ एहि पर स्थानीय भाषाक प्रभाव बहुत तीव्र गति सँ बढ़ैत गेल। आइ जे संस्कृतक विशाल शब्द-भंडार देखि रहल छी ओकर कमसँ कम चतुर्थ भाग स्थानीय आर्येतर भाषा सँ लेल गेल होयत।

प्राभाक कालिक एवं क्षेत्रीय विशेषत्ता

(क) वैदिक ओ लौकिक—दोसर बात ई जे प्राभाक सम्प्रति हमरा दू गोट स्वरूपक दर्शन होइत अछि—एक वैदिक ओ दोसर संस्कृत। ई दुनू भाषा, जाति रूपमे प्राचीन ग्रंथमे निबद्ध अछि, मुख्यतः साहित्यिक प्रतीत होइत अछि। लोक-मुख मे किछु औपभाषिक स्वरुप सेहो रहल होयत आ वैह मौखिक भाषा बहुत हद धरि हमर मैथिली-सहित आधुनिक आर्य भारतीय भाषा सभक जननी रहल होयतीह यथा-प्राचीन मैथिली मे (तथा प्राचीन राजस्थानी आदि भाषा मे सेहो) 'आज' अर्थ मे आजु शब्द पाओल जाइत अछि। एकर वैदिक पर्याय अद्य थिक, जाहि सँ अज्ज—आज अद्भूत भऽ सकैत अछि, मुदा अंतमे उ स्वरक उपपत्ति नहि होइत अछि। कतेको विद्वान एहि अनुमानगम्य मौखिक उपभाषा केँ प्रथम प्राकृतक संज्ञा दैत अछि।

(ख) क्षेत्रीय विभाजन—औपभाषिक अंतरक आधार पर रुडोल्फ होएर्नले तथा सर ए॰ जी॰ ग्रियर्सन ई सिद्धान्त प्रतिपादित कयलनि जे भारत मे आर्यक प्रवेश एकहिटा टोलीमे वा एकहिटा काल मे नहि भेल, अपितु कतेको टोली मे दीर्घ काल धरि रहल होयत। किछु आर्य-जन मध्यदेश मे बसलाह आ किछु ओकर चारुकात पसरि गेलाह। एहि घटनाक अनुसार भारतीय आर्य-जनक मौखिक भाषा केँ तीन उपशाखामे विभक्त कयल गेल अछि—

(१) अंतरंग उपशाखा (Inter Sub-branch), अर्थात् पूर्वागत आर्यक भाषा।

(२) बहिरंग उपशाखा (Outer Sub-branch), अर्थात् परागत आर्यक भाषा; तथा

(३) मध्यवर्ती उपशाखा (Medial Sub-branch), अर्थात् पूर्वोक्त दुनूक विशेषताक मिश्रणवला मध्यवर्ती भाषा।

ग्रियर्सन बहिरंग उपशाखाक किछु विशेषताक वर्णन एहि तरहेँ कयलनि अछि—

(१) अवसान मे लघु स्वरक बनल रहब; यथा—प्राभा अक्षि, कश्मीरी अछि, सिंधी अखि, मैथिली आँखि, मुदा हिन्दी आँख।

(२) दू केर स्थान मे ए तथा उ केर स्थान मे ओ; यथा—मैथिली एकैस, हिन्दी इक्कीस।

(३) उ केर स्थान मे इ; यथा – मैथिली बिनब, हिन्दी बुनना।

(४) ऐ तथा औ केर उच्चारण अइ अउ अछि, अंतरंग मे ऍ, ऑ होइत अछि; मैथिली बैसब [ब इ स ऽ ब] मुदा हिन्दी बैठना [बैंठना]।

(५) ल् केर स्थान मे र्; यथा मैथिली फार, मुदा हिन्दी फाल।

(६) स् केर स्थान मे ह्; यथा—सिन्धी दहं, मुदा हिन्दी दस।

(७) ऊष्मा केर श उच्चारण; यथा—बे शुन, मुदा हिन्दी सुनो।

(८) ल् सँ भूतकाल; यथा—मैथिली देखल, मुदा हिन्दी देखा।

(९) कर्मणि प्रयोगक अभाव; यथा—बंगला आमि बोइ देखलाम, हिन्दी मैंने पुस्तक देखी।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे मैथिली बहिरंग-उपशाखा मे पड़ैत अछि।

(ख) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (प्राकृत ओ अपभ्रंश)—

५०० ई० पू० सँ १००० ई० धरिक भाषा केँ मध्य काल कहल जाइत अछि। ५०० ई० पू०क प्रायः आचार्य पाणिनि संस्कृत केँ व्याकरणक नियममे बान्हि-छेकि देलनि। मुदा बान्हला-छेकलाक बादहुँ संस्कृत बोलचालक भाषा बनल रहल, ओही सँ विकसित भऽ कऽ 'पालि' भाषाक रुप ग्रहण कयलक। सामान्य रुप सँ एकरा तीन काल मे बाँटल गेल अछि—

(१) प्रथम प्राकृत, ५०० ई० पू० सँ ई० सन्क आरम्भ धरि। एकरा पालि-काल नाम देल गेल अछि।

(२) द्वितीय प्राकृत, ई० सन् सँ ५०० ई० धरि एकरा प्राकृत कालक नाम देल गेल अछि।

(३) तृतीय प्राकृत, ५०० ई० सँ १००० ई० धरि। एहि काल केँ अपभ्रंश कालक नाम देल गेल अछि।

पालि काल—एहि कालक सभसँ विकसित भाषा 'पालि' छल। एहि (पालि) शब्दक उत्पत्ति स्थान ओ अर्थ केँ लऽ कऽ विद्वान लोकनि मे मतैक्य नहि अछि। एहि शब्दक व्युत्पत्ति केँ लऽ कऽ अनेक प्रकार सँ विचार कयल गेल अछि, जाहि मे प्रमुख मत निम्नलिखित अछि—

(१) विधु शेखर भट्टाचार्य एकर सम्बन्ध 'पंक्ति' शब्द सँ जोड़ि कऽ निम्न विकास देखयबाक प्रयत्न कयलनि अछि—

पंक्ति—पन्ति—पन्ति—पटिठ्—पल्लि—पालि

मुदा एतय ई कहब कठिन अछि जे पन्ति सँ पटिठ्, पल्लि कोन ध्वनि सिद्धान्तक आधार पर भेल अछि।

(२) किछु विद्वान एहि भाषा केँ पल्लि सँ व्युत्पन्न मानैत छथि। पाल्लिक अर्थ गाँव कहि कऽ गामक भाषा कहल जाइत अछि।

(३) डॉ० भण्डारकरक अनुसार—

प्राकृत—पाकट - पाअड़—पाल पालि एहि मे कोनो प्रकारक स्वाभाविकता नहि अछि।

(४) एक अन्य कल्पना मे एकरा परियाय (पर्याय) सँ व्युत्पन्न मानैत छथि, किएक तँ बुद्धक उपदेश कें पर्याप्त कहल गेल अछि, जाहि कारणे एकरा 'पर्याय' सँ निष्पन्न कहैत छथि। परियाय—पलियाम - पलियाय - पालि।

एहन अवस्था मे किछु कहि सकब संभव नहि अछि। ओना एहि भाषाक साहित्य मुख्य रूप सँ बुद्ध भगवानसँ सम्बन्धित अछि। एहि भाषा मे व्याकरण ग्रन्थ, संस्कृत ग्रन्थ, दर्शन ग्रन्थ आ कोश आदिक सेहो सृजन भेल अछि। ग्रियर्सनक अनुसार प्राकृतक क्षेत्रीय विभाजन एहि प्रकार सँ कयल जा सकैत अछि—

(क) बहिरंग उपशाखा

(१) पश्चिमोत्तर समूह – पैशाची, ब्राचड़ ओ खस।

(२) दाक्षिणात्य समूह – महाराष्ट्री।

(३) प्राच्य समूह—मागधी।

(ख) मध्यवर्ती उपशाखा

(४) मध्यवर्ती समूह—अर्धमागधी

(ग) अतरंग उपशाखा

(५) केंदीय समूह—शौरसेनी।

(६) पहाड़ी समूह—खस।

प्राकृतक भेदोपभेदक वैशिष्ट्यक चर्चा एतय नहि कऽ मागधी प्राकृतक चर्चा एतय कऽ रहल छी, किएक तँ मैथिलीक उद्भव मागधी प्राकृत सँ भेल अछि।

(ख) मागधी प्राकृत—मगध जनपदक भाषा कें मागधी नाम देल गेल। ई समस्त पूर्व भारतक भाषा छल। संस्कृतक नाटककार अपन नीच पात्र सँ एही भाषाक प्रयोग कराओल अछि। तैयो किछु नाटक ओ शिलालेख सँ एकर स्वरूप लक्षित होइत अछि—

(१) र् केर बदला मे सर्वत्र ल्। यथा—

संस्कृत	राजा	पुरुष:	चौर:	रुद्र:
शौरसेनी	राआ	पुरिसो	चोरो	रुद्दो
[illegible]	लाजा	पुलिशे	चोले	लुद्दे

सम्प्रति मगध ओ मिथिला मे सेहो र् स्वन प्रधान अछि।

(२) स् ओ ष केर स्थान मे श् प्रयोग। यथा—

प्राभा	विष	पुरुष:	रभस	स:
मागधी	विश	पुलिशे	लहश	शे

(३) 'स्थ 'र्थ' केर स्थान पर 'स्त' भेटैत अछि।

(४) आरम्भिक संयुक्त व्यंजन (ऊष्मक संग) प्रायः समीकृत नहि होइत अछि।

(५) कतहु-कतहु 'ज' केर 'य' भऽ जाइत अछि।

(६) प्रथमा एकवचन मे संस्कृतक विसर्ग (:) केर स्थान पर 'ए' भेटैत अछि।

हमरा लोकनि देखैत छी जे प्रत्येक शब्द सबहक उद्भव रूप मागधी अपभ्रंश सँ अछि। जेना हमरा लोकनि समक्ष संस्कृत भाषा शौरसेनी भाषा आ मागधी अपभ्रंश भाषा अछि। ओहि भाषा सँ मैथिली शब्दक क्रमक विकास प्रायः एहि रूपें बुझल जाइत अछि। यथा राजा शब्द संस्कृत अछि। शौरसेनी प्राकृत मे एकर रूप 'रा' 'आ' भए गेल। मागधी अपभ्रंश मे ई लाआ भेल आ मैथिली मे राजा शब्द कें उत्पन्न कयलक। तहिना पुरुष संस्कृत शब्द अछि। ओहि सँ शौरसेनी मे पुरिसो भय गेल तथा मागधी अपभ्रंश मे पुलिसे शब्द भेल आ मैथिली मे पुरुष (पुरुख) शब्दक व्युत्पन्न भेल। संस्कृत अर्ध शब्दक शौरसेनि प्राकृत मे अज्ज मागधी मे अय्य आ मैथिलीमे आइ शब्दक व्युत्पन्न भेल।

एहि प्रकारें देखला उत्तर ई कहल जा सकैत अछि जे संस्कृतक शब्द सँ शौरसेनी प्राकृत बनल आ ताहि सँ मागधी अपभ्रंश आ मगधी अपभ्रंश सँ मैथिली परन्तु यदि ध्यान पूर्वक देखल जाय तँ मैथिली शब्दक ठीक व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द सँ कहल जायत। जेना आइयो कालिह मैथिली साहित्यक कवि लोकनि संस्कृतक तत्सम आ तद्भव रूपक प्रयोग करैत छथि नहि कि मागधी अपभ्रंशक। जहाँ धरि वर्गक प्रश्न अछि जे मैथिली कें कोन वर्ग मे राखल जाय तँ विद्वान लोकनिक अनुसारें एकरा मागधी अपभ्रंश मे राखब पूर्णयुक्ति संगत होयत।

प्राच्य अपभ्रंशक दर्शन शिक्षाचार्यक सिद्ध साहित्य किंवा चर्यापद मे होइत अछि। जकर अन्तर्गत चर्याचर्य विनिश्चय, दोहाकोष एवं डाकार्णव अबैत अछि। विद्यापतिक कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका मे सेहो एकर झलक

भेटैत अछि। एकरा अवहट्ट कहैत छी। भारतक समस्त पूर्वांचल एकर क्षेत्र अछि। एहि क्षेत्र मे आधुनिक युगक मैथिली, मगही, बंगाली, उड़िया एवं असमिया भाषा सभ विद्यमान अछि।

डा० जयकान्त मिश्र एहि संदर्भ मे लिखैत अछि -

The magadhi prakrita bega to branch out quite early. The grammarians of prakrita montior amangert varities of magadhi a gaudi a dhak ki and an utkali or odri, maithili is the direct descendant of magadhi and spoker in its original lonre guadi was. The parent of Northern Begali and Absame so, dhakki lorn the magadhi of Daccal became modern estern Bengali oriya is the representative of Ancient kali.

संस्कृत मे य: शब्द अछि तकर मागधी अपभ्रंश 'जे' होइत छलैक परञ्च मैथिलीमे 'जे' शब्दक सेहो प्रयोग होइत अछि। गृहे शब्द से हो संस्कृतक अछि जकरा मागधी अपभ्रंश मे घरे होइत छल मैथिलो मे आइयो काल्हि घरे शब्दक प्रयोग होइत अछि। संस्कृतक हस्तेन शब्द मागधी अपभ्रंश मे हाथें क प्रयोग होइत छल, मैथिली मे आइयो हाथें शब्दक प्रयोग होइत अछि। अत: ई कहब सत्य थिक जे मैथिलीक उद्भव मागधी अपभ्रंश सं भेल।

अपभ्रंश काल

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाक तृतीय-काल 'अपभ्रंश काल' कहबैत अछि। आधुनिक विद्वान लोकनि प्रत्येक प्राकृत सँ एक-एक अपभ्रंशक उद्भव मानल अछि, मुदा सिद्धान्त ओ उपकल्पनाक बात छोड़ि कऽ जखन हम उपलब्ध अपभ्रंश साहित्यक आधार पर बिचार करैत छी तँ एकर तीन गोट भेद लक्षित होइत अछि - (१) प्रतीच्य, (२) दाक्षिणात्य ओ (३) प्राच्य। एहि मे सँ प्रथम दू केर बर्णन संक्षिप्त रूप सँ कयल जा रहल अछि आ तेसरक विवरण विस्तार सँ कयल जायत, किएक तँ मैथिलीक उद्भव एही सँ भेल अछि।

(१) प्रतीच्य—एकर क्षेत्र ओ थिक जतय सम्प्रति गुजराती, राजस्थानी ओ हिन्दी बाजल जाइत अछि। ग्रियर्सन एकरा शौरसेनी-क्षेत्र कहलनि अछि। एहि अपभ्रंश केँ बयो शौरसेनी अपभ्रंश वा नागर अपभ्रंश सेहो कहैत छथि। एकर साहित्य सभ सँ अधिक मात्रा मे कालिदास (पाचम शताब्दी) सँ लऽ कऽ हेमचन्द्र (बारहम शताब्दी) धरिक कृति मे सुरक्षित अछि।

(२) दाक्षिणात्य—एकर क्षेत्र महाराष्ट्र, बरार ओ हैदराबादक लग-पास मे पसरल अछि। एकर उदाहरण पुष्पदंतकृत महापुराण, नागकुमारचरित ओ जसहरचरिउ (९६५ ई०) मे तथा कनकामरकृत करकंडचरित (दसम शताब्दी) मे भेटैत अछि। एकरा महाराष्ट्र प्राकृत सेहो कहल जाइत अछि।

(३) प्राच्य—एकर दर्शन काण्ह तथा सरहक दोहा-कोश मे होइत अछि, जकर कालक सम्बन्ध मे विद्वान लोकनिक बीच मतभेद अछि। विद्यापतिकृत कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका मे तथा डाकार्णब-महायोगिनी तंत्र नामक तंत्रग्रंथ मे सेहो एहि अपभ्रंशक झलक भेटैत अछि। ओना एकर रचनाक समय अपभ्रंश भाषा बोलचाल मे नहि छल। एकर क्षेत्र भारतक पूर्वीय अंचल थिक, जतय सम्प्रति असमिया, बंगला, ओड़िया, मगही, भोजपुरी ओ मैथिली बाजल जाइत अछि। एकरा क्यो-क्यो मागध अपभ्रंश सेहो कहैत छथि। एकर मुख्य विशेषता निम्नलिखित अछि—

(क) ऊष्मक स्थानमे केवल श् ग स् केर प्रयोग तथा र् केर स्थानमे केवल ल् केर प्रयोग, जे मागधी प्राकृतक स्वनिक विशेषता छल, एहिमे लुप्त होइत गेल अछि आ मनोनुकूल ढंगसं स् वा श् तथा र् वा ल् केर प्रयोग भेटैत अछि।

(ख) कर्त्ता, करण ओ अधिकरणमे ए विभक्तिक प्रयोग। यथा—

संस्कृत	य:	स:	गृहे	हस्तेन
प्राच्य अप०	जे	से	घरे	हाथे, हाथें
मैथिली	जे	से	घरे	हाथे, हाथें
हिन्दी	जो	सो	घर में	हाथ सं

(ग) सम्बन्धमे 'केरा,' केरक केर प्रयोग। यथा—ताखण केरा (उस क्षण का)।

(घ) भूत-क्रियापद ओ भूतकृदंत मे 'इल्ल, ल्लँ प्रत्ययक प्रयोग।

(ङ) भविष्यत्-क्रियापद मे 'तब्व, 'अब्व, 'ब केर प्रयोग।

एहि मे सँ अधिकांश विशेषता मागधी-वर्गक आधुनिक भाषामे तथा विशेष कऽ अवहठ भाषा मे सेहो विद्यमान अछि।

नवीन भारतीय आर्यभाषा (नभा) ओ मैथिली

मध्य आर्यभाषाक अन्तिम रूप अपभ्रंशक रूपमे देखबामे अबैत अछि। अपभ्रंशक विकास प्राकृतकालीन बोल-चालक भाषा सँ भेल एवं एहि रूपमे ओकरा प्राकृति ओ नव्य भारतीय आर्य [illegible]

अछि। अपभ्रंश साहित्यक रचना जाहि भाषामे भेल अछि ओहिमे भाषा विभेद अधिक नहि अछि। एकर कारण ई अछि जे ओ भाषा प्रायः परिनिष्ठित छल। एकर अर्थ ई कदापि नहि जे ओहिकालमे सिधु, महाराष्ट्र, बंगाल आदिक बोल-चालक भाषा एके छल। सत्य तँ ई अछि जे ओहिकाल मे आर्य भाषाक स्थानीय रूपक विकास वा स्थानीय प्रभाव आदिक कारणे विकसित होइत रहल। ई रूप पाली ओ अशोकक शिलालेखी प्राकृत मे किछु आरो विकसित भेल। प्राकृत मे आबि एकर स्वरूप स्पष्ट भऽ गेल। १०००-१५०० ई० मे आबि उत्तर भारत मे पजाबी, सिन्धी, राजस्थानी, खड़ी बोली, महगी, भोजपुरी, मैथिली आदि १३ भाषाक विकास भेल।

अपभ्रंश काल १००० वा ११०० ईसवीक लगभग मे समाप्त भऽ गेल एवं आधुनिक भाषाक काल आरम्भ भेल। मुदा आरम्भक दू-तीन सय वर्ष धरिक भाषा अपभ्रंश ओ आधुनिक भाषाक निखरल रूप सोझाँ आयल। एहि बीचक काल संक्रान्ति काल छल। प्राकृतपैंगलम्, वर्णरत्नाकर, कीर्तिलता, कीर्तिपताका आदिक भाषा एही कालक अछि। एहि भाषाक लेल परवर्ती अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी, देशी आदि कतेको नामक प्रयोग भेल, मुदा किछु लोकक अनुसारें एकरा लेल अवहट्ठ नाम अत्यधिक उपयुक्त अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुर 'वर्णरत्नाकर', विद्यापति 'कीर्तिलता' तथा वंशीधर प्राकृत पैंगलम्क टीका मे अपभ्रंशक हेतु अवहट्ठ प्रयोग कयलनि अछि।

मैथिली भाषाक सर्वाधिक मान्य रूप विद्यापतिक काव्य मे उपलब्ध होइत अछि। विद्यापति एहि भाषाकें 'देसिल वयना' अर्थात् देशी भाषाक नाम सँ सम्बोधित कयलनि अछि। तदनन्तर उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे कविवर चन्दा झा 'मिथिला भाषा'क संज्ञा देलनि। एकर एतिरिक्त मैथिली, तिरहुतिया आदि नामसँ सेहो सम्बोधित कयल जाइत अछि।

एहि भाषाकें बजनिहार बंगाल, आसाम, बिहार राज्यमे पसरल अछि। अनुमान कयल जाइत अछि जे एकर बजनिहारक संख्या चारि करोड़ अछि।

साहित्यक विशेषता—नवीन भारतीय आर्यभाषा मध्य सर्वाधिक सम्पन्न साहित्य मैथिलीएटाक अछि। एहिं भाषामे साहित्य सृजन चउदहम शताब्दीक पूर्वहिसँ होइत आबि रहल अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकर विख्यात कृति थिक। एहि मे काव्य साहित्यक अनेक विधाक विकास भेल अछि। लोक साहित्य सेहो समृद्ध अछि। लोकगीत श्रुतमधुर ओ मार्मिक अछि। एकर किछु प्रमुख विशेषताक उल्लेख कऽ रहल छी।

मैथिलीक व्याकरण सम्बन्धी विशेषता—साहित्यिक विशेषताक अतिरिक्त मैथिलीक किछु व्याकरण सम्बन्धी प्रमुख विशेषता अछि। मैथिली ओ भोजपुरीक व्याकरण सम्बन्धी विशेषता बहुत किछु एक समानहि अछि। मैथिलीमे सेहो संज्ञापद, क्रियापद, सर्वनाम आदिक निर्माण भोजपुरीक भाँति होइत अछि। एक वचन ओ बहुवचनक रूप सेहो बहुत किछु एकहि जकाँ भेटैत अछि। किछु प्रमुख विशेषताक उल्लेख निम्नलिखित अछि—

(क) मैथिलीक संज्ञा सम्बन्धी विशेषता—भोजपुरी जकाँ मैथिलीमे सेहो ह्रस्व ओ दीर्घ आदि रूप उपलब्ध अछि। उदाहरणार्थ—घर, घरवा, घरऊवा।

बहुवचन बनयबाक लेल 'सभ' एवं 'लोकनि' आदि शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि। उदाहरणार्थ—नेनाक बहुवचन बनयबाक लेल 'नेना सभ' लिखल जाइत अछि।

(ख) कारकक विभक्ति सम्बन्धी विशेषता—संज्ञाक विविध कारकमे जाहि विभक्तिक प्रयोग मैथिलीमे कयल जाइत अछि, ओकर उल्लेख निम्नलिखित अछि—

(१) करण कारक मे 'एँ' केर प्रयोग होइत अछि, यथा 'नेने'।

(२) सम्बन्ध कारक मे 'क' 'अक' आदि विभक्तिक प्रयोग होइत अछि। उदाहरणार्थ 'नेनाक'।

(३) अधिकरण कारक मे 'ए' विभक्तिक प्रयोग होइत अछि; जेना—'घरे'।

कारकक विभक्तिक रूप मे 'केँ', 'सँ', 'सोँ', 'मे' आदिक प्रयोग सेहो मैथिली मे भेटैत अछि।

संज्ञाक विकारी रूपक निर्माण मे, पदक अन्त मे (अन्त्य) ब्, र्, ल्, का, बा, रा, ला आदि बनि जाइत अछि। उदाहरणार्थ 'देखब' केर मैथिली दिखबा बनि जायत।

(ग) मैथिली मे सर्वनाम सम्बन्धी विशेषता—मैथिली मे पुरुषवाचक सर्वनाम मे हम, हमार, तोह, तोहार, अपन आदि शब्दक प्रयोग होइत अछि।

(घ) क्रिया ओ विभिन्न कालक विशेषता—मैथिली मे क्रिया ओ विभिन्न काल सम्बन्धी विशेषता निम्नलिखित अछि—

हिन्दीक सहायक वर्तमान कालिक क्रिया 'हूँ' केर स्थान पर गुजराती मे एहि लेल प्रयुक्त भेनिहार 'छ' केर रूप देखबा मे अबैत अछि। एकर किछु उदाहरण निम्नलिखित अछि—

एकवचन

उत्तम पु० छिअहु, छँ, छी

मध्यम पु० छह, छे, छो आदि अछि।

अन्य पु० छिएन्हि, छिअ, छहैन्ह, अछिन्ह

कखनहु एहि लेल 'थिक' रूपक सेहो प्रयोग कयल जाइत अछि। उदाहरणार्थ थिकइ, थिकह, थिक आदि।

भूतकालक क्रिया मे 'छ' केर स्थान पर 'रह' केर प्रयोग सेहो होइत अछि।

(ङ) 'मभा'क सभ व्यंजन-संयोग नभा मे प्रथम व्यंजन गमा कऽ सरल (इकहरा) भऽ गेल अछि, तथा क्षतिपूर्ति स्वरूप पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ भऽ गेल अछि। यथा—

प्राभा	चक्र	हस्त	मित्र	व्याघ्र	पुत्र
मभा	चक्क	हत्थ	मित्त	बग्घ	पुत्त
नभा	चाक	हाथ	मीत	बाघ	पूत

एहि सभ विशेषताक अतिरिक्त अलंकार, वर्ण्यवस्तु, काव्य-विधा, छंद आदि विषय मे नभा-काल मे प्रचुर मात्रा मे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन भेल, जाहि सँ एक नवीन युगक अरूणोदय भेल।

'नभा'क कालिक विभाजन

भाषात्मक विकासक दृष्टिसँ सभ नवीन भारतीय आर्यभाषाक कालिक विभाजन प्रायः ओहने होयत, जेना मैथिलीक अछि। यथा—

(१) १३५० ई० सँ १६०० ई० धरि आदिकाल,

(२) १६०० ई० सँ १८०० धरि मध्यकाल तथा,

(३) १८०० ई० सँ अद्यपर्यन्त, आधुनिक काल।

'नभा'क क्षेत्रीय विभाजन

ग्रियर्सन भारतीय आर्यभाषाक विभाजन एहि तरहेँ कयलनि अछि -

(क) बहिरंग उपशाखा

(i) पश्चिमोत्तर समूह—

(१) लहंदा वा पश्चिमी पंजाबी।

(२) सिंधी

(ii) दाक्षिणात्य समूह

(३) मराठी।

(iii) प्राच्य समूह—

(४) ओड़िया।

(५) बिहारी (मैथिली, मगही ओ भोजपुरी)।

(६) बंगला।

(७) असमिया।

(ख) मध्यवर्ती उपशाखा

(iv) मध्यवर्ती समूह—

(८) पूर्वी हिन्दी।

(ग) अन्तरंग उपशाखा

(v) केंद्रीय समूह—

(९) पश्चिमी हिन्दी।

(१०) पंजाबी।

(११) गुजराती।

(१२) भीली।

(१३) खानदेशी।

(१४) राजस्थानी।

(vi) पहाड़ी समूह—

(१५) पूर्वी पहाड़ी।

(१६) केंद्रीय पहाड़ी।

(१७) पश्चिमी पहाड़ी।

डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी अन्तरंग-बहिरंग-सिद्धान्तकेँ खण्डन करैत 'नभा'क क्षेत्रीय विभाजन एहि तरहेँ कयलनि अछि—

(क) उदीच्य (उत्तरी)—सिंधी, लहंदी ओ पंजाबी।

(ख) प्रतीच्य (पश्चिमी)—गुजराती।

(ग) मध्यदेशीय (बीचक)—राजस्थानी, पश्चिमी, हिन्दी, पूर्वी हिन्दी ओ बिहारी।

(घ) प्राच्य (पूर्वी)—उड़िया, बंगाली ओ आसामी।

(ङ) दक्षिणात्य दक्षिणी—मराठी।

पहाड़ी भाषाक आधार चटर्जी महोदय पैशाची, दरद वा खसकें मानैत छथि । एहि भाषा सभक संक्षिप्त परिचयकें बुझि लेब उपयुक्त होयत ।

सिन्धी—सिन्धु नदीक दुनू कछेर पर एकर प्रयोग होइत अछि । बजनिहार अधिकतर मुसलमान छथि । ई सभ फारसी शब्द प्रयोग स्वतन्त्रतासँ करैत छथि । लिपि फारसी लिपिक किछु विकृत रूप अछि, ओना देवनागरी लिपिक विकृत रूपकें सेहो प्रयोगमे आनैत छथि । कहियो-कहियो गुरुमुखीक सेहो प्रयोग कयल जाइत अछि । ब्राचड़ अपभ्रंशक एक आदिम लक्षण त् द् का ट् ड् भऽ जायब सिन्धीमे भेटैत अछि । सिन्धी भाषाक पाँच मुख्य बोली अछि जाहिमे सँ मध्य भागक भाषा बिचोली, साहित्यिक स्थान लेने अछि । एही देशमे प्राचीन कालमे ब्राचड़ अपभ्रंशक प्रदेश छल । एकर पश्चिममे कच्छ दीपमे कच्छी बाजल जाइत अछि । गुजराती ओ सिन्धीक मिश्रणसँ एकर निर्माण भेल अछि । सिन्धी भाषामे साहित्य अछि ।

लहंदी—पंजाबक पश्चिमी भाग तथा पश्चिमोत्तर प्रदेशक पूर्वी भागक ई भाषा थिक । आब ई भाग पाकिस्तानमे चलि गेल अछि ।

पंजाबी—हिन्दी भाषा क्षेत्रक ठीक पश्चिमोत्तरमे स्थित भुभागमे ई बाजल जाइत अछि ।

गुजराती ई भाषा गुजरात तथा ओकर समीपवर्ती क्षेत्रमे बाजल जाइत अछि । एहि बोलीक कोनो स्पष्ट विभाजन नहि अछि । पारसी एहि भाषाकें अपना लेलक अछि । अतएव एकर प्रसार एक व्यापारिक भाषाक रूपमे भऽ गेल अछि । भीली ओ खान देशी भाषासँ एकरा घनिष्ट सम्पर्क अछि ।

राजस्थानी—पंजाबक दक्षिणमे राजस्थानक प्रदेश अछि । एहि राज्यक भाषा राजस्थानी थिक । बस्तुतः ई भाषा मध्यदेशक प्राचीन भाषाक दक्षिणी पश्चिमीक एक विकसित रूप अछि । मुख्यतः एकर चारि बोली भेद अछि—मेवाती, मारवाड़ी, मालवी ओ जयपुरी ।

बिहारी—बिहार राज्य ओ ओकर निकटस्थ क्षेत्रक भाषा बिहारी थिक । उत्पत्तिक दृष्टिसँ एकर बंगालीसँ घनिष्ट सम्बन्ध अछि । बंगाली जकाँ एकरहु उत्पत्ति सेहो मागध अपभ्रंशसँ भेल अछि । जाहि क्षेत्रमे कोनो समय मागध अपभ्रंश बाजल जाइत छल ओतय आब बिहारी प्रदेश अछि । एकर मैथिली, मगही, भोजपुरी तीन गोट बोली अछि ।

उड़िया—उड़ीसा राज्यमे एकर प्रयोग होइत अछि ।

बंगाली—पाकिस्तानक पूर्वी बंगाल तथा भारतक पश्चिमी बंगालमे एकर प्रयोग होइत अछि ।

असमी वा असमिया आसाम राज्य क्षेत्रमे एहि भाषाक प्रयोग होइत अछि ।

मराठी—दक्षिणक महाराष्ट्री अपभ्रंशसँ विकसित ई भाषा महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेशक किछु जिलामे बाजल जाइत अछि ।

पहाड़ी भाषा—पहाड़ी भाषा हिमालयक घाटी ओ तराइमे पूर्वसँ लऽ कऽ पश्चिम धरि विस्तीर्ण प्रदेशमे बाजल जाइत अछि । एकर तीन रूप अछि—पूर्वी पहाड़ी, मध्यवर्ती पहाड़ी ओ पश्चिम पहाड़ी ।

भारतवर्षक आर्येतर भाषा

भारतवर्षमे आर्य, मुंडा, द्राविड़ तथा तिब्बती चीनी परिवारक भाषा बाजल जाइत अछि ।

पालीनेशियाई परिवारक भाषा बजनिहार, भारतक किछु जंगली भागमे भेटैत अछि ।

मुंड़ा—छोटा नागपुर, मध्यप्रदेश, उड़ीसाक किछु जिला, मद्रासक किछु भाग, पश्चिमी बंगाल आ बिहारक पर्वती तथा जंगली प्रदेशमे एकर बजनिहार रहैत छथि । हिमालयक तराइमे सेहो एकर बजनिहार छथि ।

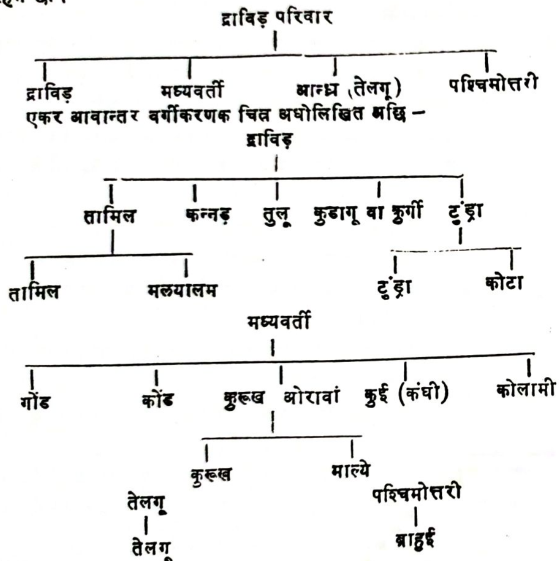
ई आर्य ओ द्राविड़ दुनू भाषाकें प्रभावित कयलक अछि । बिहार ओ भोजपुरीक क्रियाक जटिलता एकरे प्रभावक फल थिक ।

मुंडाक सात बोली आ आस्ट्रेलियाइ परिवारक बोली सेहो एही प्रदेशमे बाजल जाइत अछि ।

द्रविड़-परिवार (Dravidian Family)—दक्षिण भारतमे नर्मदा ओ गोदावरीसँ लऽ कऽ कन्याकुमारी अन्तरीव धरि बाजल जाइत अछि । एहिसँ अतिरिक्त उत्तरी लंका, लक्षद्वीप, बेलूचिस्तान, मध्य भारत, बिहार, उड़ीसामे सेहो बाजल जाइछ । एकर पर्याय तामिल-परिवार सेहो अछि । संभावना जे द्रविड़—तमिल । भारतमे अनार्य पूर्वसँ छलाह । आर्य उत्तर पश्चिमसँ अयलाह, हुनका लोकनिकें पराजित कयल ओ हुनका द्रविड़ नामे सम्बोधित कयल । किछु विद्वान लोकनि एहि परिवारक सम्बन्ध भारतीय आर्य-भाषासँ

अन्य परिवारक भाषासँ स्थापित करबाक निष्फल प्रयास कयलनि अछि। वास्तवमे द्राविड़क विकसित रूप तामिल थिक। मुंडा परिवारक भाषासँ भिन्न होयबाक अतिरिक्त आर्य भाषासँ सेहो ई भिन्न अछि। ई अश्लिष्ट योगात्मक, प्राकृतिक अछि तथा एहिमे स्वर अनुरूपता भेटैत अछि।

भाषा – द्राविड़ परिवारक कुल १४ गोट भाषा अछि। भाषा वैज्ञानिक एकरा चारि भागमे विभाजित कयल अछि। एकर विभाजन चित्र एतय दऽ रहल छी।



विशेषता –

(१) एहि परिवारक भाषा अश्लिष्ट अन्तयोगात्मक अछि। एहिमे प्रकृति प्रत्ययक भेद स्पष्ट रहैत अछि। प्रकृतिमे कोनो परिवर्तन नहि होइत अछि। एहि दृष्टिसँ एहि परिवारक तुर्कीसँ साम्य अछि।

(२) मूर्धन्य ध्वनिक बाहुल्य अछि। किछु विद्वानक अनुमान छनि जे संस्कृतमे मूर्धन्य ध्वनिक प्रवेश एही भाषाक सम्पर्कक कारण अछि।

(३) उराल अल्ताई परिवारक समान समस्वरता पाओल जाइत अछि।

(४) ए ओ दीर्घहिटा नहि, ह्रस्व (ऐ ओ) सेहो होइत अछि।

(५) संज्ञाक विभाग उच्च निम्न वा सज्ञान-अज्ञानमे कयल जाइत अछि।

(६) तीन लिंग ओ दू गोट वचन अछि। लिंगक आधार पुरुषत्व-स्त्रीत्व नहि, प्राणित्व अप्राणित्व अछि। लिंग बोधक लेल आवश्यकतानुसार संज्ञाक संग 'पुरुष' ओ 'स्त्री' वाचक शब्द जोड़ि देल जाइत अछि।

(७) संज्ञाक अनुरूप विशेषणक रूपमे परिवर्तन नहि होइत अछि।

(८) विभक्तिक कार्य प्रत्ययसँ लेल जाइत अछि।

(९) क्रियामे तिङन्तसँ अधिक कृदन्त रूपक प्रयोग होइत अछि। 'पुरुष' क बोध पुरुषवाचक सर्वनाम जोड़ि कऽ कराओल जाइत अछि। कर्मवाच्यक अभाव भेलासँ ओकर कार्य सहायक क्रिया द्वारा चलाओल जाइत अछि। काल निश्चय-अनिश्चयक भावनासँ निर्धारित होइत अछि।

एहि परिवारक भाषामे तामिल, मलयालम, कन्नड़, तुलू, गोंड़ी, कुरूख आदि अछि। एहि भाषा सभ पर आर्य भाषाक अत्यधिक प्रभाव पड़ल अछि।

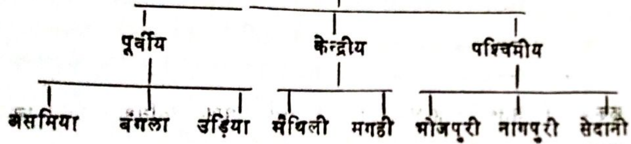
मैथिलीक विभिन्न विभाषा

मैथिली एक भाषा थिक, उपभाषा नहि। ई सवा सात मिलियन लोकक मातृभाषा थिक जे हिन्दी वा उर्दू ने बाजि सकैत अछि आ ने सरलता सँ बुझि सकैत अछि। शब्दावली ओ व्याकरण दुनू विषय मे ई हिन्दी ओ बंगला दुनू सँ भिन्न अछि तथा दुनू सँ ताही तरहेँ स्वतंत्र अछि जाहि तरहेँ क्रमशः मराठी ओ उड़िया। मिथिला एक एहन प्रदेश थिक जकरा अपन परम्परा छैक, अपन कवि छैक आ अपन प्रत्येक वस्तु पर गौरवो छैक।

स्मरणीय थिक जे यैह उक्ति ग्रियर्सन साहेब स्वयं अपन मैथिलीक व्याकरण (1881-82) क भूमिका मे मैथिली केँ एक स्वतंत्र भाषा घोषित कऽ चुकल छथि।

जे ग्रियर्सन साहेब मैथिली केँ एतेक जोरदार शब्द मे स्वतंत्र भाषा कहि चुकल छथि सैह एहि सर्वेक्षण मे मैथिली केँ उपभाषा किएक कहलनि से विचारणीय थिक। सर्वेक्षण क्रम मे जखन बिहारी नामक एक भाषाक कल्पना कयलनि तखन मैथिली केँ ओहि साँच मे बैसायब आवश्यक भऽ गेलनि। बिहारी भाषा ग्रियर्सनक मानस पुत्री थिक। परवर्ती आचार्य लोकनि एकर स्तित्व केँ निर्मूल कऽ देलनि अछि।

ग्रियर्सन साहेबक बाद जे कतोक भारतीय विद्वान लोकनि भारतीय भाषा गहन अध्ययन कयलनि ताहि मे अग्रगण्य छथि डा० सुनीति कुमार चटर्जी। ई अपन शोध प्रबन्ध "Origine and Development of Bengali Language." मे बिहारी भाषाक अस्तित्व खण्डन करैत मैथिली कें भोजपुरी सं पृथक समूहमे रखलनि अछि। हुनका मतें मागधी अपभ्रंश सं जे भाषा सभ बहरायल से तीन वर्ग मे बाँटल जा सकैत अछि —



एहि प्रवन्धक प्राक्कथन ग्रियर्सने साहेब लिखने छथि ओ ताहि मे कहने छथि जे एहि मे अंतरंग-वहिरंग भाषा सिद्धान्तक जे विद्वता पूर्वक खण्डन कयल गेल अछि ताहि सँ ओ सहमत नहि छथि, प्रत्युत ओ एखनहुँ अपन पूर्वक मत पर दृढ़ छथि। एहि सं परोक्ष रूपें ई ध्वनित होइत अछि जे ग्रियर्सन साहेब सुनीति बाबूक एहि निष्कर्ष सं सहमत छथि जे मैथिली उपभाषा नहि एक स्वतंत्र भाषा थिक।

आब प्रश्न उठैछ जे भाषा ककरा कही ? आधुनिक भाषाविज्ञान मे एकर विवेचन एहि प्रकारें कयल जा रहल अछि। क्यो दू व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिएं पूर्णतः अभिन्न भाषा नहि बजैत अछि। प्रत्येक व्यक्तिक अपन भिन्न-भिन्न भाषा होइत अछि जे व्यक्ति भाषा कहल जाइत अछि। एक व्यक्ति दोसराक भाषा बाजि तं नहि सकैत अछि किन्तु ओकरा बुझि सकैत अछि। जतेक व्यक्ति एक दोसराक भाषा कें बुझि सकैत अछि ततेक लोकक भाषा समूह ओकर बोली कहबैक। परन्तु जखन Aक बाजब B बुझैत अछि, Bक बाजब C बुझैत अछि किन्तु Aक बाजब नहि बुझैत अछि। मुदा B तं A ओ C दुनूक बाजब बुझैत अछि। तखन A+B+C= Lingira। ई तीनू मिलि एक भाषा कहबैत अछि।

मैथिली भाषाक क्षेत्र

मिथिलाक परम्परागत प्राकृतिक सीमा उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा [illegible] कोसी नदी तथा पश्चिम मे गंडक नदी अछि। एकर विस्तार पूर्व-

पश्चिम प्रायः २९० किलोमीटर तथा उत्तर-दक्षिण मे प्रायः १९३ किलोमीटर अछि, जे लगभग ५५,९२० वर्गकिलोमीटर होइत अछि।

मुदा जतय धरि मैथिली भाषा ओ मैथिल-संस्कृतिक प्रश्न अछि, मिथिलाक सीमा सम्प्रति बहुत बदलि गेल अछि। सम्प्रति गंगाक दक्षिण सम्पूर्ण भागलपुर जिला, मुंगेरक पूर्वीय भाग ओ संथालपरगनाक देवघर धरिक भाग मैथिली-भाषी क्षेत्र मे आबि गेल अछि। एकर क्षेत्रफल लगभग १९,९२० वर्गमील होइत अछि।

क्षेत्रानुसार विभाजन—क्षेत्रक दृष्टि सें मैथिलीक विभाजन बहुत आसान तथा स्पष्ट अछि। मैथिल चारि गोट भाषा सँ घेरायल अछि। पूर्व मे बंगला, पश्चिम मे भोजपुरी, दक्षिण मे मगही तथा उत्तर मे नेपाली। स्वभावतः भाषांतर सानिध्यक कारणे पारस्परिक प्रभाव पड़लासँ मैथिलीक मौखिक स्वरूप मे अंतर आयल अछि। एहि आलोक मे मैथिली कें पाँच उपभाषा मे बाँटि सकैत छी —

(१) पूर्वी पूर्णियाँ, भागलपुर तथा पूरबी संथाल परगनाक बोली, जतय बंगला सं सादृश्य, विशेषतः आघातक विषय मे, बहुत अधिक अछि।

(२) दक्षिणी—मुंगेरक बोली, जाहि मे मगही सँ बेसी साम्य पाओल जाइत अछि।

(३) पश्चिमी—मुजफ्फरपुर ओ पूर्व चम्पारनक बोली, जाहि पर भोजपुरीक प्रभाव अछि।

(४) उत्तरीवा नेपाली—नेपाल तराइक समस्त मैथिली-क्षेत्रक बोली, जाहि पर नेपालीक प्रभाव अछि।

(५) केन्द्रीय—मध्य मिथिलाक सम्पूर्ण क्षेत्रक बोली, जकर सान्निध्य मे कोनो अन्य भाषा नहि अछि आ एहि लेल अधिक असंकीर्ण अछि।

अंगिका ओ बज्जिका

अंगिका ओ बज्जिका मैथिलीक दुनू उपभाषा थिक। ई वर्त्तमान दशकक देन थिक। ग्रियर्सन जकरा छिकाछिकी ओ गंवारी कहलनि अछि, वैह पूर्वी मैथिलीक नाम अंगिका पड़ल। भागलपुर पौराणिक अनुश्रुतिक अनुसार महाभारतकालीन अंग देशक राजधानी छल। यैह अंगिकाक केन्द्र-स्थल मानल जाइत अछि। एहि सँ ई निष्कर्ष बाहर होइत अछि जे अंगिकाक अर्थ भेल अंग नामक जनपदक भाषा।

ग्रियर्सनक अनुसार पश्चिमी मैथिलीक नाम बज्जिका थिक। ई नामकरण बज्जी ओ लिच्छिवीक इतिहासक आधार पर कयल गेल अछि।

एहि दुनू उपभाषाक आघातमूलक विशेषता निम्नलिखित उदाहरण सँ स्पष्ट होयत —

पूर्वी मैथिली	देखबोऽ	देखीऽ	जकरोऽ	देखहोऽ
मानक मैथिली	देखऽब	देऽखि	जकऽर	देखऽहृ
पश्चिमी मैथिली	देऽखब	देऽख	जेऽकर	देऽखह

एहि हम देखैत छी जे अंगिकाक अंतिम स्वर पर जोर देल जाइत अछि, जकर फलस्वरूप अ स्वर ओ भऽ जाइत अछि। केंद्रीय उपभाषाक ह्रस्व ँ इ दीर्घ भऽ जाइत अछि। बज्जिकाक सर्वोपरि विशेषता अछि जे आघातक पाछाँ खिसकि जयबाक फलस्वरूप अंतिम लघु स्वरक लोप भऽ जाइत अछि।

सामाजिक स्तरक अनुसार शिक्षित ओ अशिक्षित दू प्रकारक बोली पाओल जाइत अछि। भ्रमणशील व्यापारी-वर्गक बोली मे औपभाषिक मिश्रण बेसी भेटैत अछि।

शिक्षित वर्गक बोली मानक मैथिलीक सन्निकट अछि। कृषिजीवी जातिक बोली स्थानीय उपभाषाक बोली होइत अछि, यथा—गोप, धानुक, कुर्मी आदिक बोली। व्यवसाय ओ बोलीक बोली भिन्न-भिन्न प्रकारक होइत अछि। एहि हेतु हम कहि सकैत छी जे स्थानीय उपभाषा भाषाक अध्ययन मे सहायक सिद्ध होइत अछि।

ग्रियर्सनक अनुसार विभाजन

ग्रियर्सन उपभाषा केँ छ भाग मे विभक्त कयलनि अछि—

(१) मानक मैथिली (STANDARD MAITHILI)—एकर केन्द्र-स्थल केन्द्रीय ओ उत्तरी दरभंगा अछि। दरभंगाक दक्षिण भाग मे ई विकृत रूप मे व्यवहृत होइत अछि, जकर नामकरण ओ दक्षिण मानक मैथिली कयलनि। उच्च जातिक लोक ई बजैत छथि। अंतिम स्वर केँ निम्न जातिक लोक लुप्त कऽ दैत छथि। ई बात दक्षिणी मानक मैथिली मे सेहो होइत अछि। ई गंगा सँ उत्तर मुंगेर जिला मे बाजल जाइत अछि। उत्तर भागलपुर मे मानक मैथिली प्रचलित अछि, सुपौल अनुमंडल मे शुद्ध ओ मधेपुरा अनुमंडल मे दक्षिणी।

(२) दक्षिणी मानक मैथिली (SOUTHERN STANDARD)—ई समस्तीपुर जिला मे, उत्तरी मुंगेर मे आ सहरसा जिलाक मधेपुरा अनुमंडल मे बाजल जाइत अछि। एहि मे मानक मैथिली सँ मुख्य अन्तर निम्नलिखित अछि—

(क) क्रियापदक वर्त्तमानकालिक रूप मे शेष-ह्रस्वताक नियम नहि अछि, अर्थात् मानक मैथिली मे जतय धातु-स्वर ह्रस्व रहैत अछि ओतय एहि मे गुरु; यथा—

मानक—देखइ छी, जनै छी

दक्षिणी—देऽखइ छी, जानै छी

(ख) सम्बन्ध-कारक मे ँ क केर संग-संग ँ के सेहो चलैत अछि; यथा

मानक—ओ खेतीक काज करइ छथि

दक्षिणी—ऊ खेती के काज करइ छथ

(ग) अधिकरण मे ँ ए, जे मानक मैथिली मे लुप्त जकाँ भऽ गेल अछि, एहि मे जीवित अछि, यथा—

मानक—हमर घर मे राति मे तीन गोटए पाहुन छलाह

दक्षिणी—मोर घरे राते तीन जना पाहुन छलथिन्ह

(घ) निम्नलिखित सार्वनामिक रूप विशेष अछि—

मानक—हमर	तोहर	अहाँ	(आप)
दक्षिणी—मोर	तोर	आइस	(आप)
मानक—जकर	तकर	जखन	तखन
दक्षिणी—जेकर	तेकर	जब	तब

(ङ) क्रियापद मे निम्नलिखित रूप विशेष अवलोकनीय अछि—

मानक—देखलहुँ	देखलहुँ	देखलथि	देखलक	देखलथि
दक्षिणी—देखलूँ	देखली	देखलथ	देखलका	देखलात
मानक—देखलहुँ	देखलिऐन्हि	देखलहुँ	देखताह	देखतीह
दक्षिणी—देखलाँ	देखलिहन्ह	देखलहाँ	देखतात	देखतीत

(च) 'अछि'क लेल हइ, अहि, अह, एह, यऽ, हऽ तथा एहइ रूप पाओल जाइत अछि।

(छ) मानक 'थिक' केर स्थान पर 'छिक' प्रयुक्त होइत अछि, तथा 'अछि' केर स्थान मे 'अछ'।

(ज) मधेपुरा मे मानक 'भेल' केर स्थान मे 'होल' सेहो व्यवहृत होइत अछि।

(३) पूरबी मैथिली (EASTERN MAITHILI) वा गँवारी—ई उपभाषा पूर्णियाँ जिलाक केन्द्रीय तथा पश्चिमी भाग मे अशिक्षित वर्गक बीच प्रचलित अछि आ महानंदा सँ पूरब सेहो हिन्दू सभ बजैत छथि, जतय मुसलमान मुख्यतः बंगला बजैत छथि। एकर मुख्य विशेषता निम्नलिखित अछि—

(क) दक्षिणी जकाँ वर्तमान धातु-स्वर दीर्घ रहि जाइत अछि, शेष ह्रस्वता-नियमक अनुसार ह्रस्व नहि भऽ जाइत अछि, यथा—देऽखइ।

(ख) सम्बन्धकारक-चिह्न 'क' केर अतिरिक्त 'के, 'कर, 'र,' केर सेहो प्रचलित अछि।

(ग) सर्वनामक रूप मे हम्मे, हम, तोहें, तोहरे, हमरे, अपने, इहाँ, अहाँ, इ, ई, एँ, इहाय, उथी, उ, ऊ, उएँ, ओहाय, उथी, जेकर, जकर, तेकर, तकर, की, कथी, किथी, कोई (काई), कुछु, कुछ, बहुवचन—तोहें-सब, तोहें-सिबि, तोहें-सी, तोहें-आर।

(घ) सामान्यतः क्रियापदक रूप कर्म वा फलभोगक अनुसार नहि बदलैत अछि, मात्र कर्त्ताक अनुसारहि, यथा—

मानक—हम तोरा देखलिओक।

पूर्वी—हम्मे तोरा देखली।

मानक—जखन तोहर ई बेटा अएलथुन्ह।

पूर्वी – जखन तोहर ई बेटा अइलउन।

(ङ) 'अब' तथा 'अल' केर बदला बंगला जकाँ 'इब तथा 'इल केर प्रयोग पाओल जाइत अछि, यथा—

पूर्वी—हमे आज देखिलों, एखनी फेरो देखिबों।

बंगला—आमि आज देखिलाम, एखन आबार देखिबो।

(च) मानक 'होइ' केर बदला अइ प्रचलित अछि, मुदा रूपावली मे ह् लागल रहैत अछि, यथा - हइबह आदि।

(छ) मानक थिक केर स्थान मे छिक प्रचलित अछि, यथा--छिकइ आदि।

(ज) मानक भेल केर स्थान मे बंगला जकाँ हील प्रचलित अछि।

(४) छिका-छिकी बोली—ई उपभाषा गंगाक दक्षिण मे पाओल जाइत अछि। ई दक्षिणी मुंगेरक पूरबी भाग मे, दक्षिणी भागलपुर मे, तथा संथाल परगनाक उत्तरी ओ पश्चिमी हिस्सा मे बाजल जाइत अछि। देवघर शहरक आसपासक किछु इलाका मे सेहो पाओल जाइत अछि, जतय बिहारी लोक मैथिली बजैत छथि तथा बंगाली लोक बंगला।

एकर स्वरूप मधेपुराक बोली दक्षिणी मानक सँ बहुत मिलैत अछि। यथा –

(क) शब्दक अंत मे ओ पाओल जाइत अछि, यथा—छिका-छिकी—कहबहो, मानक—कहबह, छिका-छिकी—अपनो, मानक—अपन।

(ख) पदांत 'इ केर उच्चारण मानक मे जतय ह्रस्वतर होइत अछि ओतय एहिमे दीर्घ जकाँ होइत अछि, यथा—मानक—देखि आबह, छिका-छिकी—देखी आबहो आदि।

(५) पश्चिमी मैथिली—दरभंगा जिलान्तर्गत रहनिहार सभ इस्लाम-धर्मावलंबी मैथिली बजैत छथि, मुदा हुनका सभक बोली मे अरबी-फारसी मिश्रित रहैत अछि। मुसलमान मे सभ सँ बेसी संख्या जोलहा सभक अछि, एहि हेतु ई जोलहा बोली कहबैत अछि।

मैथिलीक प्राच्य समूहक भाषा सभसँ पार्थक्य

मैथिलीमे एहन तत्वक पर्याप्त भंडार अछि जे एकरा प्राच्य समूहक भाषासँ पृथक करैत अछि। एहि सम्बन्धमे दू-चारि गोट महत्त्वपूर्ण तत्वक उल्लेख कऽ रहल छी।

(१) 'नभा'क सामान्य प्रवृति जटिलतासँ सरलता दिस तथा संश्लिष्टता दिस अछि। मैथिली सेहो एकर अपवाद नहि थिक। जतय धरि-धातु रूपावलीक प्रश्न अछि नवीन मैथिलीमे एक विचित्र प्रकारक संश्लेषणात्मक जटिलता विकसित भेल अछि, जकर विवेचन आगाँ क्रियापद-प्रकरणमे कयल अछि। यैह एक एहन व्यापक विशेषता अछि जे असगरहि मैथिलीकेँ अन्य सभ भाषा सभसँ फराक सिद्ध करबाक लेल पर्याप्त अछि। अपवादमे मगही भाषा अबैत अछि। मुदा मैथिलीसँ मगहीक पृथक स्वरूप नहि अछि।

(२) लिंगक विषयमे मैथिली एक दिस बंगला तथा दोसर दिस पूरबी हिन्दीक बीचमे पड़ैत अछि। जतय बंगला तथा पूर्वांचलीय भाषा अर्थगत एवं शब्दगत दुनू प्रकारक लिंग-भेदसँ मुक्त अछि, ओतय आजुक मैथिलीमे अर्थगत लिंग तँ विशेषण ओ क्रियापदमे सेहो बहुत किछु विद्यमान अछि, मुदा शब्दगत लिंग पूर्णतः उठि गेल अछि; यथा—

मैथिली—छोटि बेटी गेलि।

बंगाली—छोटो खुकि गेलो।

एहि विषयमे मगही बंगलाक निकट पहुँचि गेलीह अछि, जतय क्रियापदमे लिंग-भेद एकदम उठि गेल अछि। देखली, देखल भेली रूप आदर्श मगही क्षेत्रमे प्रचलित नहि अछि। मुदा विशेषणमे लिंग-भेद मैथिली जकाँ स्थिर अछि, यथा—

मैथिली—छोटकी बेटी गेलि, छोटका बेटा गेल।

मगही - छोटकी बेटी गेल, छोटका बेटा गेल।

मुदा भोजपुरीमे मैथिली जकाँ विशेषण ओ क्रियापद विद्यमान अछि; यथा—

भोजपुरी	मैथिली
माई अइली	माए अइलीह।
बाप अइलन	बाप अएलाह।
माई जात हई	माए जाइत छथि।
बाप जात हवे	बाप जाइत अछि।
माई जात बाड़ी	माए जाइत अछि।
बाप जात बाड़े	बाप जाइत अछि।

(३) बचनक विषयमे मैथिली अपन दुनू सखी-भाषा मगही ओ भोजपुरीकेँ छोड़ि बंगलाक लग चलि गेलीह अछि; किएक तँ मगही ओ भोजपुरी—दुनूमे संज्ञा मे न लगाकऽ बहुवचन बनैत अछि, यथा—लोगन, लड़िकवन, लड़िकन, मगही—लड़कन आदि। भोजपुरीमे तँ क्रियापदमे सेहो बहुवचन रूपक किछु अवशेष अछि; यथा—

लड़िकवन खेले गइल हुवन (बहुवचन)।

लड़िका खेले गइल हऽ (एकवचन)।

(४) सम्बन्धवाचक विभक्ति तँ मैथिलीकेँ एहि सभ भाषासँ फुटा देनिहार अछि; यथा—मैथिली बेटाक, मगही ओ भोजपुरी बेटा के, बंगला छेरेर, ओड़िया छरर आदि।

(५) कारक—विभक्तिक विषयमे प्राचीन मैथिली, बंगला आदिसँ मिलैत अछि, जतय कर्त्ता, करण ओ अधिकरण तीनूमे ए लगैत छल, ओतय कारक-चिह्नक विषयमे, जे मैथिलीमे बादमे विकसित भेल, ई पश्चिमसँ जा मिलल। यथा—

भोजपुरी	बालक के	बालक से	बालक मे
मैथिली	बालक केँ	बालक सँ	बालक मे
बंगला	बालक के	बालक हतो	बालके

(६) शब्द—भंडारक विषयमे मैथिली, मगही तथा बंगलासँ सन्निकट अछि आ भोजपुरीसँ किछु दूर पड़ैत अछि। एहि पार्थक्यक कारण ई अछि जे भोजपुरी क्षेत्रक सामाजिक सम्बन्ध पूरबक अपेक्षा पश्चिमसँ अधिक रहल अछि।

(७) एकर विपरीत मगहीसँ मैथिलीक सम्बन्ध हर दृष्टिसँ लगक रहल अछि। जे अन्तर असमिया ओ बंगालक बीच अछि, सैह अन्तर मैथिली ओ मगहीक बीच अछि। दुनूमे मात्र औपभाषिक अन्तर अछि। डॉ॰ सुनीति कुमार चटर्जीक कथन छनि जे एहि दुनू (मगध ओ मिथिला) क बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध बनल रहैत तँ आइ ई दुनू भाषा कोनो एकहिटा सामान्य भाषाक दू गोट उपभाषा रहितय। दोसर शब्दमे मैथिली ओ मगही पार्थक्य भाषात्मक कारणसँ नहि, अपितु ऐतिहासिक कारणसँ अछि। गोविन्द झाक कथन छनि जे जतय धरि आनुवंशिकताक प्रश्न अछि, ई कहब अधिक संगत होयत जे मैथिली मगहीसँ पृथक् भऽ गेल अछि, नहि मगही मैथिलीसँ। वा एना कहू जे मगहीकेँ मैथिलीक पैघ बहिनक पद भेटबाक चाही।

मैथिली एवं ब्रजबुलि

उत्कल, मिथिला, कामरूप, नेपाल आ ब्रज अपन-अपन विशेषताक कारणे प्रसिद्ध अछि। मुदा कतेको मामलामे यथार्थ अस्तित्व अविभाज्य अछि। जतऽ प्रत्येक व्यक्तिक जीवन-दर्शन एक दोसरासँ फराक होइत अछि, ओतऽ कतेको मामलामे समता सेहो पाओल जाइत अछि। जँ एना नहि होइत तँ संसारमे मतभेदक अन्त कहियो नहि भऽ सकितय। विद्यापतिक सुमधुर गीतक प्रभाव उपर्युक्त क्षेत्रमे सेहो पड़ल आ ओहिठामक लोकक हृदयमे सौन्दर्य-बोधक उदय सेहो भेल। ओ सभ सौन्दर्य-सागरमे निमग्नेटा नहि भेलाह अपितु ओहि क्षेत्रक मनीषी सभ राधा-कृष्ण सम्बन्धी गीतक अनुसरण करैत वैष्णव काव्यक रचना सेहो करऽ लगलाह। एहि तरहेँ अनेक मैथिली भाषाक सम्पूर्ण शक्तिकेँ प्रदर्शित कयनिहार आ भारतीय साहित्यक सर्वोच्च आसन पर माय मैथिलीकेँ बइसौनिहार कवि कण्ठहार अपन अद्भुत प्रतिभा आ अलौकिक कवित्व-शक्तिक कारणे देश आ कालक सीमाक अतिक्रमण कऽ सार्वदेशिक आ सार्वकालिक भऽ गेलाह अछि। वास्तवमे हिनक गीतक भाषा मर्यादित आ आकर्षक अछि। जकर लोभक संवरण आन प्रान्तक भाषा-भाषी नहि कऽ सकलाह। स्वतंत्र भाषाकेँ मिला कऽ एक नव साहित्यक भाषाक निर्माण भेल। अमैथिली भाषा-भाषी कविगण द्वारा जे विद्यापतिक राधा-कृष्ण सम्बन्धी काव्य रीतिक प्रभावमे आबि हुनक भाषा आ विषय-वस्तुक अनुसरण करैत पदक रचना कयल गेल, ओहि पदमे मैथिली शब्दक संग-संग ओहि क्षेत्रक भाषाक शब्द सेहो मिश्रित भऽ गेल, अतएव राधा-कृष्ण सम्बन्धी मिश्रित मैथिली ब्रजबुली (ब्रजावली) वा ब्रजबोली नामसं प्रसिद्ध भेल।

मैथिली एवं मगहीक सम्बन्ध

मैथिली सँ मगही बड़ निकट अछि। दुनूमे भाषागत साम्य बहुत अधिक अछि। एहि हेतु निम्नांकित तर्क देल जा सकैत अछि—

(१) उच्चारण—मैथिली ओ मगहीक उच्चारण 'वर्तुलाकार' अछि।

(२) मध्यमपुरुष आदरवाचक सर्वनाम 'अपने' केर प्रयोग दुनू भाषामे समानहि रूपसँ होइत अछि।

(३) मैथिलीक सहायक क्रिया 'छै' तथा 'अछि' क प्रयोग मगहीमे 'हइ' रूपमे होइत अछि।

(४) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा जकाँ दुनू भाषामे वर्त्तमान काल बनयबाक लेल सहायक क्रियामे वर्त्तमान कालिक कृदन्तक रूप संयुक्त करऽ पड़ैत अछि। यथा—मैथिली—देखैत अछि।

मगही—देखइत है।

(५) मैथिली ओ मगहीक क्रियापदक रूप-रचना बड़ जटिल अछि।

(६) व्याकरण—रचनाक दृष्टिसँ मैथिली ओ मगहीमे बहुत साम्य अछि।

(७) मैथिली ओ मगही एहन जातिक भाषा थिक जे रूढ़िवादिताक चरमोत्कर्ष पर पहुँचल अछि।

(८) मगही ओ मैथिली भाषाकेँ बजनिहार लोक परस्पर बहुत सम्बद्ध छथि।

उपर्युक्त तर्कक आधार पर मगही मैथिलीक साम्यकेँ सिद्ध करबाक लेल डा० ग्रियर्सन मगहीक संबंधमे निम्नलिखित तर्क देलनि अछि—

"मगहीकेँ एक स्वतंत्र भाषा मानबाक अपेक्षा आसानीसँ मैथिलीक एक उपबोलीक रूपमे वर्गीकृत कयल जा सकैत अछि।"

मैथिली, मगही ओ भोजपुरी बोलीकेँ डा० ग्रियर्सन बिहारी-वर्गमे रखने अछि आ पुनः ओकरा पूर्वी ओ पश्चिमी उपवर्गमे विभाजन कयलनि अछि, एहि लेल ओ निम्नलिखित तर्क देलनि अछि—

१. मैथिली, मगही ओ भोजपुरीमे बहुत अधिक साम्य दृष्टिगोचर होइत अछि। ऐतिहासिक, साजाजिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिसँ सेहो एकर पारस्परिक संबंध प्राचीन कालसँ सुदृढ़ रहल अछि। उत्पत्तिक दृष्टिसँ तीनूक संबंध एकहिटा 'मागधी'- प्राकृत एवं अपभ्रंशसँ अछि, अतः तीनूकेँ एकहिटा '[illegible]' [illegible] राखब उचित अछि।

२. भोजपुरीक क्षेत्र उत्तर प्रदेशमे सेहो पड़ैत अछि। ई आरम्भसँ अपन पश्चिमी पड़ोसिन भाषा 'अवधी' (अर्द्धमागधी प्राकृत अपभ्रंश प्रसूत) क प्रभावसँ प्रभावित रहल अछि। एहि हेतु, भोजपुरी पर पश्चिमी प्रभाव सेहो देखा पड़ैत अछि। मगही-मैथिलीक संग एहन बात नहि अछि। व्याकरणक दृष्टिसँ मगही-मैथिलीक पारस्परिक संबंध भोजपुरीक अपेक्षा अधिक अछि। अतः भोजपुरीकेँ पश्चिमी वर्गमे आ मगहीकेँ पूर्वी वर्गमे राखब उचित अछि।

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या अपन पुस्तक Origin and Development of Bangali Language" मे आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाक वर्गीकरण करैत मागधी-प्रसूत भाषा—मैथिली, मगही ओ भोजपुरीकेँ सर्वप्रथम 'प्राच्य' वर्गक अन्तर्गत रखलनि अछि। पुनः किछु समानता ओ विभिन्नताक आधार पर एहि तीनू भाषाकेँ दू वर्गमे विभाजित कयलनि अछि—

१. केन्द्रीय मागधी—मैथिली, मगही।

२. पश्चिमी मागधी—भोजपुरी (नगपुरिया वा सदानीक संग)।

प्राच्य—वर्गक तीनू बोलीकेँ दू उपवर्गमे विभाजनक आधारभूत मुख्य दृष्टिकोण निम्नलिखित अछि—

१. मैथिली ओ मगहीक व्याकरण-पद्धतिमे बहुत समानता अछि। ओकर, धातु-रूप बहुत समान अछि।

२. भोजपुरिया, मैथिली-मगहीसँ भिन्न भूमि पर अवस्थित अछि।

एहि प्रसंगमे डा० उदय नारायण तिवारीक कथन निम्नलिखित अछि—

१. डा० ग्रियर्सन 'बिहारी' वर्गमे जे मैथिली, मगही ओ भोजपुरीकेँ रखलनि अछि, ओ ठीक अछि, किएक तँ तीनू बोलीमे व्याकरण, शब्द-गठन वाक्य-योजना आदिक दृष्टिसँ बहुत साम्य अछि।

२. तीनू बोली मागधी-प्रसूत अछि। भोजपुरीकेँ मागधीक टाटसँ फराक करब ठीक नहि।

डा० जयकान्त मिश्र अपन पुस्तक "A History of Maithili Literature, Vol. I." मे मगहीकेँ एक स्वतंत्र भाषाक रूपमे स्वीकार नहि कयलनि अछि। ओ अपन पक्षमे निम्नलिखित तर्क देलनि अछि—

१. मगहीक ढाँचा (TEXTURE) मैथिलीक ढाँचासँ हू-ब-हू मिलैत अछि।

२. दुनूमे एहन क्रिया सभ अछि, जे अर्थबोधक दृष्टिसँ सर्वनामकेँ ओकर अभावमे अन्तर्भुक्त करैत चलैत अछि। उदाहरणार्थ - देखलिऔक —देखलथिन्ह - देखलथुन्हि ।

३. डा० ग्रियर्सनिक मतानुसार मगही व्याकरण ओ मैथिली व्याकरणमे निकटक साम्य अछि । दूटा भिन्न कयनिहार प्रमुख विशेषता अछि—दू कालक —व्यवहार—

[क] अनिश्चित वर्त्तमान—

मैथिली—देखइ छी ।

मगही—देखऽ ही ।

[ख] अनिश्चित भूत—

मैथिली—देखलहुन ।

मगही—देखहलुन ।

सहायक क्रियाक रूप मगहीमे 'ही' आ मैथिलीमे 'छी' अछि। मुदा विचार कयलासँ ई विभिन्नता विशेष महत्त्वक नहि बुझि पड़ैत अछि। कारण, बोलचालमे मैथिली 'छी' वा 'अछि' क उच्चारण 'अही' वा 'ही' भऽ सकैत अछि। ई एक स्वाभाविक ध्वन्यात्मक परिवर्त्तन-मात्र थिक। ओही तरहेँ मगहीक क्रियारूप—'देखहलुन' मैथिलीक 'देखलहुन'क अपढ़ लोक द्वारा विकृत कयल गेल रूप थिक। विशुद्ध मैथिली क्षेत्रमे सेहो ई विकृत रूप अपढ़ लोकक द्वारा प्रयुक्त होइत अछि। आ, मगहीक सम्बन्धमे डा० ग्रियर्सन सेहो कहने छथि—

"मैथिली ओ मगहीक मुख्य विभिन्नता यैह अछि जे मैथिली ओहि लोकक द्वारा सैयो वर्षसँ बाजल जाइत रहल अछि, जे अपन् विद्वताक लेल प्रसिद्ध रहल अछि, जखन कि मगही एहन लोकक भाषा रहल अछि, जे वैदिक कालसँ जंगली कहल जाइत रहलाह अछि।"

प्रो० कृष्णकान्त मिश्र सेहो डा० जयकान्त मिश्रक कथनसँ मिलैत-जुलैत विचार व्यक्त कयने छथि।

मैथिलो एव उड़िया

बंगला ओ असमिया जकाँ उड़िया सेहो मागधी अपभ्रंशसँ निःसृत भाषा थिक। उड़ीसा पर द्रविड़ लोकनिक आक्रमणक फलस्वरूप उड़ियाक सम्बन्ध अन्य मागधीमूलक भाषासँ टूटि गेल। तदनन्तर एहि पर पालि

ओ प्राकृतक प्रभाव पड़ल। आधुनिक उड़िया मागधी प्राकृतिसँ विकसित अछि। आठम शताब्दी धरि तैलंग राजाक आधिपत्यक अनन्तर पचास वर्ष धरि भौंसलेक शासन एतय छल। तेँ अन्य मागधीमूलक भाषा सदृश एकर विकास नहि भेल। एहि हेतु मैथिलीसँ एहि भाषाक पृथकता अधिक अछि। अथमपि कतेको अंशमे ई बंगलाक अपेक्षा मैथिलीसँ समीप बुझि पड़ैत अछि; यथा - बंगलामे असमान संयुक्त व्यंजन नहि 'म' पयम व्यंजन दूटा 'म' जाइछ, बंगलामे आत्माक उच्चारण 'आत्ता' होइछ, मुदा मैथिली ओ उड़िया दुनूमे दुनू व्यंजनक उच्चारण संस्कृत सदृश होइछ। बलाघातक दृष्टिसँ दीर्घस्वरक उच्चारण होइछ। जँ सभटा स्वर दीर्घ रहैत अछि तँ उपात्य पर बल पड़ैत अछि; मुदा मैथिलीक विपरीत उड़ियामे अति लघु स्वरक अभाव अछि। डा० सुभद्र झाक मत अछि—"किछु उच्चारणकेँ छोड़ि दुनू भाषाक प्रत्येक स्वर समान ढंगसँ उच्चरित होइछ। मैथिलीक ई समानता बंगला एवं असमियासँ अधिक उड़ियासँ अछि।"

मैथिली एवं भोजपुरीक-सम्बन्ध

अपन भाषा सर्वेक्षणमे डा० ग्रियर्सन एक नाम देलनि 'बिहारी'। एकरा अन्तर्गत मैथिली, मगही एवं भोजपुरीकेँ रखलनि। किन्तु भाषा वैज्ञानिक दृष्टिसँ भोजपुरी पश्चिमी परिवारक भाषा थिक-अर्ध मागधी परिवारक। एहि परिवारसँ अवधी, बहोल, छत्तीसगढ़ी एवं भोजपुरी विकसित भेल अछि। मुदा मैथिली मागधी प्राकृत कालक थिक। डा० ग्रियर्सनक अतिरिक्त डा० सुनीति कुमार चटर्जी सेहो भोजपुरी पर अवधी, ब्रज-भाषा आदि पश्चिमी क्षेत्रक भाषाक साहित्यिक परम्पराक प्रभाव स्वीकार कयलनि अछि। भोजपुरीक क्षेत्र बिहारसँ अधिक उत्तरप्रदेशमे अछि।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ भोजपुरी उत्तर प्रदेशक भाषासँ निकट अछि, मैथिलीसँ नहि। भोजपुरीक उच्चारण एवं मैथिलीक उच्चारणमे पूर्ण भिन्नता अछि। ओहिमे दीर्घ उच्चारण अधिक अछि, मैथिलीमे ह्रस्व उच्चारणक अधिकता अछि। दुनूक बहुवचनक रूपमे तथा नामरूपावलीमे भिन्नता अछि।

ध्वनि-भिन्नता—'म' ध्वनि भोजपुरीमे रैखिक किन्तु मैथिलीमे गोल।

शब्द रूपावलीक अतिरिक्त धातु रूपावलीमे सेहो भिन्नता अछि।

८. बंगला मे मूर्धन्य 'ण' समाप्त भऽ गेल अछि। मैथिली मे सेहो 'ण' केर स्थान मे अधिकठाम 'न' मात्र होइछ। परन्तु किछु स्थान मे 'ण' अथवा 'ड़' केर रूप सुरक्षित अछि।

९. बंगला मे शब्दक आदि मे 'य' एवं 'व' श्रुत होयत। यथा—एहु-इएह, ओह-वएह। ग्रियर्सन एहि दुनू मे सेहो 'य' एवं 'व' केर श्रुति नहि मानैत छथि।

१०. मागधीक 'ल' बंगला मे सुरक्षित रहल, परन्तु अधिकटाम 'र' अथवा 'उ' मे परिणत भऽ गेल।

११. बंगला मे स्वाराघात प्रथम वर्ण पर पड़ैत छैक, किन्तु मैथिली मे स्वराघात शब्दक विभिन्न वर्ण पर पड़ैत छैक। उच्चारण शैली ने बंगला ओ मैथिली मे समता अछि।

१२. मैथिली ओ बंगला दुनू मे वचन बोध दुर्लभ अछि, मुदा बंगला मे किछु ठाम प्रत्यय द्वारा बहुवचन केर बोध होइत छैक। यथा—'आमी' एकवचन ओ 'अमार' बहुवचन।

भोजपुरी मे सेहो एहन ठाम बहुवचन बोध होइछ; यथा—हमनी। परन्तु मैथिली मे बहुवचन बोधक शब्द जोड़ि बहुवचन केर अर्थ प्रकट कयल जाइछ। यथा—हम सभ, हमरा लोकनि।

नाम शब्दक कारक रूपावली मैथिलीक अपेक्षा बंगला ओ असमियाँ अधिक संश्लेषणात्मक अछि। मैथिली ओ बंगला सहित सभ मागधी भाषा अन्य पुरुषक सम्बन्ध वाची एवं प्रश्नवाची सर्वनाम एकारान्त होइछ, परन्तु मागधी सँ भिन्न भाषा परिवार सभ मे ओकारान्त होइछ।

१३. बंगलाक क्रियापद सरल छैक, परन्तु मैथिलीक क्रियापद जटिल। मैथिलीक क्रियापद पद पर आदर, निरादर, सर्वनामक—पुरुष, कर्त्ता, कर्म सम्बन्ध एवं अन्य कारकक प्रभाव एकहि संग पड़ैत अछि।

१५. मैथिली ओ बंगला ने सर्वनामक प्रयोग जे 'स' प्रभावित अछि।

एहि प्रकारें देखैत छी जे मैथिली एवं बंगला एकहि अपभ्रंश सँ विकसित होइतहुँ एक दोसरा सँ पृथक अछि, स्वतन्त्र अछि। दुनू कें सहोदरा कहि सकैत छी।

मैथिली एवं हिंदी

मैथिली ओ हिन्दी मे आधारभूत भिन्नता निम्नलिखित अछि—

[क] मैथिली मागधी (प्राकृत-अपभ्रंश) सँ विकसित भेल अछि, मुदा हिन्दी शोरसेनी (प्राकृत-अपभ्रंश)।

[ख] मैथिलीक अपन स्वतन्त्र लिपि अछि मिथिलाक्षर, मुदा हिन्दी संस्कृतक देवनागरी लिपि कें ग्रहण कयलक।

[ग] भाषा-विकासक दुनूक सांस्कृतिक आधार भिन्न अछि।

[घ] मैथिली एवं हिन्दीक व्याकरण मे भिन्नता अछि।

[च] शब्दावलीक अतिरिक्त ध्वनिक भिन्नता विद्यमान अछि।

एहि तरहें हम देखैत छी जे हिन्दी ओ मैथिली एक दोसरासँ पृथक अछि।

———

व्याकरण

प्रत्येक भाषाक शब्द ओ रचना-पद्धतिमे अन्तर अछि। अतएव व्याकरणक कोटिक एक गोट रंग-रूप सभ भाषाक लेल लागू नहि होइत अछि। जाहि तरहें एक व्यक्तिक अंगा दोसर व्यक्तिक देहमे नहि होइत अछि वा ठीक नहि लगैत अछि तहिना एक भाषाक कोटि दोसर भाषामे घटित नहि होइत अछि। व्याकरणिक कोटिक उद्देश्य भाषामे अभिव्यंजना-सम्बन्धी सूक्ष्मता ओ निश्चयात्मकता आनब थिक। एहीक लेल विभिन्न उपाय कारक, समास, क्रिया, सर्वनाम आदिक प्रयोग होइत अछि। एहि हेतु संक्षेपमे एकर वर्णन कऽ देब अपन धर्म बुझैत छी।

कारक

कारक शब्द कृ धातुसँ निष्पन्न अछि जकर अर्थ होइत अछि करऽवला व्याकरणमे क्रियाक निष्पादक कारक कहबैत अछि। अन्य व्याकरणिक कोटिक समानहि कारक-सम्बन्धी धारणा एक रंगक नहि अछि। कारकक संख्या दू सँ लऽ कऽ तेइस धरि पाओल जाइत अछि। अंग्रेजीमे मात्र दूटा कारक अछि तँ जाॅर्जमि तेइस। अन्य भाषाक कारक-संख्या एही दू गोट सीमाक बीच अछि, यथा—लातिन ओ जर्मनमे पाँच, प्राचीन स्लाविकमे छः, संस्कृत, ग्रीक, लिथुआनीमे सात आ हिन्दीमे आठ कारक अछि। मैथिलीक कारक, विभक्ति ओ चिह्नकें एहि रूपमे सारणीबद्ध कऽ सकैत छी—

कारक	प्रामै	उदाहरण	नमै	उदाहरण
कर्त्ता	१. ए	घरे	१.——	—
	२. ०	घर	२. ०	घर

कारक	प्रामै	उदाहरण	नमै	उदाहरण
कर्म	१. ०	घर	१. ०	घर
	२. —	—	२. केँ	घर केँ
	३. हि	घरहि	३. —	——
करण	१. ए	हाथे	१. ए	हाथे
	२. एँ	हाथेँ	२. एँ	हाथेँ
	३. सञो	हाथ सञो	३. सँ	हाथ सँ
सम्प्रदान	१. ०	घर	१. ०	घर
	२. हि	घरहि	२. —	——
	३. कँ	घर कँ	३. कँ	घर कँ
अपादान	१. सञो	घर सञो	१. सँ	घर सँ
	२. चाहि	घर चाहि	२. ——	——
	३. तह	घर तह	३. ——	——
सम्बन्ध	१. क	घरक	१. क	घरक
	२. कि	घर के	२. ——	——
	३. केरि	घर केरि	३. केर	घर केर
	४. एरि	घरेरि	४. ——	——
अधिकरण	१. ए	घरे	१. ——	——
	२. ——	——	२. मे	घर मे
	३. त	घरत	३. ——	——

क्रिया

अन्य कोटिक भाँति क्रियाक कोटि सेहो भाषा मे एक समान नहि अछि। मैथिली मे एहि विषयक विवेच्य सामग्री वर्गीकरणपूर्वक नीचा देल जाइत

(क) (१) प्राचीन वर्त्तमान

पुरुष	एकवचन		बहुवचन	
	प्रत्यय	क्रियापद	प्रत्यय	क्रियापद
उत्तम पुरुष	ॅई	चली	ॅओ	चलओ
मध्यम पुरुष	ॅहि	चलहिँ	ॅह	चलह
अन्य पुरुष	ॅए	चलए	ॅथि	चलथि

(२) नवीन वर्त्तमान

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	चलइत छी	चलइत छों
मध्यम पुरुष	चलइत छहिँ, छेँ	चलइत छह
अन्य पुरुष	चलइत अछि	चलइत छथि

भूतकालिक क्रियापद

१. मानक मैथिली मे

भूतकालिक क्रियापद केँ निम्न सारणी मे देखाओल गेल अछि—

पुरुष	एकवचन		बहुवचन	
	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक
उत्तम पुरुष	देखली	चलली	देखलहुँ	चललहुँ
मध्यम पुरुष	देखले	चलले	देखलह	चललह
अन्य पुरुष	देखलक	चलल	देखलन्हि	चललाह

(ख) भविष्यतकालिक क्रियापद

मामँ मे भविष्यतकालिक क्रियापद मे निम्नलित रूप प्रचलित अछि—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	— —	चलब, चलबों
मध्यम पुरुष	चलबें	चलबह
अन्य पुरुष	चलत	चलताह

(घ) अज्ञार्थक क्रियापद

आज्ञार्थक क्रियापद शुद्ध प्राभा क्रियापद सँ विकसित भेल अछि, कृदंत सँ नहि। एकर निम्नलिखित रूप मामँ० मे प्रचलित अछि—

पुरुष	निम्न कक्षा	उच्च कक्षा
उत्तम पुरुष	———	चलू
मध्यम पुरुष	चल, चलहि	चलह,, चलहु
अन्य पुरुष	चलओ	चलथु

(च) हेतुमत् क्रियापद

जखन ई सूचित करबाक रहैत अछि जे एक क्रियाक निष्पत्ति कोनो दोसर क्रियाक निष्पति पर आश्रित अछि, तखन एक खास लकारक प्रयोग होइत अछि जे हेतुमत् (Conditional) लकार कहबैत अछि। एकर रूपावली निम्नलिखित अछि—

पुरुष	निम्न कक्षा	उच्च कक्षा
उत्तम पुरुष	— —	चलितहुँ
मध्यम पुरुष	चलितें	चलितह
अन्य पुरुष	चलैत, चलितए	चलितथि

समास

प्राभा-काल मे दू पदवाला समास चलैत छल, कदाचितहि तीन पदवाला। पछाति संस्कृत-साहित्य मे सय-सय पदवाला समास प्रचलित भऽ गेल। यैह कारण भेल जे मैथिली मे समासक प्रयोग बड़ कम होइत अछि।

अर्थानुसार मैथिली समास तीन वर्ग मे विभाजित अछि – (१) तत्पुरुष अर्थात् संज्ञा ओ संज्ञाक समास, (२) कर्मधारय अर्थात् विशेषण ओ संज्ञाक; तथा (३) बहुव्रीहि अर्थात् अन्य पदार्थ प्रधान समास। किछु प्रचलित उदाहरण निम्नलिखित अछि—

तत्पुरुष —

तमघैल (ताम + घैल) तामक घैल,
पनिबट (पानी + बाट) पानिक बाट,
हथजोर (हाथ + जोर) हाथ सँ बाँटल डोरी,
मोटबन्हना (मोटा + बन्हना) गठरी बाँधऽवला वस्त्र,
पनबट्टी (पान + बाटी) पानक कटोरा।

कर्मधारय —

अनधना (आन + धान) मिश्रित धान,
चौबट्टी (चारि + बाट) चौराहा,
गुहचोरा (गुह्य + चोर) छोट चोर,
भलमानुस (भला + मानुस) नीक लोक।

बहुव्रीहि—

कुचालि (कु + चालि) अधलाह चालिवला,
ललमूहा (लाल + मूह) लाल मुँहवला,
कनकट्टा (कान + कटल) कान कटल अछि जकर।

सर्वनाम

भाषा मे सर्वनामक स्थान बड़ महत्त्वपूर्ण होइत अछि। सर्वनाम-जगत् मे अन्य कुलक भाषाक संग आदान-प्रदान नहि होइत अछि। एहि हेतु सर्वनामक आधार पर भाषाक कुल-निर्धारण मे सुविधा होइत अछि। मैथिली मे एहि विषयक विवेच्य सामग्री निम्नलिखित अछि—

प्रकार	कर्तृ-कारक	तिर्यक् कारक	सम्बन्ध कारक
उत्तम पुरुष	हम, मञे हमें,, मोञे	हमरा, मोहि	हमर, मोर
मध्यम पुरुष	तों, तोहें	तोहरा, तोरा, तोहि	तोहर, तोर
अन्य पुरुष	से	तनिका, तनि, ताहि, तकरा	तनिक, तकर, तनिकर
निकट निर्देक	ई	हिनका, हिनी, एहि, एकरा	हिनक, एकर, हिनकर
दूर निर्देशक	ओ, हुनि	हुनका, हुनि, ओहि, ओकर	हुनक, हुनकर, ओकर
सम्बन्ध वाचक	जे	जनिका, जकरा, जाहि	जनिक, जनिकार, जकर
प्रश्न वाचक	के, की, कथी	कनिका, ककरा, कहि, कोन	कनिक, कथीक, कनिकर, ककर

सर्वनामक रुपावली

(क) उत्तम पुरुष सर्वनामक सभ प्राचीन ओ मानक रूप निम्नलिखित सारणी मे दर्शाओल गेल अछि—

प्रकृतिक प्रकार	कारक	एकवचन	बहुवचन	नवीन बहुवचन
सरल	कर्ता	मएँ / मोएँ	हम / हमे	हमरा लोकनि
तिर्यक्	कर्म	मोहि	हमरा	हमरा लोकनि कें
,,	करण	——	हमरें	— —
,,	,,	मोहि सँ	हमरा सँ	हमरा लोकनि सँ

प्राकृतिक प्रकार	कारक	एकवचन	बहुवचन	नवीन बहुवचन
तिर्यक्	संप्रदान	मोहि	हमरा	हमरा लोकनि कें
,,	अपादान	मोहि सञो	हमरा सँ	हमरा लोकनि सँ
,,	अधिकरण	मोहि मे	हमरा मे	हमरा लोकनि मे
संबंधीय (सरल)	संबंध	मोर	हमर	हमरा लोकनिक
संबंधीय (तिर्यक)	,,	मोरा	मोरा	हमरा लोकनिक

(ख) मध्यम पुरुष सर्वनाम - एहि सर्वनामक रूपावली उत्तम पुरुष सर्वनामहि जकाँ अछि, मात्र प्रयोग मे किछु अन्तर अछि। रूपावलो निम्नलिखित अछि—

मध्यम पुरुष

प्रकृति	कारक	एकवचन	बहुवचन	नवीन बहुवचन	
				अधःकक्ष	समकक्ष
सरल	कर्ता	तू, तूँ, तों	तोहें तों	तोरा लोकनि	तोहरा लोकनि
तिर्यक्	कर्म	तोरा, तोहि	तोरा, तोहि	तोरा लोकनि कें	तोहरालोकनिकें
,,	करण	तोरें, तोहिसँ	तोहरें, तोहि सँ	तोरा लोकनि सँ	तोहरा लोकनि सँ
,,	संप्रदान	तोरा, तोहि	तोहरा, तोहि	तोरा लोकनि कें	तोहरा लोकनि कें
,,	अपादाय	तोरा सँ, तोहि सँ	तोहरा सँ, तोहि सँ	तोरा लोकनि सँ	तोहरा लोकनि सँ
,,	अधिकरण	तोरा मे, तोहि मे	तोहरा मे, तोहि मे	तोरा लोकनि मे	तोहरा लोकनि मे
संबंधीय	संबंध	तोर	तोहर	तोरा लोकनिक	तोहरा लोकनिक
संबंधीय	,,	तोरा	तोहरा		

(ग) अन्यपुरुष सर्वनाम —परम्परानुरागामी वैयाकरणक अनुसार अन्य-पुरुष सर्वनाम मात्र से (सो) कहबैत अछि। किछु विद्वान निकट-निर्देशक ई तथा दूर-निर्देशक ओ कें सेहो अन्यपुरुष सर्वनाम मानैत छथि। मैथिली मे से तथा ओ केर बीच जे अभेद जकां व्यवहार अछि ओकरा देखैत एहि दुनू कें फराक राखब उचित नहि होयत। सभ रूप निम्नलिखित सारणी मे देखाओल जाइत अछि—

सरल	तिर्यक्			सम्बन्धीय	
	अनादर-नीय	आदरणीय	अप्राणि वाचक	अनादर-नीय	आदरणीय
१	२	३	४	५	६
से	तकरा	तनिका	ताहि	तकर	तनिक तनिकर
जे	जकरा	जनिका	जाहि	जकर	जनिक जनिकर
के	ककरा	कनिका	काहि, कोन	ककर	कनिक कनिकर
ई	एकरा	हिनका	एहि	एकर	हिनक हिनकर
ओ	ओकरा	हुनका	ओहि	ओजर	हुनक, हुनकर

□

मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास

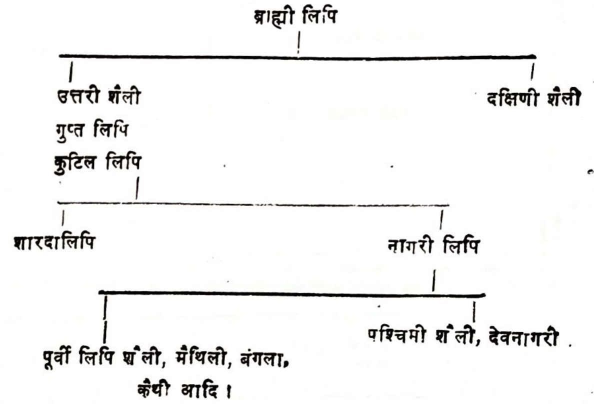
भारतमे प्राचीन समयमे दू गोट लिपि प्रचलित छल—ब्राह्मी ओ खरोष्ठी।

ब्राह्मीलिपिसँ मैथिलिक उद्भव ओ विकास भेल अछि। भारतमे लिपिक प्राचीनतम प्रमाण पाँचम शताब्दी ई० पू० क भेटैत अछि। ओहि समयमे एहिठामक लिपि ब्राह्मी छल। एहि आधार पर ई कहल जा सकैत अछि जे [illegible] ब्राह्मी लिपि प्रथम प्रचलित छल। ३५० ई० पश्चात् एतय

दू गोट लिपिक दू गोट शैली दृष्टिगोचर होइत अछि—(१) उत्तर शैली एवं (२) दक्षिणी शैली। उत्तरी शैलीक प्रचार उत्तर भारतमे छल तथा दक्षिणी शैलीक प्रचार दक्षिण भारतमे। एहि दुनू शैलीसँ भारतक लिपिक विकास भेल।

उत्तरी शैलीक विकास गुप्तलिपि ओ कुटिल लिपिसँ भेल। एहिमे विकसित लिपि अछि—शारदा एवं नागरी वा देवनागरी लिपि।

प्राचीन नागरी लिपि—एकर प्रचार मुख्य रूपसँ उत्तरी भारतमे नवम शताब्दीक अंतिम चरणमे उपलब्ध होइत अछि। एहि नागरिक पश्चिमी रूपसँ आधुनिक कालीन नवनागरी वा नागरी, राजस्थानी, महाराष्ट्री, गुजराती एवं महाजनी आदि लिपि विकसित भेल। पूर्वी लिपि रूपसँ मैथिली कैथी ओ बंगला आदि विकसित भेल। मैथिलीक विकास रेखाचित्र निम्न-लिखित अछि—



मैथिली लिपिक प्राचीनतम उल्लेख ललित-विस्तर नामक बौद्ध ग्रंथमे पाओल जाइत अछि, जतय ई वैदेही लिपि कहल गेल अछि। १२३४ ई० मे भारत-भ्रमण कयनिहार तिब्बती यात्री धर्मस्वामी एहिठामक लिपिक चर्चा करैत ओकर नाम वैदं लिपि कहलनि अछि। एहिसँ पूर्व विक्रमाकदेवचरित नामक ग्रंथमे कुटिलाक्षर ओ कुटिल लिपिक चर्चा अछि। सम्प्रति एकर प्रचलित नाम तिरहुता अछि। गुदा पढ़ल-लिखल लोकमे मिथिलाक्षर वा मैथिली लिपि कहबैत अछि।

म० म० हर प्रसाद शास्त्री 'हाजार बछरेर पुरातन बौद्ध गान ओ दोहा' जाहि ताल पत्रक आधार पर प्रकाशित कयलनि अछि, एकर प्राचीनतम अभिलेख वैह थिक। राहुल सांकृत्यायन कुरुकुल्लासाधन नामक एक ग्रंथ तिब्बतमे प्राप्त कयने छलाह। ओ एकर लिपिकें प्राचीनतम तिरहुता बतओलनि अछि। राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर कायस्थक अंधराठाढ़ी शिलालेख [१०९७ ई०] मे प्रायः सर्वप्रथम शुद्ध मिथिलाक्षरक दर्शन होइत अछि। तदन्तर नान्यदेवक बालक मलदेवक राजधानी भीठ भगवानपुरक लक्ष्मीनारायणक मूर्तिक नीचा शिलालेख मिथिलाक्षरमे अछि। एकर अतिरिक्त पनिचोभ ताम्रपत्र, आशी-शिलालेख, तिलकेश्वर गढ़ अभिलेख, खोजपुर अभिलेख, भागीरथपुर शिलालेख आदि मे मिथिलाक्षरक क्रमिक विकासक दर्शन होइत अछि। विद्यापतिक हाथसँ लिखल भागवतक प्रतिलिपि कामेश्वर सिंह, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगामे सुरक्षित अछि। १४१८ ई० मे मिथिलाक्षरमे कविवर विद्यापति ठाकुर लिखने छलाह। एकर बादक मिथिलाक्षरक हस्तलेख प्रचुर मात्रामे उपलब्ध अछि।

मैथिली लिपिक वर्ण विन्यासक नियम 'कामधेनुतंत्र' ओ 'वर्णोद्धातंत्र' मे प्रकाशित अछि। एकर प्रचार बङ्गाल ओ असाम धरि अछि।

मैथिली लिपिमे देवनागरी लिपिक अपेक्षा अनेक विशेषता छैक। ई अधिक शीघ्रतासँ लिखल जा सकैत अछि। एहि द्वारा प्रायः यावतो ध्वनिक संकेत भऽ सकैत अछि। एहि कारणे मिथिलाक्षरक एतेक प्रसार भेल। एहि लिपिक एक अन्य विशेषता ई अछि जे एहिमे जे किछु लिखल जाइत अछि ओकर वैह उच्चारण सेहो होइत अछि। संसारक आन-आन भाषाक संग ई बात नहि घटित होइत अछि। जेना अंग्रेजीक Walk, Talk, School, Docotor आदि शब्दमे हम देखैत छी जे अक्षर कोनो अछि तथा उच्चारण किछु आरो होइत अछि। मुदा मैथिलीक संग एहन बात घटित नहि होइत अछि।

एहि लिपिमे जतय स्वर ओ व्यंजन ध्वनिक सैद्धांतिक संकेत विद्यमान अछि ओतय ध्वनिक आधार पर स्वर ओ व्यंजनक वर्गीकरण होइत अछि। अतः एहिमे स्वर ओ व्यंजनक वर्गमाला अलग-अलग अछि। एतबहि नहि अपितु उच्चारण अवयव, बाह्य प्रयत्न ओ अभ्यान्तर प्रयत्नक आधार पर जे वर्गीकरण होइत अछि ओकरे प्रतीक रूप स्वर ओ व्यंजन वर्ण अछि। यथा—'अ', 'ई', 'आ', 'ओ', आदि उच्चारणक मेल जेहन मुखाकृति बनैत

अछि ओहि सँ मिलैत-जुलैत वर्ण सेहो बनैत अछि। 'अ' क उच्चारणमे आधा मुँह खुजैत अछि तथा जीभ मध्यमे रहैत अछि, 'आ' क मात्रा पूरा मुँह खुलबाक प्रतीत अछि तँ 'उ' मुँह बन्द होयबाक स्वरूप।

मिथिलाक्षरमे प्रायः ४५ मूल लिपि चिह्न अछि। स्वरक मात्रा चिह्न एवं अंकक चिह्न एहिसँ भिन्न अछि। किछु नव चिह्नक निर्माण सेहो भेल अछि। मिथिलाक्षर ह्रस्व 'अ' ध्वनि सेहो भेटैत अछि। अर्थात् ई वर्णमाला अक्षर प्रधान अछि, ध्वनि प्रधान नहि।

उच्चारण—स्थानक अनुरूप व्यंजनकें पाँच वर्णमे बाँटल जा सकैछ-कंठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य ओ ओठ्य। अन्तस्थ एवं उष्म ध्वनि सेहो पृथक अछि। अनुनासिक ध्वनिक विशेष विवरण अछि। शब्दक संग अएला पर ध्वनिमे अन्तर भऽ जाइत अछि। अतएव प्रत्येक वर्णक संग अपन-अपन अनुनासिक अछि। ई समस्त रचना ध्वनिक सिद्धांत पर आधारित अछि। जाहि प्रकारक ध्वनि अछि, ओहि प्रकारक वर्ण लिखल जाइत अछि। एक ध्वनिक हेतु एकहि अक्षरक प्रयोग होइत अछि। अंग्रेजी C तथा K दुनूक ध्वनिक हेतु प्रयुक्त होइत अछि – मैथिलाक्षरमे एहि प्रकारक व्यवस्था नहि अछि।

मात्राक दृष्टिसँ मिथिलाक्षर पूर्ण अछि।

मिथिलाक्षरमे ह्रस्व ओ दीर्घ मात्रामे स्पष्ट भेद अछि। मैथिलीमे मात्राक स्थान अवश्य घेरैत अछि, मुदा एहिसँ उच्चारणमे कोनो प्रकारक भ्रम वा आशंकाक कोनो स्थान नहि रहैत अछि। वर्णक संख्या सेहो अधिक अछि। मात्राक संकेतक कारणे सेहो वर्णमालाक संख्या अधिक भऽ गेल अछि। अतएव आरम्भमे वर्णमाला सिखबामे किछु दिक्कत तँ अवश्य होइछ, मुदा आगाँ ध्वनिक अनुरूप अक्षर लिखबामे आसान होइत अछि।

प्राचीन ताम्रलिपि वा शिलालेख मिथिलाक्षरमे प्राप्त अछि। सम्प्रति मिथिलाक्षरक स्थान पर देवनागरी लिपिक प्रयोग होबऽ लागल अछि।

ध्वनि विज्ञान

ध्वनि थिक भाषाक भौतिक आधार (ओ ओकरासँ बहरायल अर्थ मानसिक आधार)। Phonetics एवं Phonology ई दू शब्द सम्प्रति ध्वनिक अध्ययनसँ सम्बद्ध शास्त्र अथवा विज्ञानक हेतु प्रचलित अछि। एहि शब्दक उत्पत्ति अछि Greek-Phone [ध्वनि] + Tics एवं Logus + Logy = विज्ञान शास्त्र ।

Phonetics मे सामान्य रूपें ध्वनिक परिभाषा, भाषा--ध्वनि, ध्वनिकें उत्पन्न कयनिहार अङ्ग, ध्वनिक वर्गीकरण एवं ओकर स्वरूप, ध्वनिक लहरिक एक व्यक्तिक मुँहसँ चलि दोसराक कान धरि पहुँचब ओ श्रवण कयल जायब एवं ओकर विकार आदि पर विचार कयल जाइछ। ई वस्तुतः ध्वनिक अध्ययनक सामान्य विज्ञान थिक जे प्रायः सभ भाषासँ अपना अध्ययनक हेतु सामग्री ग्रहण करैत अछि। एकर विपरीत Phonology कोनो एक भाषा विशेषसँ सम्बद्ध अछि। फोनेटिक्स मात्र सैद्धान्तिक ओ सार्वभाषिक अछि मुदा फोनोलॉजी ओकर व्यावहारिक रूप अछि। फोनोलॉजी ध्वनिक विकास पर विचार करैत अछि। अतः ई केवल वर्णनात्मक अथवा विश्लेषणात्मके नहि प्रत्युत् ऐतिहासिक सेहो अछि। मुदा बहुतो विज्ञान एककें दोसरक पर्याय मानैत छथि।

भाषाविज्ञानक अन्य शाखा जकाँ ध्वनि-विज्ञान सेहो वर्णनात्मक, ऐतिहासिक ओ तुलनात्मक भऽ सकैछ। ई कहल जा सकैछ जे भाषा ध्वनिक सर्वांगीण अध्ययनमे ध्वनि-विज्ञान थिक। ध्वनि-विज्ञानक प्रमुख विवेच्य विषय निम्नलिखित अछि —

(१) शारीरिक ध्वनि-विज्ञान (Physiological Phonetics)

(२) ध्वनि ओ भाषा-ध्वनि (Sound & Speech Sound),

(३) सङ्क्रम, (निवृत्ति) (Juncture);

(४) अक्षर (Syllable),

(५) श्रवणात्मक अथवा श्रावणिक ध्वनि-विज्ञान (Acouetics or Acoustic Phonetics),

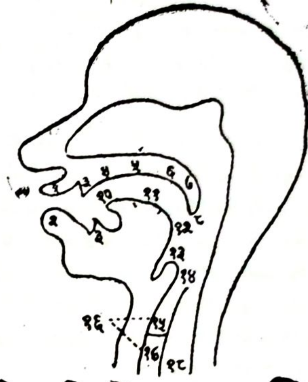
(६) प्रायोगिक ध्वनि-विज्ञान [Experimental Phonetics],

[७] ऐतिहासिक ध्वनि-विज्ञान [Diachronic Phonetics],

[८] ध्वनिग्राम-विज्ञान [Phonemics],

(९) ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन (Phonetic Transcription)।

वाग्-यन्त्र



१ नासिकाविवर — १० जिह्वाग्र

२ ओष्ठ — ११ जिह्वामध्य

३ दंत — १२ जिह्वापश्च

४ वर्त्स — १३ कंठच्छद

५ मूर्धा — १४ ग्रसनिका

६ कठोरतालु — १५ स्वरतंत्री

७ कोमलतालु — १६ स्वरयंत्र

८ अलिजिह्वा (काकल) — १६ श्वासनली

९ जिह्वाणि — १८ (गलेट) ग्रासनली

ध्वनि-विज्ञानक एहि विभागमे उच्चारणमे सहायक अवयव ओ ओकर कार्यक विवरण प्रस्तुत कयल जाइछ। संगति ध्वनि सुनबामे जे अङ्ग सहायक सिद्ध होइछ ताहू पर विचार कयल जाइछ।

जाहि अंग अथवा अवयवसँ भाषा,ध्वनिक उच्चारण कयल जाइछ तकरा ध्वनि-यंत्र अथवा उच्चारण अवयव, वाग्-यन्त्र कहल जाइछ।

मनुष्य जाधरि जीवित रहैत छथि ताधरि श्वान-निःश्वासक क्रिया निरन्तर चलैत रहैत अछि। निःश्वासहिसँ ध्वनिक उत्पत्ति होइत अछि। हारमोनियम, बिगुल, बाँसुरि आदि जकाँ हवाक सहायतासँ हमरा लोकनि बजैत छी। फेफड़ाकेँ साफ कयलाक पश्चात् वायु-श्वास रूपेँ श्वास नालिकाक पथसँ बाहर होइछ। स्वरयन्त्रक स्पर्शसँ पूर्व एहिमे कोनो विकार (ध्वनि आदि) नहि होइछ। सर्वप्रथम हमरा लोकनि स्वरतन्त्रीक सहायतासँ एकरा मनमाना (स्वेच्छानुसार) रूप दैत छी। ओतयसँ आगाँ चलि आवश्यकतानुसार नासिका-विवर, मुख-विवर, अथवा दुनूसँ थोड़ेक-थोड़ेक बाहर करैत छी। एहि कार्यमे कौवा सहायता करैछ। ओतयसँ मुख-विवर मे गेनिहार वायुकेँ हम आवश्यकतानुसार जिह्वा, कंठ, तालु, दंत, ओष्ठक सहायतासँ इच्छित रूप दऽ बाहर निकालैत छी, यैह बाहर आबि ध्वनिक संज्ञा पबैछ। संगहि आवश्यकता पड़ला पर एकरा सानुनासिक बनैबाक लेल नासिका विवरसँ बहार करैत छी।

कोना ग्रहण करैत छी? एकर उत्तर यैह अछि जे फेफड़ासँ चलल हवा ध्वनियंत्रक आन्दोलनक कारणे आन्दोलित भऽ बहार निकलैछ ओ बहारक वायुकेँ अपन आन्दोलनक अनुसार विशिष्ट प्रकारक कम्पनसँ लहरि उत्पन्न करैछ। यैह लहरि श्रोताक श्रवणेन्द्रिय धरि पहुँचि ओहिमे कम्पन्न करैछ। जेना-जेना आगाँ बढ़ैछ एकर तीव्रता घटल जाइछ, अतः दूरक ध्वनि लोक नहि सुनि सकैछ।

ध्वनि ओ भाषा-ध्वनि

कोनो वस्तुसँ जे एहन किछु बहराय जे सुनल जा सकय तकरा सामान्यतया ध्वनि कहल जाइछ। जल मे ढेप फेकला सँ, माछक कुदला सँ अथवा कोनो धातुक टकरएला सँ जे आवाज उत्पन्न होइछ तकरा ध्वनि कहबैक। एहि ध्वनिक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि। ई ध्वनि चेतन ओ अचेतन दुनू द्वारा कोनो रूपेँ उत्पन्न भऽ सकैछ। मुदा भाषाक प्रसङ्गे अथवा भाषा विज्ञानक मध्य जाहि ध्वनिक हमरा लोकनि चर्चा करब तकर क्षेत्र एतेक व्यापक नहि अछि, अतः ओकरा ध्वनि सँ पृथक करबाक उद्देश्य सँ भाषा-ध्वनि (Phone) अथवा भाषण-ध्वनिक (Speech sound) संज्ञा सँ अभिहित कयल गेल अछि। एकर पूर्ण परिभाषा देब कठिन अछि, मुदा कामचलाउ परिभाषा एहि प्रकारेँ देल जा सकैछ।

भाषाध्वनि भाषा मे प्रयुक्त ध्वनिक ओ लघुतम इकाइ थिक जकर उच्चारण ओ श्रोतव्यताक दृष्टि सँ स्वतंत्र इकाइ हो। भाषा-ध्वनि ओ सीमित ध्वनि थिक जकर प्रयोग भाषा मे होइछ।

शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि सँ जँ देखल जाय तँ क्यो व्यक्ति एकहि ध्वनि केँ दू अथवा एहि सँ बेसी बेर ठीक एकहि ढंग सँ उच्चरित नहि कऽ सकैछ। दोसर उदाहरण एक ध्वनि 'म' क लऽ सकैत छी (मदन मोहन हमरा मामक गामक माध्यमिक विद्यालय मे शिक्षक छथि) एवं क्रमे ध्वनिक भिन्नताक विचारेँ म[1] म[2] म[3] आदि भऽ सकैछ। कोनो भाषा मे कोनो ध्वनिक ई विभिन्न रूप संध्वनि (Allophone) कहबैछ।

स्वरक उच्चारण मे कखनहु जीहक अग्र भाग, कखनहु मध्य ओ कखनहु पश्च भाग अछि। एकरा अनुसारेँ– अग्र-स्वर – ए, इ, ऐ—मध्यस्वर—अ, पश्चस्वर—आ, ऊ, ओ।

पुनः व्यंजनक आठ भेद अछि—स्पर्श, स्पर्शसंघर्षी, संघर्षी, अनुनासिक, पार्श्विक, लुंठित, उत्क्षिप्त एवं अर्द्धस्वर।

स्पर्श व्यंजन—जखन मुख द्वार केँ बन्द कऽ केँ खोलइत छी, जाहि सँ हवा उच्चारण स्थान केँ स्पर्श मात्र करैछ—क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध प फ ब भ।

स्पर्श-संघर्षी – जखन मुख द्वार केँ बन्द कऽ एहि प्रकारेँ बाजल जाइछ जे हवा किछु स्थान केँ स्पर्श मात्र करैछ—च, छ, ज, झ।

संघर्षी—जखन मुख द्वार एतेक संकीर्ण भऽ जाइछ जे हवा केँ रगड़ लगैछ ओ ध्वनि बहराइछ—फ, व. स, ज, श, ख, ग, ह।

अनुनासिक—जखन मुखद्वार केँ बन्द कऽ खोलल जाइछ ओ संगहि नासिका बिवर सेहो खुलल रहैछ—ङ्, ञ्, ण्, म्।

पार्श्विक – जखन मुखद्वार बन्द रहैछ ओ हवा दुनू बगल सँ बहरा जाइछ—ल्।

लुंठित—जखन मुखद्वार जीहक नोक सँ बहुत जल्दी-जल्दी बन्द होइछ ओ दू-तीन बेर खुजैछ—र।

उत्क्षिप्त—जखन जीहक नोक उनटि कऽ तालु केँ किछु दूर धरि स्पर्श कऽ मुख द्वार केँ झटका सँ खोलि दैछ—ड़ ढ़।

अर्द्ध-स्वर—जकरा बजबा मे मुखद्वार अत्यन्त संकीर्ण भऽ जाइछ तथापि हवा स्वर जकाँ बीचक स्थान सँ बाहर भऽ जाइछ, मुदा ओकर प्रभाव किछु स्थान पर पड़ैछ—य, व।

ध्वनिक वर्गीकरण

प्राचीन कालहि सँ भारतीय आर्य भाषा मे दू ध्वनि अछि—स्वर ओ व्यंजन। स्वर ओ ध्वनि अछि जकर उच्चारण मे उच्चारण स्थानक स्पर्श नहि होइछ (स्वतः) हवा मुखक बीच सँ स्वतः बाहर भऽ जाइछ। व्यंजन ओहि ध्वनि कें कहल जाइछ जकर उच्चारण मे वायु उच्चारण स्थान कें स्पर्श अथवा घर्षण करैछ। स्वर ओ व्यंजनक उच्चारण मे प्रयत्न (विवक्षा) ओ उच्चारण स्थान दुनूक योग आवश्यक अछि। अतः ध्वनिक वर्गीकरणक दू प्रधान आधार अछि—प्रयत्न ओ उच्चारण स्थान।

पुनः प्रयत्न दू प्रकारक होइछ—वाह्य ओ आभ्यन्तर। जे प्रयत्न मुख-विवर सँ बाहर होइछ ओ वाह्य आ जे अन्दर मे होइछ से अभ्यान्तर। मुख-विवरक आरम्भ कण्ठ-पिटक सँ होइछ। एहि सँ पूर्व स्वरतंत्री होइछ। स्वरतंत्री ध्वनिक उच्चारण मे कार्य करैछ, अतः एही प्रयत्नक अनुसारें ध्वनि प्रभावित होइत अछि। वाह्य प्रयत्नक अनुसार ध्वनिक दू भेद होइछ—घोष ओ अघोष। घोष ध्वनि ओ थिक जाहि मे स्वरतंत्री हिलैत अछि। समस्त स्वर तथा वर्ण सभक तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, य, र, ल, व, ओ ह—घोष अछि तथा शेष अघोष अछि।

आभ्यन्तर प्रयत्नक अनुसारें स्वरक चारि भेद—संवृत, अर्द्ध-संवृत, अर्द्ध-विवृत, विवृत—(पुनः अग्र, मध्य ओ पश्च भेद)

संवृत जखन मुखद्वार बहुत संकीर्ण मुदा ततेक नहि जे कोनो प्रकारक संघर्ष हो—इ, ई, उ, ऊ।

अर्द्ध संवृत—जखन मुख द्वार अर्द्ध संकीर्ण रहैछ—ए, ओ।

अर्द्ध विवृत—अधखुला—ऐ, औ।

विवृत—अ, आ (पूरा खुलल मुखद्वार)।

पुनः उच्चारणक दृष्टिएँ ९ भेद।

द्वयोष्ठ्य—प फ ब भ म व उ ऊ।

दन्त्योष्ठ्य—ऊपरक दाँत ओ निचला ओष्ठ्यक प्रयोग—व फ।

दन्त्य—त थ द ध (जीह दाँत कें स्पर्श करैछ)

(९) ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन (Phonetic ...

वर्त्स्य—(जीह दाँतक अन्दरक मसूड़क स्पर्श करैछ) न, ल, र, ज, स।

तालव्य—(तालुक स्पर्श) च छ ज झ य श।

मूर्द्धन्य—(कठोर तालु—मूर्द्धाक स्पर्श) ट ठ ड ढ ड़ ढ़।

कण्ठ्य—कण्ठक स्पर्श—क ख ग घ ङ अ

जिह्वामूलीय—जिह्वाक मूलक स्पर्श—क़ ख़ ग़।

स्वरयंत्रमुखी—विसर्ग (:)

प्राचीन भाषा वैज्ञानिक लोकनि स्पर्श-व्यंजनक दू भेद आरो मानलनि अछि—अल्पप्राण ओ महाप्राण।

अन्दर सँ आबएवला श्वास भेल प्राण—क ग आदि मे स्वाधारण प्राणक संग उच्चारण ओ ख घ आदि मे विशेष प्राणक संग—क सँ ख बनबा मे श्वास अवश्ये किछु भारी भऽ जाइछ (—वास्तव मे ख=क+ह—नहि—)।

अल्प—क ग च ज ट ड ड़ त द न प ब म र ल।

महा—ख घ छ झ ट ढ ढ़, घ, ध, न्ह, फ, भ, म्ह, र्ह, ल्ह।

क्लिक ध्वनि

(CLICK SOUNDS)

एखन धरि जतेक ध्वनिक हमरा लोकनि चर्चा कयल अछि ताहि सभ मे श्वास भीतर सँ बहार होइछ मुदा एहि सँ विपरीत संसार मे किछु एहनो भाषा अछि जाहि मे उच्चारण करबा काल श्वास अन्दर खींचल जाइछ। यैह ध्वनि सभ क्लिक ध्वनिक नामे जानल जाइछ। अफ्रिकाक कतिपय भाषा-परिवार मे ई ध्वनि भेटैछ। बुशमैन परिवारक तँ ई विशेषते थिक। भारोपीय भाषा-परिवार मे सेहो ई विद्यमान अछि। किछु भाषावेत्ताक मत अछि जे प्रागैतिहासिक काल मे बहुतो क्लिक-ध्वनि छल होयत जकर क्रमशः कालान्तर मे लोप होइत गेल। चुम्बनक प्रचलित ध्वनि क्लिक ध्वनि थिक।

सुइ, काँट गड़ला पर सीत्कारक ध्वनि जे होइछ सेहो क्लिक-ध्वनि थिक; यथा—च् च् च्, टिक् टिक् आदि।

संयुक्त ध्वनि

जखन एक ध्वनि दोसरा सँ मिलैछ तँ ओ संयुक्त-ध्वनि कहबैछ, यथा—पच्छिम मे च+छ संयुक्त अछि।

संयुक्त स्वर

श्वासक एकहि झोंक मे अवयवक परिवर्तन होइत अवस्था मे ध्वनिक

उच्चारण होइछ। एकर उच्चारण मे एक स्वरक उच्चारण स्थान सँ दोसर स्वरक उच्चारण स्थान दिस प्राण सोझे मार्ग ग्रहण करैछ।

साहित्यिक मैथिली मे—कएल (कैल) अओजी (औजी) आदि।

पूर्व मे 'ए' तथा 'ओ' सेहो संयुक्त स्वर छल, ए मे अ+इ तथा ओ मे अ+उ छल, आब मूल ध्वनि भऽ गेल अछि।

संयुक्त व्यंजन

संयुक्त व्यंजन दू प्रकारक होइत अछि—

(१) एकहि व्यंजनक संयोग, यथा—पक्का, कच्ची, पट्टा, मुन्ना।

(२) दू भिन्न व्यंजनक संयोग, यथा—चक्र, पक्व, अवस्था, अश्व।
(दू महाप्राण ध्वनि कथमपि परस्पर संयुक्त नहि भऽ सकैछ।)

निम्नलिखित प्रकारक व्यंजनक संयोग होइछ—

(१) स्पर्श+स्पर्श—स्पर्श ओ स्पर्शक योग मे प्रायः पहिल व्यंजनक लोप भऽ जाइत अछि, संगहि संयुक्त व्यंजनक पूर्ण स्वर दीर्घ भऽ जाइत अछि—

पत्थर—पाथर
दुग्ध—दूध
सप्तदश—सत्तरह

(२) स्पर्श+अनुनासिक—एहन स्थिति मे जँ स्पर्श पहिने आबय तँ अनुनासिक व्यंजनक प्रायः लोप भऽ जाइत अछि, यथा—

अग्नि – आगि
तीक्ष्ण – तीख
राज्ञी – रानी

(३) स्पर्श+अन्तस्थ—(य् र् ल् व्) एहन दशा मे स्पर्श चाहे पहिने हो वा बाद मे, अन्तस्थक प्रायः लोप भऽ जाइत अछि; यथा—

योग्य—जोग
दुर्बल—दूबर
त्वरित—तुरत

(४) स्पर्श+ऊष्म—(श्, ष, स, ह्) स्पर्श चाहे पहिने हो वा बाद मे, ऊष्मक प्रायः लोप भऽ जाइत अछि; यथा—

अक्षि—आँखि
क्षेत्र—खेत
काष्ठ—काठ
पृष्ठ—पीठ

हस्त—हाथ
स्तन—थन

(५) अनुनासिक+अन्तस्थ—एहन परिस्थिति अंतस्थक लोप भऽ जाइत अछि—

शून्य—सून, सुन्न
कर्ण—कान
ऊर्ण—ऊन

(६) अनुनासिक+अनुनासिक—न् ओ म् केर संयोग कहियो-कहियो भेटैत अछि। एहन दशा मे अनुनासिक रहि जाइत अछि; यथा—

जन्म—जनम

(७) अनुनासिक+ऊष्म—एहि मे कहियो अनुनासिकक लोप भऽ जाइत अछि आ कहियो ऊष्मक; यथा—

रश्मि—रास
श्मशान—मसान
स्नेह—सनेह, नेह
कृष्ण—कान्ह

(८) अंतस्थ+अंतस्थ—एहि मे कहियो एक अंतस्थक लोप भऽ जाइत अछि आ कहियो दुनू रहि जाइत अछि, यथा—

सर्व—सब्ब, सब
सूर्य—सूरज
पर्व—परब
व्रत—बरत

(९) अंतस्थ+ऊष्म—एकर सेहो कोनो निश्चित नियम नहि अछि, कहियो अंतस्थ, कहियो ऊष्म आ कहियो दुनू रहि जाइत अछि, यथा—

पार्श्व—पास
श्याला—साला
श्वसुर—ससुर
आश्रय—आसरा

स्वरतन्त्रीय प्रयत्न अथवा वाह्य प्रयत्न बाह्य प्रयत्न मुख्यतः स्वर-तंत्री मे होइत अछि।

(१) घोष—नादक दोसर नाम घोष थिक। समस्त स्वर, वर्गक तृतीय,

चतुर्थ ओ पंचम वर्ण (ग घ ङ, ज झ ञ, ट ढ ण, द ध न, ब भ म ओ य र ल व ह) थिक।

(२) अघोष जकरा श्वास कहैत छी वैह अघोष थिक। प्रत्येक वर्गक प्रथम ओ द्वितीय वर्ण (क ख, च, छ, ट ठ, त थ, प फ) अघोष थिक।

(३) विवार—विवारक अर्थ थिक खुजि जायब। जखन स्वर-तंत्री पूर्णतः विवृत खुजल रहैत अछि तखन विवार प्रयत्न होइत अछि।

(४) संवार—संवारक अर्थ होइत अछि बन्न भेनाइ।

(५) श्वास—खुखल स्थिति मे श्वास-निश्वासक क्रिया निर्वाध रूप सँ चलैत रहैत अछि। निःश्वासक निर्वाध बहरेनाइ श्वास-प्रयत्नक अन्दरहि अबैत अछि।

(६) नाद—स्वर-तंत्रीक कम्पन सँ नाद उत्पन्न होइत अछि।

(७) अल्पप्राण—प्राणक अर्थ थिक वायु या अल्पक अर्थ थिक थोड़ अर्थात् थोड़ वायुक प्रयोग जाहि मे हो ओ प्रयत्न अल्पप्राण कहाओत।

(८) महाप्राण—महाप्राण मे वायुक प्रयोग अधिक होइत अछि। प्रत्येक वर्गक द्वितीय ओ चतुर्थ वर्ण (ख घ, छ झ, ठ ढ, थ ध, फ भ) महाप्राण थिक।

उदात्त, अनुदात्त ओ स्वरितक सम्बन्ध केवल स्वर सँ अछि।

ध्वनि-विकार वा ध्वनि-परिवर्तन

विकासक दोसर नाम परिवर्त्तन थिक। भाषामे जाहि तरहेँ रूपात्मक विकास होइत अछि ताहि तरहेँ ध्वनि-सम्बन्धी विकास सेहो होइत अछि। शब्दक ध्वनि देश ओ कालक भेदसँ बदलैत अछि। संस्कृतमे जे 'कार्य' छल ओ आगाँ जा कऽ 'कज्ज' बनल फेर, 'काज' भेल। एहि परिवर्तनकेँ विकास कहल जाइत अछि। पंडित सभ एकरा विकार कहैत छथि। संस्कृत रूप सुधरल रूप छल। जन-साधारण ओहि रूपकेँ छोड़ि परिवर्तित ग्रहण करैत रहैत छथि। जेना-जेना आगाँ बढ़ब तेना-तेना ओहिमे विकास होयत, मुदा परम्परावादी व्यक्तिकेँ शब्दमे बिगाड़ देखा पड़ैत अछि, एहि हेतु शब्दक एहि विकासकेँ ओ विकार कहल आ एही लेल प्राकृतक पछाति विकसित भऽ कऽ जे भाषा बनल ओकरा अपभ्रंश अर्थात् भ्रष्ट भाषा कहल गेल।

ध्वनि-परिवर्तनक मुख्य कारण

भाषामे देश ओ कालक भेदक अनुसार जे ध्वनि-विकार भऽ जाइत अछि, ओकर मुख्यतया दू गोट प्रधान कारण अछि आभ्यन्तर ओ बाह्य। आभ्यन्तर कारणक सम्बन्ध ओहि परिवर्तनसँ अछि जे श्रवण ओ उच्चारणक गलतीसँ भऽ जाइत अछि। बाह्य कारण ओ थिक जे व्यवहार आदिक बाहरी उपकरणसँ सम्पन्न होइत अछि।

आभ्यन्तर कारण

ध्वनिक उत्पत्ति ओ प्रचारक कार्य कान ओ मुख करैत अछि। एक व्यक्ति किछु कहैत छथि आ दोसर ओकरा सुनिकऽ ओकरहि अनुकरण करैत छथि। एहि श्रवण ओ अनुकरणमे यद्यपि मानव यथा सम्भव ध्वनिक रक्षा करबाक प्रयत्न करैत छथि, तैयो विकार आबिए जाइत अछि। एकर कारण प्राकृतिक दोषहि थिक।

मुख-सुख—शब्दोच्चारणमे वक्ताक प्रवृत्ति मुख-सुखक होइत अछि। ओ थोड़ प्रयत्नमे बजबाक प्रयत्न करैत छथि। एहि हेतु कहियो बीचक ध्वनि लुप्त भऽ जाइत अछि। यथा—इस्टेशनकेँ स्टेशन, आर्डरकेँ अडर, इस्त्रीकेँ इहतिरी कहब आरम्भ कऽ दैत छथि।

अपूर्ण अनुकरण—जाहि प्रकारक उच्चारणक एक मुख अभ्यस्त होइत अछि, दोसर ताहि प्रकारक उच्चारण नहि कऽ सकैत छथि। पंजाबी-भाषीक लेल बंगालीक उच्चारण आ बंगाली भाषीक लेल पंजाबीक उच्चारण बहुत कठिन अछि। बजबा काल लोक एहि कठिन भाषाकेँ अपन अनुरूप सरल बना कऽ विकृत कऽ दैत छथि।

मानसिक अयोग्यता—एक स्थलक निवासी जखन अन्यत्र बसि जाइत छथि, हुनका संसर्ग छुटि जाइत छनि। दूर भेलासँ शिक्षा ओ संस्कारमे भेद भऽ जाइत अछि तँ ध्वनि विकार अवश्यम्भावी भऽ जाइत अछि। एकर अतिरिक्त साहित्यिक भाषा व्याकरणादिक कठोर बन्धनक कारण अपन सहज परिस्थितिकेँ बिसरि जाइत अछि। ओ सतत एकरूपमे रहि जाइत अछि। पाणिनीक समयक संस्कृत आइ धरि ओही रूपमे अछि। जनसाधारणक भाषा मे पाली, अपभ्रंश तथा अनेक आर्य भाषाक रूपमे परिवर्तन होइत रहल। कालान्तरमे वैह विकृत ध्वनि धीरे-धीरे प्रचलित भऽ जाइत अछि।

[illegible]—[illegible] काल शीघ्रताक कारण सेहो ध्वनिमे परि-

वर्तन भऽ जाइत अछि। जल्दीक कारण बीचक अनेक ध्वनि लुप्त भऽ जाइत अछि। मास्टर साहब केवल 'मार साहब' भऽ जाइत अछि।

प्रयत्न-लाघव—प्रयत्न लाघव अधिक व्यापक शब्द अछि। मनुष्यक प्रकृति यथा-सम्भव कम कष्ट सहय चाहैत अछि। लोक सतत छोट बाट देने जाइत छथि। बन्द्योपाध्याय एतेक पैघ शब्दक उच्चारण के करय, एहि हेतु बनरजी बना लेल गेल। उपाध्याय पैघ शब्द अछि, ओकर 'झा' कऽ लेलनि। एहि तरहें ध्वनि विकारक मुख्य-कारण प्रयत्न लाघव थिक।

बाह्य कारण

एहि विकारक उत्पत्तिमे बाह्य परिस्थिति सेहो सहायक भऽ जाइत अछि।

श्रुतिदोष—अपूर्ण अनुकरण ओ प्रयत्न-लाघव आदि आभ्यन्तर कारण थिक, किएक तँ एकर सम्बन्ध उच्चारणक निजी प्रयत्नसँ अछि, मुदा ओकर सेहो अनेक कारण अछि जाहि मे बाह्य परिस्थिति विवश कऽ दैत अछि आ ध्वनिमे परिवर्तन अवश्यंभावी भऽ जाइत अछि, यथा

वाग्ययन्त्रक विभिन्नता—ध्वनिक उत्पत्ति जाहि वाग्ययन्त्रसँ होइत अछि ओकर रचना पर देशक प्रभाव सेहो होइत अछि। एहि कारणे एक देशमे उत्पन्न मानवक लेल अन्य देशक ध्वनि कठिन भऽ जाइत अछि। संस्कृतक 'स्' अवेस्तामे 'ह्' भऽ गेल।

भौगोलिक भिन्नता—देशक स्थिति ओ जलवायुक प्रभाव सेहो ध्वनि परिवर्तन पर पड़ैत अछि। जखन एक जातिक लोक हटि कऽ गर्म देशसँ ठंढ़ देशमे चलि जाइत छथि तँ ओ विकृत ध्वनिक विकास नहि करैत छथि। गर्म देशक अभ्यस्त लोक ठंढ़ देशमे अधिक मुँह नहि खोलि सकैत छथि, फलतः ओकर उच्चारण गोल भऽ जाइत अछि। ठंढ़ देशमे एहि लेल आ (A) क ध्वनि अछि मुदा भारत देशमे विकृत आ अछि। एहि तरहें पहाड़ ओ जंगल आदिक बीचमे रहनिहार सीमित रहैत छथि; हुनका बाह्य सम्पर्क बड़ कम होइत छनि, अतएव हुनक ध्वनि स्वतः सीमित भऽ जाइत अछि।

काल-प्रभाव—जाहि तरहें देशक स्थिति ओ जलवायु आदि ध्वनि-विकारक सहायक होइत अछि ताहि तरहें कालक सेहो प्रभाव पड़ैत अछि। ऐतिहासिक परिस्थिक बदललासँ संसर्ग बढ़ि जाइत अछि आ एक भाषा-भाषी

दोसरसँ प्रभावित होइत छथि। जखन आर्यक संसर्ग द्रविड़सँ भेल तँ मूर्धन्य ध्वनि जे आर्य ध्वनिमे नहि छल द्रविड़सँ आबऽ लागल। प्राकृतक समयमे बाह्य आक्रमणक कारणे ध्वनि विकार ओहिमे जतेक भेल ततेक संस्कृतमे नहि। विदेशी ओ विजातिक मेल पर सेहो भाषामे विकार भऽ जाइत अछि।

सामाजिक प्रभाव—देश कालक अतिरिक्त व्यक्तिक सेहो एहि विकारसँ सम्बन्ध अछि। अनुकरणसँ सेहो एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिसँ भाषा सिखैत छथि। प्रत्येक व्यक्तिमे किछु-ने-किछु भिन्नता होइत अछि। अतएव एकेटा ध्वनिक अनेक मुँहसँ उच्चारित होयबाक कारणे विकार भऽ जाइत अछि। मुदा व्यक्ति देश काल ओ समान सम्बन्ध भेलासँ ओहि अधीनहि रहैत छथि।

लिखित भाषाक प्रभाव—जाहि तरहें भाषाक ध्वनि-विकारमे अन्य बाह्य उपकरण कार्य करैत अछि ताहि तरहें कहियो-कहियो लिखित भाषा सेहो ध्वनि विकार उत्पन्न करैत अछि। उर्दू लिपि सदोष अछि, अतः ओहिमे 'मन्दिर'क मन्दर ओ रामचन्द्रक 'रामचन्दर' लिखल जाइत अछि। गुरुमुखी मे संयुक्ताक्षर नहि होइत अछि एहि लेल स्टेशन 'सटेशन' आ प्रधानक 'परधान' भऽ जाइत अछि। अंग्रेजीमे रामक 'रामा' बुद्धक 'बुद्धा' ओ गुप्तक 'गुप्ता' भऽ जाइत अछि। एहि लिपि-दोषक कारण पढ़निहार ओहिना उच्चारण करऽ लगैत अछि जहिना ओकर लिपि अछि। परिणामतः शब्दमे विकार आबि जाइत अछि आ ध्वनि-विकारक प्रचलित भऽ गेला पर सुशिक्षित लोक सेहो मंदर, बिरहमन, सटेशन, बुद्धा, गुप्ता, रामा आदि उच्चारण करऽ लगैत छथि।

शब्द सभकें तोड़ि-मरोड़ि देब—कवितामे कवि भाषा-सौन्दर्य वा तुकक लेल शब्द सभकें तोड़ि-मरोड़ि दैत छथि। एकर प्रभाव जन-साधारण पर सेहो पड़ैत अछि। परिणाम ई होइत अछि जे भाषा-ध्वनिमे स्थायी विकार उत्पन्न भऽ जाइत अछि। प्रायः कवितामे प्राणक लेल प्रान, वाणीक लेल वानी ओ चरणक लेल चरन एहि हेतु कयल जाइत अछि जे 'ण' क स्थान पर 'न' क ध्वनि बेसी कोमल अछि।

सादृश्य—रूप-विकारमे सादृश्यक कारण परिवर्तन भऽ जाइत अछि। ध्वनिमे सेहो सादृश्यक कारणें अनेक परिवर्तन भऽ जाइत अछि। त्रयोदशसँ बनल 'तेरह' क संग 'द्वादश' सँ बनल शब्दमे 'र' क आविर्भाव भऽ कऽ बारह बनि गेल।

विदेशी ध्वनिक प्रभाव – विदेशी भाषाक किछु ध्वनि ओही रूपमे भाषा मे उपलब्ध नहि होइत अछि। एहन अवस्थामे विदेशी ध्वनिसँ मिलैत ध्वनिमे ओकर प्रयोग होइत अछि। एहि तरहेँ ध्वनि-परिवर्तन स्वाभाविक भऽ जाइत अछि।

स्मरांश ई जे ध्वनिक परिवर्तन स्वाभाविक अछि।

□

अर्थ परिवर्तनक कारण

अर्थक परिवर्तन स्वाभाविक थिक। एकर कतेको कारण अछि। ध्वनि ओ रूप सम्बन्धी जे परिवर्तन होइत अछि ओकर अपेक्षा अर्थ-परिवर्तनक क्षेत्र अधिक विस्तृत अछि। ध्वनि ओ रूप भाषासँ सम्बन्धित अछि। एहि हेतु एकर परिवर्तनक एकटा सीमा अछि, मुदा अर्थक परिवर्तनमे प्रयोगकर्त्ता अपन रूचि ओ आवश्यकताक अनुसार जेना चाहैत छथि तेना करैत छथि। ई कोनो स्थायी ओ अपरिवर्तनीय वस्तु नहि थिक। अर्थ परिवर्तनकेँ अर्थ विकास सेहो कहल जाइत अछि। भाषाक क्षेत्रमे जे किछु परिवर्तन होइत अछि, ओ कोनो ने कोनो रूपमे विकासहि थिक। अर्थ परिवर्तन वा अर्थ-विकासक तीन प्रमुख दिशा अछि—(१) विस्तार, (२) संकोच (३) आदेश।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे अर्थ-परिवर्तनक कारण सेहो मानव-मनहिसँ अछि। अर्थ-तत्त्व एक प्रकारसँ मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया थिक। अर्थ-सम्बन्धी प्रत्येक परिवर्तनक लक्षण ओ व्यजनाक अन्तर्गतहि आबि जाइत अछि। पाश्चात्य विद्वान लोकनिमे टकर ओ मिशेल बेआल सर्वप्रथम अर्थ-तत्त्व पर विचार कयल, तदनन्तर आधुनिक युगमे ऑग्डेन ओ रिचर्डसक देन महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। अर्थ-परिवर्तनक निम्नलिखित कारण महत्त्वपूर्ण अछि—

(१) शब्दक अधिक प्रयोग - अधिक प्रयोगसँ शब्दक शक्ति नष्ट भऽ जाइत अछि। बेरि-बेरि प्रयुक्त भेलाक कारणे अप्रिय भऽ जाइत अछि। फलाफल ई होइत अछि जे शब्द कहियो एक अर्थमे प्रयुक्त होइत छल, ओकर महत्त्व कम भऽ जाइत अछि आ एहि तरहेँ अर्थक परिवर्तन स्वाभाविक भऽ जाइत अछि। उदाहरणक लेल 'शास्त्री' शब्दकेँ लेल जाय। ई सम्माननीय पदवीक द्योतक छी। षट्-दर्शन ओ व्याकरण पारंगत विद्वानकेँ शास्त्रीक उपाधि भेटैत अछि।

भारतवर्षमे पंडित सभमे शास्त्रार्थ भेल करैत छल, ओहिमे जीतनिहारकेँ शास्त्री कहल गेल। आगाँ चलकऽ सम्मानार्थ पंडितकेँ शास्त्री कहल गेल। सम्प्रति संस्कृत ओ हिन्दीक शिक्षककेँ विशेषतया पंजाब ओ दिल्लीमे शास्त्री कहल जाइत छनि। अधिक प्रयोगसँ शब्दक महत्त्व घटि गेल।

(२) शब्दार्थक अन्तर्निहित अनिश्चितता—कोनो भाषामे बहुत एहन शब्द अछि जकर अर्थ सुनिश्चित नहि अछि। गुलाब ओ अनार दिस संकेत कऽ जतेक आसानीसँ एहि शब्दक अर्थ बताओल जा सकैत अछि, ओतेक आसानीसँ अभ्युदय, उन्नति, विकास, प्रगति आदि शब्दक नहि। एहि हेतु देखल जाइत अछि जे जतय कोनो दोसर शब्दक प्रयोग अधिक संगत होइत अछि, ओतय प्रयोक्ता दोसर शब्दक प्रयोग कऽ दैत छथि।

(३) व्यक्तिक अनुसार शब्दक प्रत्ययमे भेद—व्यक्तिगत संस्कार, परिवेश शिक्षा, जीवन-प्रणाली आदिक भेदसँ शब्दसँ जे प्रत्यय मनमे उत्पन्न होइत अछि, ओ सेहो भिन्न होइत अछि। धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, नीक-अधलाह, खाद्य-अखाद्यक कोनो एक कसौटी नहि अछि। धर्म शब्द हिन्दू, मुसलमान ओ ईसाइक हृदयमे विभिन्न भावना उत्पन्न करैत अछि। अधर्म आदिक सेहो यैह स्थिति अछि। हिन्दू गो माँस नहि छूबि सकैत छथि तँ मुसलमान सूअरक मांस। जैनक दृष्टिमे हिंसा पाप थिक, मुदा कतेको एहन धर्म अछि जे हिंसाकेँ पाप नहि मानैत अछि।

(४) शब्दार्थक एक तत्त्वक प्रमुखता—कहियो-कहियो शब्दक पूर्ण अर्थकेँ ध्यानमे नहि राखि कोनो एक तत्त्वकेँ प्रधानता दऽ प्रयोग करब। यथा—पुलिसक लेल 'लाल पगड़ी' शब्दक प्रयोग। पुलिस मात्र लाल पगड़िएटा नहि पहिरैत छथि, मुदा 'लाल पगड़ी'क प्रयोग पुलिसक लेल प्रसिद्ध भऽ गेल अछि।

(५) एक शब्दक विभिन्न रूपक विभिन्न अर्थमे प्रयोग- कोनो शब्दक तत्सम ओ तद्भव रूपमे अर्थक दृष्टिसँ भेद भऽ जाइत अछि; यथा—खाद्य-खाद, भद्र-भद्दा, श्रेष्ठ-सेठ, स्तन-थन आदि शब्दसँ स्पष्ट अछि।

(६) साहचर्यक कारण गौण अर्थक प्रमुखता—विदेशसँ सर्वप्रथम जखन तम्बाकू एहि देशमे आयल तँ सूरत बन्दरगाह पर उतारल गेल आ ओतहिसँ सम्पूर्ण देशमे एकर प्रचार भेल। सूरतक साहचर्यक कारणे तम्बाकूक नाम 'सुरती' पड़ि गेल। कश्मीरमे केसरक उत्पत्ति होयबाक कारणे केसरक नाम संस्कृतमे काश्मीर सेहो अछि।

(७) अलंकार प्रयोग—भावकें स्पष्ट राखब मनुष्यक मुख्य प्रयोजन होइत अछि। अपन सुविधाक लेल ओ एहन शब्दक प्रयोग करैत छथि जे अदृश्य भावकें दृश्य कऽ देथि वा अरूपकें रूप दऽ देथि। वास्तवमे भाव-साम्य, धर्म-साम्य आदि एहि प्रक्रियाक मूल कारण होइत अछि। साहित्यिक भाषामे ओकर नाम अलंकार, उपमा, रूपक आदि अछि। एहन प्रयोग मात्र साहित्यिकेटामे नहि होइत अछि अपितु साधारण व्यक्ति सेहो स्वाभाविक रूपसँ एकर प्रयोग करैत छथि। व्यक्ति विशेषकें सम्बोधन करैत कहैत छथि जे ओ गऊ छथि। एही तरहें चालाककें कौवा, मूर्खकें बरद, उल्लू; खतरनाककें कारी नाग, कठोरकें कसाइ आदि प्रयोग कयल जाइत अछि।

(८) परिचित पदार्थसँ गुण साम्य—पूर्व परिचित वस्तु तथा जीवक साहचर्यमे रहलासँ तथा ओहिसँ परिचित होयबाक कारणे ओहिसँ मिलैत-जुलैत वस्तुमे किछु एहन शब्दक प्रयोग होइत अछि जे अर्थ विस्तारक द्योतक होइत अछि। लजौनी एक प्रकारक लता थिक। एकर नाम लजौनी एहि हेतु पड़ल जे ओकरा दिस हाथ बढ़बैत देर ओ नव कन्या जकाँ लाजसँ सिकुड़ि जाइत अछि। सिन्धु नदीक नाम सिन्धु एहि हेतु पड़ल जे ओ सागर जकाँ विशाल नदी छल। ओहीसँ नूनकें सैन्धव कहल गेल। किएक तँ ओतय नूनक पहाड़ छल। नेना सभ ठेंगाकें घोड़ा कहैत अछि। खिलौनावाला ओकरा साँप दैत अछि। तात्पर्य ई जे परिचित पदार्थक गुण साम्यक कारणे अनेक शब्दक अर्थमे विकास भेल अछि।

(९) प्रयोगमे असावधानी—असावधानीसँ सेहो अनेक शब्द अपन दोसर अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि आ देखादेखी ओकर प्रयोग एतेक बढ़ि जाइत अछि जे ओकर अशुद्धि पर लोक ध्यान नहि दैत छथि। उदाहरणक लेल पुष्टक स्थान पर संपुष्ट; प्रयोगक स्थान पर संप्रयोग, पूरकक स्थान पर अनुपूरक, सृष्टिक स्थान पर संसृष्टि आदि। एहि शब्द सभमे उपसर्गक प्रयोग कऽ शब्द सभकें नमारि देल गेल अछि।

(१०) अज्ञान—शब्दक समीचीन अर्थ नहि जानबाक कारणे अर्थ मे विस्तार वा संकोच होइत अछि। 'पाषंड' शब्द एकर उदाहरण थिक। अशोक काल मे एकर प्रयोग बौद्ध-भिक्षुकक एक साधु-वर्गक लेल होइत छल, मुदा आगाँ जा कऽ वैष्णव धर्मावलम्बी एकर अर्थ लगौलनि नास्तिक, ढोंगी, कपटी आ नीच।

(११) अन्ध-विश्वास—परम्पराक कारण लोक मे अन्ध-विश्वास भऽ

जाइत अछि तथा शब्दक सीमित अर्थ मे प्रयोग होइत अछि। स्त्री अपन पतिक नाम नहि लैत छथि आ जेठ बालकक नाम सेहो नहि लेल जाइत अछि आ एहि हेतु मिलैत-जुलैत शब्दक प्रयोग सेहो नहि करैत छथि। मुदा काज चलय-बाक लेल किछु आरो शब्द बना लैत छथि। यथा—पतिक नाम लाल मोहन छनि तँ पत्नी ओ नाम नहि लऽ अपन धीआ-पूता सँ कहतीह जे अपन 'पिताजीवला रंग आनू'। एहि तरहें सीमित क्षेत्र मे ओहि रंगक नाम ओहि व्यक्तिक नाम सँ प्रचलित भऽ जाइत अछि।

(१२) वातावरण—वातावरणक परिवर्तन सँ सेहो शब्दक अर्थ बदलि जाइत अछि। वेद मे दहिता दूध दुहऽवाली कनियाँ कें कहल जाइत छल, मुदा आब कनियाँक अर्थ मे प्रयुक्त होइछ अछि।

(१३) समानार्थक शब्द मे भेद भऽ जाइत अछि, यथा—गर्भिणी स्त्री होइत छथि तथा गाभिन गाय होइत अछि।

(१४) व्यंग्य अर्थ सेहो परिवर्तनक कारण थिक। अकलमन्द, भलेमानुष, विद्वान आदि व्यंग्य सँ विपरीत अर्थ दैत अछि। लक्षण ओ व्यंजना शक्ति अर्थ-परिवर्तनक प्रधान कारण होइत अछि।

(१५) स्नेहातिशय सेहो अर्थ परिवर्तनक कारण बनि जाइत अछि, यथा—सुअर, गदहा, बदमाश बेटा आदि प्रयुक्त होयब।

(१६) कहियो-कहियो एक भाषाक शब्द दोसर भाषा मे जा कऽ अर्थ बदलि दैत अछि, यथा—दरिया शब्द उर्दू मे नदीक अर्थ मे प्रयुक्त होइत अछि, मुदा वैह गुजराती मे समुद्रक अर्थ मे प्रयुक्त होइत अछि।

(१७) अर्थक परिवर्तन प्रसंगक कारणे सेहो भऽ जाइत अछि, यथा—'कर'क लेल हाथ टैक्स पूर्वकालिक क्रिया आ 'सैंधव'क लेल घोड़ा, नून।

(१८) कालक भेद सँ सेहो शब्दक अर्थ बदलि जाइत अछि, यथा—पत्रक अर्थ पता छल पश्चाति कागज भेल आ फेर चिट्ठी।

(१९) देशगत कारण सँ सेहो अर्थ-परिवर्तन होइत अछि, यथा—'भैया'क प्रयोग मिथिला ओ उत्तरप्रदेश मे भाइ, मुदा बम्बई मे कुली. पंजाब मे बीबी प्रयोग बहिन वा कनियाँक लेल तथा उत्तरप्रदेश मे पत्नीक लेल होइत अछि।

(२०) शिष्टताक कारणे सेहो अर्थ-परिवर्तन होइत अछि, यथा—श्रीमान्‌क अर्थ धनवान होइत अछि, मुदा शिष्टाचार मे एहि शब्दक प्रयोग सम्बोधनक लेल होइत अछि।

(२१) अशुभ, लज्जाजनक वा घृणास्पद शब्द सभ केँ दोसर शब्द द्वारा प्रकट कयल जाइत अछि, यथा—दैनिक क्रिया केँ दिशा जायब, जंगल जायब, गंगालाभ आदि।

(२२) विदेशी भाषणक प्रभाव—आवश्यकतानुसार भाषा अन्य भाषा सँ शब्द ग्रहण करैत अछि, मुदा एहि आदान-प्रदान मे किछु अर्थ परिवर्तित भऽ जाइत अछि, यथा—संस्कृतक 'विष' शब्द अरबी मे 'बेश' अछि, जकर अर्थ होइत अछि एकटा बिषैली जड़ी।

(२३) शब्द मे बलक परिवर्तन—उच्चारण मे कहियो-कहियो आवश्यक वा अनावश्यक बल शब्दक कोनो अंश पर भऽ जाइत अछि, संगहि कहियो-कहियो बल एक स्थान सँ हटि दोसर स्थान पर पड़ि जाइत अछि। बलक हटला सँ अर्थ सेहो परिवर्तित भऽ जाइत अछि। उदाहरणक लेल 'जुगुप्सा' शब्द अछि, जकर आरम्भ मे अर्थ छल गायक पालन करब, मुदा आगाँ जा कऽ एहि शब्दक 'गुण' पर बल पड़ल आ अर्थ भऽ गेल नुका कऽ पालन करब। फेर पालनवला अर्थ क्रमशः बल कम भऽ जयबाक कारणे समाप्त भऽ गेल आ मात्र नुका कऽ राखब वस्तु धरि सीमित रहि गेल। आ, एहि अर्थ मे ई शब्द घृणा ओ निन्दावाची भऽ गेल आ अंत मे बीभत्सताक वाचक बनि गेल।

(२४) परम्पराक अवशेष—लौकिक प्रथा ओ रीति कालान्तर मे बदलि जाइत अछि। उदाहरणक लेल 'पुरोहित' ओ 'यजमान' शब्द केँ देखल जाय। विद्वान पंडित पुर ओ गाँवक हितैषी होइत छलाह जे पुरोहित कहल जाइत छलाह, मुदा पुरोहितक सम्प्रति एक जाति बनि गेल अछि जे संस्कार आदि करबै छथि। यज्ञ कयनिहार केँ यजमान कहल जाइत छल। यज्ञक प्रथा लुप्त भऽ गेल, मुदा परम्परा सँ अबैत ई शब्द सम्प्रति विद्यमान अछि।

(२५) नम्रता-प्रदर्शन—मर्यादाक रक्षा ओ लोक-व्यवहार मे नम्रता प्रस्तुत करबाक लेल शब्दक अर्थ-संकोच होइत अछि। उदाहरणक लेल 'अन्नदाता' शब्द अछि। राज कर्मचारी अपन राजा केँ अन्नदाता कहि कऽ सम्बोधन करैत छलाह।

(२६) सादृश्य—सादृश्यक कारणे सेहो अर्थ-परिवर्तन होइत अछि, यथा—'पट' शब्दक दू अर्थ किवाड़क पट्टा तथा बस्त्र मे सेहो सदृश्य प्रधान अछि।

(२७, प्रयत्न लाघव—बोलचाल मे कम शब्द द्वारा कार्य चलाएब प्रयत्न लाघव कहबैत अछि। ध्वनि-परिवर्तन मे लोप भऽ जाइत अछि, मुदा अर्थ-

विज्ञान मे लाघवक कारणे शब्दक शब्द कम भऽ जाइत अछि आ अर्थ मे परिवर्तन स्वभावतः भऽ जाइत अछि। उदाहरणक लेल रेलगाड़ी ओकरा कहल जाइत अछि जे रेल (पटरी) पर चलैत अछि। प्रयत्न लाघवक कारणे गाड़ी शब्द निकालि देल गेल आ रेल शब्दहि रेलगाड़ीक बोधक भऽ गेल। एहि तरहेँ 'रेल'क मूल अर्थ 'पटरी' नहि रहि कऽ ओकर अर्थ 'ट्रेन' भऽ गेल।

(२८) एकहि शब्दक दू रूप—व्यवहार मे आबि कऽ एकहिटा शब्दक भिन्न-भिन्न रूप मे संस्कृतक तत्सम् शब्द मैथिली मे प्रयुक्त होइत अछि। कहियो-कहियो ओहि सँ बनल तद्भव शब्द भिन्न अर्थ देबऽ लगैत अछि। कारण ई अछि जे संस्कृत शब्द मे प्रयोगकर्ताक स्तर ऊँच ओ तद्भव शब्द मे भिन्न होइत अछि। उदाहरणक लेल ब्राह्मण ओ बाम्हन दू शब्द नहि अछि। बाम्हन सेहो ब्राह्मणक ओहने तद्भव रूप अछि जेहन पुष्प सँ पुहुप। मुदा ब्राह्मण शब्दक प्रयोग शिक्षित ओ प्रतिष्ठित व्यक्तिक लेल होइत अछि आ बाम्हन निरादरक अर्थ मे प्रयुक्त होइत अछि।

(२९) पुनरुक्ति पुनरुक्तिक द्वारा सेहो अर्थ मे परिवर्तन होइत अछि। ई असावधानीक कारण होइत अछि, मुदा भाषा मे एकर प्रयोग प्रचलित भऽ गेला पर शब्द अपन महत्त्व राखऽ लगैत अछि। आ, एहि तरहेँ अनावश्यक शब्दक सेहो अर्थ बनि जाइत अछि। यथा—शब्द अछि 'विन्ध्याचल पर्वत'। 'विन्ध्याचल' शब्द मे 'अचल'क अर्थ अछि पर्वत। एहि मे 'पर्वत' शब्दक पुनरुक्ति अछि, मुदा व्यवहार मे ई शब्द प्रचलित अछि। परिणाम ई भेल जे 'विन्ध्याचल' एक पहाड़क नाम भऽ गेल।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे अर्थपरिवर्तनक कोनो एकटा सुनिश्चित कारण नहि अछि।

भाषा विज्ञानक इतिहास

कला मे विज्ञानक प्रवेशक कारणे साहित्य ओ भाषा अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय बनि गेल अछि। एना एहि हेतु भेल जे मानव मे जिज्ञासा प्रवृति अन्तर्निहित रहैत अछि। भाषा की थिक? एकर उत्पन्न कोना होइत अछि? कोना प्रयुक्त होइत अछि—आदि प्रश्नक समाधानक लेल मानव आरम्भ सँ उन्मुख रहैत अयलाह अछि।

वेद—भारत मे भाषा विज्ञानक उद्गम स्थल वेद थिक। वेद शब्दक अर्थ

थिक ज्ञान। भाषा-सम्बन्धी अनेक जिज्ञासा ओ ओकर मान्य समाधान सूत्र रूप मे वेद मे भेटैत अछि। वेद कें श्रुति कहल जाइत अछि। मौखिक रूप सँ एकर अध्ययन प्राचीन कालहि सँ होइत आबि रहल अछि। वेदक अध्ययनक लेल ओकर छः अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ओ ज्योतिष—मे शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त ओ छन्द, ई चारि भाषा सँ सम्बन्ध छल। शिक्षाक सम्बन्ध ध्वनि सँ, व्याकरणक पद ओ वाक्य सँ, निरुक्तक व्युत्पत्ति सँ आ छन्दक वैदिक मंत्रक सम्यक् पाठ सँ छल।

ब्राह्मण ग्रंथ – भाषाक अध्ययनक प्रमाण सर्वप्रथम हमरा ब्राह्मण ग्रंथ मे भेटैत अछि। शब्द-विच्छेद ओ धात्वर्थ धरि पहुँचबाक प्रयास सर्वप्रथम एही मे भेटैत अछि।

पदपाठ—पदपाठ मे वेदक संहिता कें पद रूप प्रदान कयल गेल अछि। पदपाठ मे स्वाराघात पर सेहो विचार कयल गेल अछि।

प्रातिशाख्य—वेद-पाठ कें शुद्ध रीति सँ वाचन विद्वान लोकनि करैत छलाह। एहि सँ ध्वनिक क्षेत्र मे पर्याप्त विकास भेल। ऋग्वेदक प्रत्येक शाखाक शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देल गेल। प्रत्येक शाखा कें अध्ययन करबाक कारणे एकर नाम प्रातिशाख्य पड़ल।

निरुक्त – निरुक्त शब्दक अर्थ होइत अछि व्युत्पत्ति अर्थात् शब्द कोन-कोन तत्वक मिश्रण सँ निष्पन्न भेल अछि। सम्प्रति एकटा निरुक्त प्राप्त अछि आ ओ थिक भास्कर। जँ अर्थ-विचारक दृष्टि सँ देखल जाय तँ समस्त संसारक ई प्राचीनतम ग्रन्थ मानल जायत। शब्दक व्युत्पत्तिक नियमक उचित निर्धारण सर्वप्रथम एही ग्रंथ मे भेल। यास्क मुनि बतौलनि जे प्रत्येक संज्ञाक व्युत्पत्ति कोनो-ने-कोनो धातु सँ अछि। निरुक्त मे निघंटु केर प्रत्येक शब्दक व्याख्या विस्तारपूर्वक कयल गेल अछि।

निरूक्त मे प्रत्येक शब्दक अर्थ कें स्पष्ट रूप सँ बुझयबाक प्रयास कयल गेल अछि। एकर निम्नलिखित विशेषता सभ अछि—

(क) अर्थ-विचारक संग-संग शब्दक व्युत्पत्ति पर विचार कयल गेल अछि।

(ख) एहि मे वैदिक संहिता सँ किछु शब्दक चयन कऽ ओकर शुद्ध अर्थ कें स्पष्ट कऽ प्रयोगक सुन्दर व्यवस्था कयल गेल अछि।

(ग) पूर्ववर्ती एवं समवर्ती व्याकरण सम्प्रदाय एवं वैयाकरणक नाम ओ उद्धरण देल गेल अछि।

(घ) भाषाक विकास, गठन ओ उत्पत्ति पर विचार कयल गेल अछि।

(ङ) अनेक वैज्ञानिक शंका उपस्थित कयल गेल अछि।

(च) एतय प्राप्तिसाध्य मे आयल नामक विस्तृत विवेचन भेल अछि।

(छ) अर्थ-निरूपण अधिक वैज्ञानिक ओ तर्क संगत अछि।

(ज) विभाषाक प्रति सेहो संकेत कयल गेल अछि।

(झ) संज्ञा ओ क्रिया, कृदन्त ओ तद्धित प्रत्यय भेदक स्पष्ट उल्लेख अछि।

पाणिनी—पाणिनीक जीवन ओ समयक विषय मे एखन धरि अज्ञात अछि। आधुनिक भाषा—विज्ञान प्रायः पाणिनीक व्याकरण पर आधारित अछि। भाषा कें संस्कृत करबाक श्रेय पाणिनी कें छनि। मैक्समूलर ओ वेबर हिनक समय ईसा सँ प्रायः ३५० वर्ष पूर्व मानैत छथि, मुदा गोल्डस्टकर ओ भण्डारकर हिनक समय ५०० ई० पूर्व मानैत छथि। डा० बेलवेकर ७०० ई० पू० मानैत छथि तँ डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ५ म सदी ई० पू० केर मध्य भाग मानैत छथि। एहि तरहें आविर्भावकाल ओ जीवनवृत्त अज्ञात अछि। पाणिनि महर्षि छलाह आ तक्षशिलाक शलातुर ग्रामक निवासी छलाह। एहि बात सँ सभ क्यो सहमत छथि।

जे-से, पाणिनिक समस्त रचना मे अष्टाध्यायीक स्थान सर्वोपरि अछि। अष्टाध्यायी आठ अध्याय मे विभक्त अछि। प्रत्येक अध्याय मे चारि पाद तथा प्रत्येक पाद अनेक सूत्र मे विभक्त अछि। कुल सूत्रक संख्या ४ हजार अछि जे १४ (अ इ उ ण ऋ लृक आदि) सूत्र पर आधारित अछि, जकरा माहेश्वर सूत्र कहल जाइत अछि। एहि १४ सूत्रक आधार पर संस्कृत भाषाक उत्कृष्ट कोटिक अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि मे सभ शब्द कें धात्वाश्रित मानल गेल अछि एवं वाक्य कें भाषाक मुख्य इकाइ कहल गेल अछि। शब्द कें सुबन्त ओ तिङन्त दू-भाग मे बाँटल गेल अछि। संक्षेप मे कहल जा सकैत अछि जे पाणिनीक अध्ययन-विश्लेषण अत्यन्त आश्चर्यक वस्तु थिक।

कात्यायन—पातंजलिक कथनानुसार ई दक्षिणक निवासी छलाह। हिनक उल्लेख ऐन्द्र सम्प्रदायक अन्तर्गत पाओल जाइत अछि। कात्यायन 'वार्त्तिक' मे पाणिनिक पारिभाषिक शब्दक प्रयोग कयलनि अछि। वार्त्तिकक शैली सूत्र-शैली अछि। अष्टाध्यायीक चारि हजार सूत्र मे सँ कात्यायन १५००. सूत्रक विश्लेषण कयलनि अछि।

भाषा विज्ञानक इतिहास मे वार्त्तिकक अध्ययन बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।

पतंजलि—पतंजलिक इतिवृत्त अज्ञात अछि। भारतीय परम्परा पतंजलि कें महाभाष्य, योगसूत्र ओ चरकसंहिता (आयुर्वेद ग्रन्थ) क प्रणेता मानैत छथि। प्रायः पतंजलि शुगवंशी राजा पुष्यमित्रक समकालीन छलाह। पुष्यमित्रक समय दोसर शताब्दी ई० पू० छल। एहि हेतु पतंजलिक समय सेहो वैह होयबाक चाही।

पतंजलि व्याकरण विषयक कोनो मौलिक ग्रन्थ नहि लिखलनि, मात्र पाणिनिक सूत्रक भाष्य कयलनि। ई कात्यायनक वार्त्तिकक खंडन कऽ ई प्रमाणित कऽ देलनि जे जे बात वार्त्तिक मे कहल गेल अछि, ओ सूत्र सँ आक्षिप्त भऽ जाइत अछि। एहि हेतु वार्त्तिकक कोनो आवश्यकता नहि अछि। महाभाष्यक अन्यतम विशेषता थिक ओकर सरल, प्रांजल अभिव्यंजना। महाभाष्य पर अनेक टीका लिखल गेल अछि।

कौमुदी-ग्रन्थ—पाणिनिक सूत्रक्रम कें परिवर्तित करैत भट्टोजि दीक्षित सूक्ष्म ओ सरल कौमुदी-ग्रन्थ लिखलनि। अपन सिद्धान्त कौमदी पर ओ स्वयं मनोरमा लिखलनि। सिद्धान्त-कौमदीक विस्तार कें देखि वसुराज मध्य कौमदी ओ लघु सिद्धान्त कौमदी प्रस्तुत कयलनि। व्याकरणक अध्ययन लघुकौमदी सँ आरम्भ होइत अछि आ सिद्धान्त-कौमुदी पर जा कऽ समाप्त होइत अछि।

पाणिनिक व्याकरणक प्रेरणा सँ भर्तृहरि, नागेश भट्ट, कौंडभट्ट आदि विद्वान लोकनि अनेक व्याकरण ग्रंथक रचना कयलनि।

पाली-व्याकरण

प्राकृत भाषाक विकास क्रममे विद्वान लोकनि व्याकरणक आवश्यकताक अनुभव कयलनि। एहि दृष्टिसँ व्याकरण लिखल गेल।

वररुचि—वररुचिक 'प्राकृत-प्रकाश' प्राकृत भाषाक प्राचीनतम ग्रंथ थिक। एहिमे व्याकरणक १२ अध्याय अछि। प्रथम नओ अध्यायमे महाराष्ट्री प्राकृतक निरूपण अछि। शेष तीन अध्यायमे वैशाली, मागधी ओ शौरसेनीक चर्चा अछि।

हेमचन्द्र—हेमचन्द्रक ज्ञान व्यापक छलनि। ओ अनेक ग्रन्थ लिखलनि जाहिमे 'शब्दानुशासन' व्याकरण प्रमुख अछि! एहि ग्रन्थक नाम 'सिद्ध हेमचन्द्र' वा 'सिद्धहैम' सेहो अछि। एहि ग्रंथक सात अध्यायमे संस्कृत व्याकरण निरूपित अछि आ एक अध्यायमे प्राकृत तथा अपभ्रंशक। हुनक ग्रंथक भाषावैज्ञानिकहिता नहि ऐतिहासिक महत्त्व सेहो अछि।

मार्कण्डेय—हिनक लिखित 'प्राकृत-सर्वस्व' मे भाषा, विभाषा ओ अपभ्रंशक तीन श्रेणी अछि। महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, आवन्ती ओ प्राच्याक गणना भाषाक अन्तर्गत कयलनि अछि; विभाषामे शाकारी, शाबरी चाण्डाली, आभीरी ओ ढक्कीक चर्चा कयलनि अछि आ अपभ्रंशमे नागर व्राचड़ ओ उपनागरक।

एकर अतिरिक्त पालिक व्याकरण लिखनिहारमे कच्चायन ओ मौद्गलायन प्रमुख छथि। व्याकरणेतर शास्त्रमे काव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, मीमांसा आदि उल्लेखनीय अछि।

———

आधुनिक कार्य

जे भाषावैज्ञानिक कार्य आधुनिक युगमे भारतमे यूरोपीय प्रभावक फलस्वरूप भेल अछि, ओकर संक्षिप्त परिचय एतय दऽ रहल छी।

(१) बिशप काल्डवेल (१८१४-१८९१ ई०)—काल्डवेलक 'द्राविड़ भाषाक तुलनात्मक व्याकरण' १८५६ ई० मे प्रकाशित भेलनि। तुलनात्मक भाषाविज्ञानक ठोस कार्य करबाक कारणे हिनक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।

(२) जान बीम्स (१८५५-१८७८) ई० सारन जिलाक १८५५ ई० मे कलक्टर छलाह। हिनक लिखल भारतीय आर्यभाषाक तुलनात्मक व्याकरण, जे तीन भागमे क्रमशः १८७२, १८७५, तथा १८७९ ई० मे प्रकाशित भेल। एहि व्याकरणमे हिन्दी, बंगला, उड़िसा, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिन्धी आदि व्याकरणक तुलनात्मक ओ ऐतिहासिक अध्ययन अछि।

(३) डी ट्रम्प (१८७२-१८७३) ई १८७२ ई० मे संस्कृत, प्राकृत एवं सम्बद्ध भारतीय भाषासँ सिन्धी भाषाक व्याकरण तुलना प्रकाशित कयलनि। सन् १८७३ ई० मं हिनक पश्तो-व्याकरण सेहो प्रकाशित भेल।

(४) एस० एच० केलाग—केलाग पादरी छलाह। ई० १८७६ मे अपन हिन्दी भाषाक व्याकरण प्रकाशित करबौलनि। हिनक व्याकरण कतेको दृष्टिकोणसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

(५) डा० सर रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर (१८७७)—विल्सन फिलॉलोजिकल लेक्चर नामसँ भंडारकर १८७७ मे बम्बई विश्वविद्यालय मे सात व्याख्यान देलनि जे १८१४ ई० मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। भंडारकर नवीन दृष्टिसँ भारतीय भाषा पर विचार प्रकट कयलनि जे कतेको दृष्टिकोणे महत्त्वपूर्ण अछि।

(६) डा० रुडल्फ हार्नली (१८४१-१९१८) भोजपुरी हिनक प्रमुख कार्य क्षेत्र छल। हिनक 'पूर्वी हिन्दीक व्याकरणक अन्य गौड़ीय भाषाक संग तुलना' नामक ग्रंथ १८८५ ई० मे प्रकाशित भेलनि।

(७) सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (१८८३-१९२७)—ई अपन सम्पूर्ण जीवन बिहारमे बितौलनि। भारतीय भाषा पर कार्य कयनिहार विदेशी विद्वानमे हिनक स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि। ग्रियर्सन आई० सी० एस० भऽ कऽ बिहारमे आयल छलाह आ शासन कार्य करैत ई भारतीय भाषाक अध्ययन कयलनि। हिनक पहिल पुस्तक छल—'बिहारी भाषाक सात व्याकरण' (१८८३-८७)। मुदा ग्रियर्सनक कीर्तिक आधारस्तम्भ थिक 'भारतीय भाषाक सर्वेक्षण' नामक महान ग्रन्थ जे सत्रह पैघ-पैघ जिल्दमे प्रकाशित अछि। एहि कृतिमे ३३ वर्षक दीर्घकाल लागल। एहिमे भारतक सभ भाषा ओ बोलीक उदाहरण सहित व्याकरण विद्यमान अछि। आरंभक विस्तृत भूमिकामे भारतीय आर्यभाषाक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत कयल गेल अछि। १९०६ तथा १९११ ई० मे पिशाच भाषा ओ काश्मीरी भाषा पर सेहो हिनक एक ग्रंथ दू भागमे प्रकाशित भेल।

(८) हेमैन स्टाइन्थाल —(१७२५-१८९६)—भाषाविज्ञानक नव इतिहासमे हेमैन स्टाइन्थालक स्थान अग्रगण्य अछि। ई व्याकरण ओ भाषा-विज्ञानक संग-संग तर्कशास्त्र ओ मनोविज्ञानक सेहो पण्डित छलाह। ई एहि बात पर जोर देलनि जे भाषाविज्ञानक अध्ययनमे मनोविज्ञानक सन्निवेश आवश्यक अछि। हिनक प्रथम ग्रंथ १८५५ ई० मे प्रकाशित भेल, जाहिमे व्याकरणक पारस्परिक सम्बन्धक विवेचन ओ मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र तथा व्याकरणक पारस्परिक सम्बन्धक विवेचन कयल।

(९) ब्लूमफील्ड (१८८७-१९४९)—अमरीकी विद्वान ब्लूफील्डकें प्रायः लोक आधुनिक भाषाविज्ञानक पिता कहैत छथि। हिनक प्रसिद्ध पुस्तक 'लैंग्वेज' १९३३ ई० मे प्रकाशित भेल। वर्णनात्मक भाषाविज्ञानक व्यवस्थित आधारशिला रखबाक श्रेय एही पुस्तककें अछि।

(१०) दीनबन्धु झा—पण्डित दीनबन्धु झा मधुबनी जिलाक इसहपुर ग्राममे १८७४ ई० मे जन्म लऽ १९६० ई० मे स्वर्गीय भेलाह। हिनका द्वारा रचित ग्रंथ मिथिला भाषा विद्योतन, शब्दकोष, धातुपथ आदि ग्रंथक भाषाविज्ञानक दृष्टिकोणसँ महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।

(११) गोविन्द झा—महावैयाकरण पं० दीनबन्धु झाक बालक पं० गोविन्द झाक जन्म १९२३ ई०मे मधुबनी जिलाक इसहपुर ग्राममे भेलनि। 'मैथिलीक उद्गम ओ विकास' तथा 'मैथिली भाषाक विकास' पुस्तकक मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। संगहि 'मैथिली व्याकरण' तथा 'भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण'क सेहो भाषाशास्त्रक दृष्टिकोणसँ महत्त्वपूर्णस्थान अछि। एकर अतिरिक्त हिनक बहुतो मौलिक एवं सम्पादित ग्रंथ सभ प्रकाशित अछि। एहन भाषावेत्ता पर मिथिला वासीकें गौरव छनि।

(१२) सुभद्र झा—डा० सुभद्र झाक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत नाग-दह ग्राममे १९११ ई० मे भेलनि। १९४४ ई० मे पटना विश्वविद्यालयसँ 'फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज' शोध-प्रबन्ध पर डी-लिट्क उपाधिसँ विभूषित भेलाह। भाषाविज्ञानक दृष्टिकोणसँ एहि शोध प्रबन्धक महत्त्व-पूर्ण स्थान अछि।

यूरोप मे भाषा-वैज्ञानिक विकास

यूरोपीय सभ्यता ओ संस्कृति, साहित्य ओ विज्ञानक उद्गम-स्थल ग्रीस अछि।

१. सुकरात (४६९ ई० पूर्व सँ ३६९ ई० पूर्व)—सुकरातक नाम यूरोपीय विचारक मे अग्रगण्य अछि। हिनक मान्यता छलनि जे शब्द ओ अर्थक सम्बन्ध नैसर्गिक नहि भऽ कऽ रूढ़ होइत अछि। घोड़ा कें घोड़ा तथा हाथी कें हाथी कहबा में कोनो नैसर्गिक सम्बन्ध नहि अछि अपितु ई दुनू यादृच्छित अछि। शब्द ओ अर्थक सम्बन्ध प्राकृतिक ओ नित्य होइत तँ सम्पूर्ण विश्वक भाषा एकहिटा होयत। मुदा अंग्रेजी मे घोड़ा नहि कहि कऽ 'हॉर्स' कहैत छी आ जर्मन मे 'हार्स' नहि अपितु 'प्फेर्द' कहैत छी आ फ्रांसीसी मे 'शव्हाल'। एहि सँ सिद्ध होइत अछि जे शब्द ओ अर्थक सम्बन्ध मात्र रूढ़ अछि।

(२) प्लेटो (४२९ ई० पू० सँ ३४७ ई० पू०)—सुकरातक शिष्य

प्लेटो महान विचारक छलाह। अपन गुरुक विचार कें ओ प्रचार-प्रसार कएलनि। हिनक विचार छलनि जे शब्द ओ अर्थ मे नैसर्गिक सम्बन्ध होइत अछि। यद्यपि भाषा-सम्बन्धी विचार हुनक मूल विषय नहि छल, तैयो ओ 'सोफिस्ट' ओ 'क्रेटिलस' मे भाषा सम्बन्धी कतेको महत्त्वपूर्ण बात प्राप्त भऽ जाइत अछि। उदाहरणक लेल ओ ग्रीक ध्वनिक वर्गीकरण कयलनि।

(३) अरस्तू (३८५ ई० पू० सँ ३२२ ई० पू०) – अरस्तूक 'पोयटिक्स' ग्रन्थ यूरोप मे काव्य-शास्त्रक आदि ग्रन्थ अछि। एहि मे ओ भाषा संबंधी वैज्ञानिक दृष्टिक परिचय देलनि। एहि मे भाषाविज्ञानक निम्नलिखित तत्त्व प्राप्त होइत अछि—

(१) शब्द ओ अर्थक सम्बन्ध रूढ़ होइत अछि।

(२) अरस्तू सर्वप्रथम संज्ञा, क्रिया, कारक, लिंग आदिक विभाजन कयलनि।

(३) वाक्य मे उद्देश्य ओ विधेयक भेद कें देखयबाक श्रेय अरस्तू कें देल जाइत छनि।

अरस्तूक कार्य कें ग्रीक-वैयाकरण आगां बढ़ौलनि। हिनका बाद दियोनिसियस थ्रेक्स, स्टोइक आदि विद्वानक भाषा-विज्ञान सम्बन्धी कार्य प्रशंसनीय अछि।

जागृति काल

आधुनिक युगक पूर्व जागृति-काल (Renaissance) कहल जाइत अछि। एहि काल मे छापाखानाक सुविधा भऽ जयबाक कारणे प्राचीन ज्ञानक पुनरावृत्ति दिस लोकक ध्यान गेल।

(१) रूसो – रूसो अपन सामाजिक अनुबन्ध नामक ग्रन्थ मे ई प्रतिपादित कयलनि जे मानव पारस्परिक विचार-विनिमय सँ भाषा बनल। आरम्भ मे मनुष्य एकत्रित भऽ कऽ सांकेतिक नाम गढ़लनि आ एहि तरहेँ समाज द्वारा भाषाक उत्पत्ति भेल।

(२) कोंदिलाक – ई सिद्ध कयलनि जे भाषाक उत्पत्ति भावावेगक कारण भेल।

(३) योहान गोतफ्रीद हर्डर – ई भाषाक उत्पत्तिक सम्बन्ध मे प्राचीन मतक खण्डन कयलनि। धार्मिक लोक मानैत छलाह जे भाषा ईश्वरीय देव

अछि तकर खण्डन करैत ई सिद्ध कयलनि जे भाषा मनुष्यक आवश्यकताक अनुसार स्वतः बनैत गेल आ जेना-जेना समाज शब्द, वाक्य आदि कें स्वीकार करैत गेल, प्रयोग बढ़ैत गेल।

(४) कोर्डो—सन् १७६७ ई० मे फ्रांसीसी पादरी कोर्डो भारत मे धर्म प्रचारक हेतु अयलाह। ओ एतय संस्कृत सँ एतेक प्रभावित भेलाह जे ओ अपन एक लेख मे संस्कृतक किछु शब्द सँ ग्रीक, लैटिन, फ्रैंचक शब्दक तुलना कयलनि। ओ पश्चिमक विद्वानक ध्यान संस्कृत दिस आकर्षित कयलनि।

(५) सर विलियम जोन्स—ई कलकत्ता हाईकोर्टक चीफ जस्टिस छलाह। ई अपन संस्कृत-अध्ययनक फलस्वरूप १७९६ मे रायल एशियाटिक सोसाइटीक स्थापना करैत संस्कृतक महत्त्व स्वीकार कयलनि। ई कहलनि जे संस्कृत, ग्रीक ओ लैटिन सँ सेहो बेसी पूर्ण अछि।

(६) येनिश—१७९४ ई० मे बर्लिन अकादमी एक पुरस्कारक घोषणा कयल जकर विषय छल 'पूर्ण भाषाक आदर्श आ यूरोपक प्रसिद्ध भाषाक ओहि आदर्श पर परीक्षण'। ई पुरस्कार येनिश कें भेटलनि। येनिश भाषाक सम्पन्नता, शक्ति, स्पष्टता ओ माधुर्यक आधार पर आदर्श-भाषाक विवेचन प्रस्तुत कयने छलाह। अपन निबन्ध मे येनिश निम्नलिखित मान्यता रखने छलाह—

(१) भाषा मे मनुष्यक सम्पूर्ण बौद्धिक एवं नैतिक सार अभिव्यक्त रहैत अछि। एहि हेतु जंगलीक भाषा स्थूल ओ रूक्ष होइत अछि आ सभ्यक कोमल ओ परमार्जित।

(२) सम्प्रेषणक रूप मे भाषाक सर्वमान्यता यैह अछि जे क्षण-विशेषक माँग ओ आवश्यकताक अनुसार ओ हमर भाव एवं विचारक अभिव्यक्ति कऽ दैत अछि।

(३) भाषामे चारि आवश्यक गुण अछि—(क) सम्पन्नता, (ख) ऊर्जा, (ग) स्पष्टता आ (घ) सुश्राव्यता।

४. येनिश इहो प्रतिपादन कयलनि जे कोनो भाषामे उत्कृष्ट साहित्यक भेनाइ आकस्मिक वस्तु अछि।

एहि तरहेँ यूरोप मे भाषा-विज्ञानक अध्ययनक आधार-भूमिक निर्माण १२०० ई० धरि सम्पन्न भऽ चुकल छल।

अर्वाचीन

एहि कालक प्रमुख कार्यकर्त्ताक संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित अछि—

(१) फ्रीदरिख फोन श्लेगेल (१७७२-१८२९)—श्लेगेल जर्मनीक रहनिहार छलाह। ई संस्कृत शब्दक ग्रीक, लातिन एवं जर्मनक शब्द सभ सँ समता देखि प्रभावित भेलाह। सन् १७०८ मे भारतीय भाषा ओ ओकर ज्ञान (On the language aad the wisdom of indians) नामक ग्रंथ लिखलनि। एहि ग्रंथ द्वारा ई सिद्ध कऽ देलनि जे संसारक अनेक भाषा संस्कृतसँ सम्बद्ध अछि।

एतबे नहि, अपितु श्लेगेल कहलनि जे भाषाक उत्पत्तिक कोनो आधार नहि मानल जा सकैत अछि। एहि तरहेँ श्लेगेल भाषाविज्ञानक इतिहासमे श्रेष्ठ स्थानक रखैत छथि।

(२) आदोल्फ श्लेगेल (१७६७-१८४५)—भाषाक वर्गीकरणक सम्बन्ध मे आदोल्फ श्लेगेलक धारणा अधिक स्पष्ट अछि। ई फ्रीदरिख श्लेगेलक अनुज छलाह। भाषाक सम्बन्धमे ई तीन आधार प्रस्तुत कयलनि—

(१) ओ भाषा जाहिमे व्याकरण नहि अछि।

(२) ओ भाषा जाहिमे प्रत्ययक योग होइत अछि।

(३) ओ भाषा जाहिमे विभक्तिक योग होइत अछि।

विभक्ति-योग भाषाकेँ दू वर्गमे बटलनि -

(क) संयोगात्मक ओ (ख) वियोगात्मक।

(३) रास्मस रास्क (१७८७-१८३२) – ई डेनमार्कक निवासी छलाह। हिनक दृष्टिकोण सूक्ष्म, वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक छल। सन् १८११ ई० मे आइसलैंडक व्याकरण लिखलनि तथा १८१८ मे प्राचीन नार्सक उत्पत्ति पर एक प्रबन्ध लिखलनि। हिनका अनुसार भाषामे शब्दक अपेक्षा व्याकरणक रूप अधिक महत्त्व रखैत अछि, किएक तँ शब्द दोसरहु भाषासँ ग्रहण कयल जा सकैत अछि मुदा व्याकरणक रूप नहि बदलैत अछि। ई भारत आबि कऽ बतौलनि जे द्रविड़ परिवारक भाषा संस्कृतसँ सर्वथा भिन्न अछि।

(४) जैकोब ग्रिम (१७८५-१८६३)—जैकोब ग्रिम अपन सम्पूर्ण जीवन भाषाविज्ञान पर लगौलनि। यद्यपि ओ जर्मनक एक वकील परिवारमे जन्म लेने छलाह आ स्वयं कानूनक शिक्षा प्राप्त कयने छलाह तथापि भाषा-

विज्ञानक अन्वेषणमे लागि गेलाह। सन् १८१९ ई० मे हुनक जर्मन भाषाक व्याकरण (Deutsche Grammatik) प्रकाशित भेल। एहि मे सभ सँ महत्त्वपूर्ण वर्ण परिवर्त्तन प्रकरण अछि। हिनक नियमानुसार—

संस्कृत	लैटिन	जर्मन
फ	प	व
थ	त्	प

आदि मे सेहो अन्तर अछि।

रैस्कक व्याकरणसँ नियम बनयवाक प्रेरणा ग्रहण कयल। आगाँ जा कऽ नियम एतेक प्रसिद्ध भऽ गेल जे ग्रिम-नियम नामसँ आइ धरि प्रसिद्ध अछि।

(५) फ्रांत्स बोप (१७९१-१८६७)—ई रास्क ओ ग्रिमक समकालीन छलाह। हिनक प्रमुख क्षेत्र तुलनात्मक भाषाविज्ञान छलनि। ई ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता, जर्मन ओ संस्कृतक एहन तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कयलनि जे भाषाविज्ञानक जनक कहबऽ लगलाह। हिनक प्रथम पुस्तक 'धातु-प्रक्रिया' प्रकाशित भेल। १८२० मे एहि पुस्तकक परिवर्द्धित संस्करण "संस्कृत, ग्रीक, लातिन ओ ट्युटॉनिक भाषाक विश्लेषणात्मक तुलना" नामसँ बहार भेल। बोपक अमरताक आधार हुनक यैह कृति थिक।

(६) मैक्समूलर (१८२३-१९००) - मैक्समूलर जर्मनीक निवासी. रहितहुँ आजीवन इंगलैण्डमे रहलाह। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयमे संस्कृतक अध्यापक रूपमे ओ पर्याप्त यश अर्जित कयलनि आ इंगलैण्डमे संस्कृतज्ञ लोकनिक एक परम्परा स्थापित कयलनि। जर्मन भाषाक अनुसार हुनक नामक शुद्ध उच्चारण 'माक्स म्वेलर' होइत अछि, मुदा मैक्समूलर अधिक प्रसिद्ध भऽ चुकल अछि। मैक्समूलरक एक पुस्तकक नाम अछि—"भारत हमरा की सिखौलक अछि"। सायण-भाष्य-समन्वित ऋग्वेदक प्रथम मुद्रित संस्करण मैक्समूलरक सम्पादकत्वमे इंगलैण्डमे प्रकाशित भेल, जाहिमे ओ अपनाकेँ 'शर्मण्य देशवासी मोक्षमूलर भट्ट' कहलनि अछि। ई हुनक संस्कृतक प्रति गम्भीर निष्ठाक परिचायक थिक। १८६१ ई० मे मैक्स-मूलर भाषाविज्ञान पर व्याख्यान देलनि जे बादमे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।

मैक्समूलर भाषा वैज्ञानिकक अतिरिक्त दार्शनिक ओ साहित्यिक सेहो छलाह।

(७) विल्हेल्म फान हमबोल्ट (१७६७-१८३५)—राजनीतिज्ञ रहितहु हिनक रुचि भाषाविज्ञानक अध्ययन दिस छलनि। भाषाविज्ञानक क्षेत्र हुनक मौलिक मान्यता समादृत ओ गृहीत भेल।

(१) हमबोल्ट भाषाकें एक अबाध कार्य कहलनि।

(२) भाषा अपेक्षाकृत कम वा अधिक भऽ सकैत अछि, मुदा भाषा-वैज्ञानिक अध्ययनक लेल सभ भाषाक समान महत्त्व अछि।

(३) भाषाविज्ञानक लेल विभाषा सेहो महत्त्वपूर्ण अछि।

(४) भाषाक ऐतिहासिक अध्ययन परमावश्यक अछि।

(५) भाषाक वर्गीकरणक सम्बन्धमे हुनक मत छलनि जे चीनी संसारक भाषासँ पृथक राखल जयबाक चाही, किएक तँ ओहिमे व्याकरणक रूप नहि अछि। संसारक अन्य भाषाक तीन भेद—श्लिष्ट, अश्लिष्ट ओ प्रश्लिष्ट अछि।

(६) भाषा जातीय राष्ट्रीय चरित्रक प्रतीक थिक।

(७) जावाक कवि-भाषाक अध्ययन हमबोल्टक मान्य कृति थिक।

भाषाविज्ञानक वर्त्तमान प्रवृत्ति सम्प्रति भाषाविज्ञानक विस्तार एतेक तेजी सँ भऽ रहल अछि जे विज्ञानहि जकाँ एकरहु प्रयोगशाला सभ बनाओल गेल अछि। एक-एक शाखाक क्षेत्र एतेक विस्तृत भऽ गेल अछि जे दोसर शाखाक परिज्ञान सहायक रूपमे अधिगत भऽ सकैत अछि। सम्प्रति निम्नलिखित शाखामे कार्य भऽ रहल अछि—

(१) वर्णनात्मक भाषाविज्ञान।
(२) विभाषाविज्ञान।
(३) तानविज्ञान।
(४) स्वनिमविज्ञान।
(५) भाषिक भूगोल।

आजुक युगमे भाषाविज्ञानक क्षेत्र विस्तृत भऽ गेल अछि। ओकर विस्तृत विवरण एतय प्रस्तुत करब दुस्साध्य अछि।

व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति शब्दक अर्थ होइत अछि विशेष उत्पत्ति। एहि अन्तर्गत शब्दक मूलक अध्ययन कयल जाइत अछि। जाहिमे रूप, ध्वनि ओ अर्थक ध्यान

राखल जाइत अछि। एहि तीनू पर ध्यान नहि रखलासँ भ्रमपूर्ण परिणाम होयत।

मैथिली भाषा संस्कृतसँ निःसृत भाषा थिक। कालक्रमे संस्कृतसँ प्राकृत, प्राकृतसँ अवहट्ट ओ पुनः मैथिलीक निर्माण भेल। संयुक्ताक्षर प्रयोगाधिक्यक कारणें कष्टसाध्य छल। ओ उच्चारणसँ मजि, चिकनाय लोक कंठक अनुकूल बनि गेल। फलतः मूल शब्दकें जानब कठिन भऽ गेल अछि। संगहि अरबी, फारसी आदिक अनेको शब्द मैथिलीमे एहि रूपें प्रयुक्त भेल अछि जे ओ मैथिलीसँ भिन्न बुझबामे नहि अबैत अछि। अतएव लोक भाषामे अति प्रचलित अनेक शब्द अछि जकर मूल बहुत किछु अज्ञात भऽ गेल अछि। मात्र अन्दाज ओ ध्वनिक सादृश्यक आधार पर एहन शब्दक पता लगाओल जा सकैछ। किछु शब्दक ऐतिहासिक महत्त्व सेहो अछि जे प्रायः विदेशी शब्दक प्रभावसँ बनल अछि तथा ओकर प्रयोग लोकभाषामे भऽ रहल अछि। एहि विषयक विस्तृत विवेचन एतय नहि कऽ किछु प्रचलित शब्दक ऐतिहासिक महत्त्व ओ व्युत्पत्ति देल जा रहल अछि।

शब्दक अर्थतात्त्विक विकास

(१) ऊखरि—संस्कृतमे उलूखल काठक बनल ओहि कुण्डकें कहल जाइत अछि जाहिमे धान राखि कऽ कूटल जाइत अछि। मैथिलीमे लोकोक्ति 'ऊखरिमे मुँह देलहुँ तँ मूसराक कोन डर'—विपत्ति अयला पर ओकर प्रतीकार करबाक चाही। राजस्थानी, गुजराती, मराठीमे 'ऊखल' शब्द व्यवहृत होइत अछि। बंगलामे ऊखल, ऊखलि आ मैथिलीमे ऊखरि एही अर्थक लेल व्यवहृत होइत अछि।

(२) कहार—संस्कृत कंज+लंहार सँ एकर व्युत्पत्ति मानल जाइत अछि। संस्कृतमे काहारकः शब्दक व्यवहार क्षिविकादि लादविहार जातिक लेल भेटैत अछि। सम्प्रति कहार महफा ओ पालकी उठयबाक कार्य करैत छथि। शब्द पर विचार कयला पर अर्थादेश तथा अर्थविस्तार दुनू भेटैत अछि।

(३) किवाड़—संस्कृतक कपाटसँ किवाड़ शब्द बनल अछि।

(४) ढिल्ल—एहि शब्दक व्युत्पत्ति 'शिथिल' शब्दसँ लगाओल जाइत अछि मुदा शिथिलसँ 'ढिल्ल' शब्द नहि बनि सकैत अछि। किएक तँ ध्वनि विज्ञानक दृष्टिसँ शकारक लोप भऽ कऽ ओहि स्थान पर 'ढकार' नहि भऽ सकैत अछि। ई मैथिलीक अपन शब्द थिक।

(५) टाट—संस्कृतक तटसँ एकर व्युत्पन्न मानल जा सकैत अछि। मध्यकालमे टट्टर, टट्टी अर्थमे प्रयुक्त होइत छल। करचीसँ टाटक निर्माण होइत अछि। सम्प्रयी टाट शब्द मैथिलीमे बड़ प्रचलित अछि।

(६) ताग—संस्कृतक तनुविस्तारसँ तत, तंतु वा तार्कवसँ एहि शब्दक व्युत्पन्न मानल जा सकैत अछि। एहि शब्दक व्यवहार आधुनिक आर्यभाषा मे 'धागा'क अर्थमे प्रचलित अछि।

(७) भित्त—संस्कृतमे भितं शब्दक भाग, टुकरी वा दीवार अर्थ होइत अछि। शब्दमे अर्थविस्तार तथा अर्थादेश भेल अछि। गुजराती, मराठी, राजस्थानी, नेपाली, बंगाली, असमियामे मुख्यतः 'भींत' क अर्थ दीवार होइत अछि। मैथिलीमे सेहो 'भित्त' क अर्थ दीवार होइत अछि।

(८) अइपन ई तद्भव शब्द थिक जे संस्कृतक 'आलिम्पन'सँ निष्पन्न भेल अछि। एहिमे आ ह्रस्व (अ) भऽ गेल तथा 'ल' ओ 'म' ध्वनि लुप्त भऽ गेल। जाहिसँ अइपन शब्द बनि गेल। प्राचीन मैथिलीमे 'ल' क स्थान मे 'र' वा 'ड़' खूब देखल जाइत अछि, तेँ अरिपन वा अड़िपन सेहो प्रचलित अछि। क्यो-क्यो एकरा अहिफन (साँपक फन) सँ उद्भूत मानैत छथि तँ क्यो अरि (शत्रु) मे पन प्रत्यय लगा कऽ मानैत छथि, मुदा से सभ समीचीन नहि प्रतीत होइत अछि।

(९) अजबाड़ि—ई विदेशी शब्द थिक। एकर मूल थिक फारसी 'आजवा,' अर्थात् परदा कयनिहार स्त्रीगण, संकोचित महिलावर्ग, आंगनक स्त्रीगण। मैथिलीमे एकर सर्वाधिक प्रचलित प्रयोग सन्दर्भ अछि आंगन अजबाड़ि वा अजबाड़ल अछि। एकर प्राथमिक अर्थ छल 'आंगनमे संकोचित स्त्रीवर्ग छथि' तेँ पुरुषवर्गक प्रवेश-योग्य नहि अछि। सम्प्रति मैथिलीमे एकर विचित्रता ई अछि जे ई दू परस्पर विपरीत अर्थमे व्यवहृत भऽ रहल अछि। यथा आंगन अजबारि (रिक्त नहि) अछि तथा आंगन अजबारि (रिक्त) करू।

(१०) बकलेल—डा॰ जयकान्त मिश्र एकर मूल उर्दू वे अक्ल > बेकल केँ मानैत छथि। आन-आन विद्वान संस्कृत बकमे देशी 'लेल' प्रत्यय लगा केँ मानैत छथि। यथा—हंस ज्ञानक प्रतीक तहिना बक अज्ञानक प्रतीक ओ मूर्खताक मिलाऊ बुड़िबक। 'लेल' शब्द एहिना कतोक ठाम लगा कऽ वा प्रत्यय रूपमे भेटैत अछि—बुड़िलेल, ढहलेल, बकलेल।

(११) ताजी—तुर्की शब्द 'ताजिक' अर्थ कुकुर होइछ। मैथिलीमे सेहो

एहि अर्थमे 'ताजी'क प्रयोग होइत अछि। एकर तेज किंवा तेजसँ सम्बन्धित कोनो अन्य अर्थ नहि अछि।

(१२) जनि—ई सादृश्यद्योतक अव्यय थिक एवं प्राचीन मैथिलीमे सेहो भेटैत अछि; यथा नव जलधर तर संचर रे जनि बिजुरि रेह। एकर मूल संस्कृत क्रियापद जाने 'जनैत छी' थिक। अवधीमे एकर बदला जनु चलैत अछि, मुदा मैथिलीमे जनु निषेधार्थक थिक, सादृश्य अर्थक नहि; यथा—भँउहक कथा पूछह जनु।"

(१३) चाइं एकर अर्थ मिथिला भाषामे उचक्का होइत अछि। मुदा इहो 'राड़' ओ 'चुहार' जकाँ कोल समुदायक जाति-विशेष छल।

(१४) हल्लुक—एकर मूल थिक संस्कृत लघु+क; यथा—लघुक > लहुक > हल्लुक। एहिमे 'ल' तथा 'ह' ध्वनिक स्थान-विपर्यय भेल अछि। प्राचीन मैथिलीमे लहुक सेहो भेटैत अछि। 'ल' केँ द्वित्व स्वराघातक परिणाम थिक।

(१५) अएन-मएन—ई विदेशी शब्द थिक। एकर मूल थिक अरबी 'ऐन-ब-ऐन'। डा॰ जयकान्त मिश्र एकरा फारसी आईना—'दर्पण' एवं तकर ध्वन्यनुकरणात्मक द्विर्वचन सँ बनल कहने छथि, जे समीचीन नहि प्रतीत होइत अछि। एहिमे दुनू भाग न (नासिक्य ध्वनि) रहबाक कारण व नासिक्य (म) भऽ गेल अछि ओ स्वर-संकोच सेहो भेल अछि। एकर रूपान्तर एन-मेन ओ अन-मन सेहो प्रचलित अछि।

१६. अनामति—अमानत फारसी शब्दसँ बहरायल अछि जकर अर्थ सुरक्षित होइत अछि।

१७. अवर्जात—आयब+जात, एहिसँ अबर जात (अवर्जात) बनल अछि। जकर अर्थ होइछ 'आबाजाही' अर्थात् आएब ओ जाएब।' एतय लिंगगत ओ अर्थगत साम्य देखबामे अबैत अछि।

(१८) अपने—ई तद्भव शब्द थिक। एकर मूल थिक संस्कृत आत्मन्; संस्कृत अपभ्रंश अप्पण। शब्दक षष्ठ्यन्त रूप आत्मनः, प्राकृत अप्पणो, एकर प्रयोग आदर प्रदर्शित करबाक हेतु मध्यम पुरुष सर्वनामक बदला होइत अछि, मुदा विचित्रता ई जे क्रियापद उत्तम पुरुषक लगैत अछि, यथा-हम करैत छी, अपने करैत छी (तेँ करैत छह+आदर)। आब प्रश्न ई उठैत अछि जे अप्पण सँ अपने एकारान्त कोना भऽ गेल? प्रायः ए तृतीया

विभक्तिक अवशेष थिक ओ मूलतः एकर प्रयोग कर्मवाच्यमे तृतीयान्त कर्ताक संग होइत छल; यथा—अपने भोजन कएल जाए - अपनेसँ भोजन कएल जाए। बादमे ई एकारान्त रूप तोहेँ, हमे जकाँ प्रथमान्त बुझि प्रयुक्त होबऽ लागल।

१९. अइनि—मिथ्याभिमान वा अधिकार द्योतक बात, छल - प्रपंच वा तर्कक अर्थमे फारसीक 'आइन' (कानून) शब्दसँ बहरायल अछि। बंगलामे 'आइन' शब्द कानून अर्थमे मूल रूपमे अद्यावधि विद्यमान अछि।

२०. अओकाति—ई विदेशी शब्द थिक। एकर मूल थिक अरबी वक्त 'समय' शब्दक बहुवचन औकात। तकारान्त अरबी शब्द मैथिलीमे इकारान्त भऽ जाइछ; यथा—मेहनति, इज्जति, रैयति आदि। तहिना इहो इकारान्त भऽ गेल अछि। एहिमे अर्थ परिवर्तन सेहो भेल अछि। कारण ई अछि जे एकर मूल वक्त शब्दक अर्थ थिक 'समय', मुदा अओकातिक अर्थ थिक 'क्षमता वा विभव'। एहि अर्थपरिवर्तनक धारा थिक—काल शासनकाल प्रभुत्वकाल—प्रभुत्व—सामर्थ्य।

२१. अगिलाहि—एकरा अज्ञातमूलक अव्युत्पन्न देशज शब्द कहि सकैत छी। ई मात्र मैथिलीमे पाओल जाइत अछि। एकर अन्तमे स्त्री प्रत्यय 'इ' लागल अछि। पुलिंग रूप अगिलह थिक। एकर अर्थ थिक अति चंचल वा उकाठी। ई जखन विशेषणसँ संज्ञा भऽ प्रयुक्त होइत अछि तखन दीर्घान्त अगिलही भऽ जाइछ। आब एहि शब्दक प्रचलन उठल जा रहल अछि। कुमार गंगानन्द सिंह 'अगिलही' उपन्यास लिखलनि। एहि कारणे ई शब्द सम्प्रति जीवित अछि। कतेको विद्वान समस्त शब्दक मूल संस्कृतमे देखबाक आग्रही छथि। ओ सभ एकरा तद्भव शब्द मानि एकर मूल संस्कृत अग्निलभ 'आगि पकड़निहार' कहि सकैत छथि। एहिसँ मिलैत-जुलैत शब्द अछि अगिमुत्तू—आगिलेसू।

२२. आओर—ई तद्भव शब्द थिक। एकर मूल थिक संस्कृत अपर > अवर > अओर > आओर। प्राचीन मैथिलीमे अवर शब्द भेटैत अछि; यथा—'अवर अइसन देपु' (वर्णरत्नाकर)। एकरे संकुचित रूप प्राचीन मैथिलीमे अओ भेटैछ, 'अओ कत कहब माधुरि वानी' (विद्यापति)। सम्प्रति औरो, आर चलैत अछि। एहिमे सेहो 'र' क लोप कऽ केवल आ सेहो चलैत अछि। एहिना नेपालीमे र चलैत अछि, 'पिता र पुत्र'। फलस्वरूप एके

२३. अहाँ—ई मध्यमपुरुष सर्वनाम आदर अर्थक प्रतिस्थानी थिक, मुदा आश्चर्य जे एहिमे क्रियापद उत्तमपुरुषक लगैत अछि; यथा—हम पढ़ैत छी, अहाँ पढ़ैत छी। एकर मूलक विषयमे विद्वान सभमे मतैक्य नहि। एक विद्वान एकर मूल संस्कृतक आयुष्मान् मानैत छथि—अहाँ < आहाँ < आयसभा < आयुष्मान। अन्य विद्वान् संस्कृत अहकम्‌कें एकर मूल कहने छथि, जे उत्तमपुरुष क्रियापते लगैत देखि तँ समीचीन बुझि पड़ैत अछि, मुदा अर्थक दृष्टिसँ असंगत लगैत अछि। वस्तुतः अहाँ शब्द निकट निर्देशक सर्वनाम 'ई' क स्थानार्थक क्रियाविशेषण थिक, जेना—कहाँ, तहाँ, जहाँ आदि। विशेष आदर देखयबाक लेल आदरणीय व्यक्तिक तात्पर्य हुनक सवारी ओ स्थानक प्रयोग कतोक भाषामे प्रचलित अछि, जेना—पत्नीक तात्पर्य आँगनमे, आँगनसँ इत्यादि। तहिना 'अपने' अर्थमे एहाँ (>अहाँ) 'एहिठाम' शब्द चलल। एहिमे क्रियापद उत्तमपुरुष किएक लगैत अछि से अनुसन्धानक विषय थिक।

२४. अजमाएब—ई विदेशी शब्द थिक। एकर मूल थिक फारसी आजमाइश शब्दक आधार आजमा। क्रियापदमे विदेशी विरले अबैत अछि; मैथिलीमे सम्भवतः दुटा एहन क्रियापद अछि, एक इएह आ दोसर क्रियापद।

२५. अड़ाँच वा अणाच - ई अज्ञातमूलक अव्युत्पन्न देशी शब्द थिक। एकर अर्थ थिक एक प्रकारक बन्धन किंवा तदुपयोगी मोट डोरी। डा० जयकान्त मिश्रक कथन अछि जे ई शब्द अट् (अटकायब) एवं अच् (ऐंचब) केँ मिला कऽ बनल अछि। मुदा ई हृदयग्राह्य नहि लगैत अछि।

२६. कोंखि वा कोइख—कष्ट कल्पना कएने कुक्षि 'पेट' शब्दसँ एकर निष्पन्न संभावित बुझि पड़ैत अछि। एहीमे अर्थपरिवर्त्तन भेल अछि - पेट >पेटक समीपस्थ वस्त्र। एहिसँ मिलैत-जुलैत दोसर शब्द अछि कोँखि वा कोखि 'गर्भ', जकर मूल स्पष्टतः कुक्षि शब्द थिक।

२७. कोरब वा कोड़ब—एकर मूल स्पष्ट नहि अछि। एहि हेतु एकरा देशज शब्द कहल जा सकैत अछि। मुदा पाणिनिक धातुपाठमे एकटा धातु अछि कुट् जकर अर्थ तोड़ब, खण्ड खण्ड करब कहल गेल अछि। एकर प्रेरणार्थक रूप कोटयति होइत अछि ओ से एहि कोड़ब शब्दक मूल भऽ सकैत अछि।

२८. कछिआ—ई संस्कृत कन्या शब्दक अर्द्धतत्सम रूप थिक। वैदिक [illegible] कन शब्दक अर्थ 'उम्रमे छोट' होइत छल,

जकरा तुलनावाचक रूप संस्कृतमे कनीयस् चलैत अछि (ओ तकर विपरीतार्थक यवीयस् थिक)। अतएव कन्या शब्दक मूल अर्थ "छोट वयसवाली" छल। सम्प्रति मैथिलीमे कनियांक अर्थ पुत्री वा नववधू होइत अछि।

२९. कमार – ई संस्कृत कमरि शब्दक तद्भव रूप थिक। वैदिक साहित्य मे कमरि शब्द कारीगर अर्थ मे अति प्रख्यात अछि ओ से अर्थ कमार शब्द मे अद्यपर्यन्त सुरक्षित अछि। पछाति एहि अर्थमे कर्मकार शब्द सेरो चलऽ लागल, मुदा कर्मकार ओ कर्मकर शब्दक अर्थ सामान्य मजदूर होइत अछि, तें कमार शब्दक मूल कर्मकार कें नहि मानि वैदिक कर्मार कें मानव समीचीन लगैत अछि।

३०. कूरी – मुण्डा भाषाक शब्द, जकर अर्थ बीसक समूह होइछ। मैथिली मे एकर अर्थ होइत अछि ढ़ेर, राशि ना अंश।

३१. के –प्रश्नवाचक सर्वनाम थिक, जे संस्कृत कः सँ उद्भूत भेल अछि। मागधी प्राकृत मे कर्ता मे 'ए' लगाओल जाइत छल, शौर सेनी मे 'ओ'। तदनुसार कः शब्द मैथिली मे के भऽ गेल एवं शौर सेनी उद्भूत सँ हिन्दी आदि मे को।

३२. कीनल—ई कीन धातु मे ल प्रत्यय बनल भूतकृदन्त रूप थिक। कीन धातुक मूल थिक संस्कृत क्रीणाति इत्यादिक क्रोणा।

३३. खीर—ई तद्भव शब्द थिक। एकर मूल थिक संस्कृत क्षीर 'दूध' अतएव एहि मे अर्थपरिवर्तन भेल अछि – दूध—दूध मे रान्हल चाउर।

३४. खोंइछ – ई देशज शब्द थिक। कारण जे एकर कोनो मूल लक्षित नहि होइछ।

३५. गाछ – ई देशज शब्द थिक, कारण एकर मूल अज्ञात अछि। संस्कृत-कोश मे जे वृक्ष अर्थ मे गच्छ शब्द अछि से हालक थिक ओ देशज शब्द गाछक आधार पर गढ़ल संस्कृत शब्द थिक।

३६. चालि—ई चल धातु सँ बनल भावार्थक कृदन्त शब्द थिक। एकर व्युत्पन्यर्थ भेल चलब। मुदा एकर एक अर्थ आरो अछि आचरण, व्यवहार ओ गतिविधि।

३७. चारि—ई संस्कृत चत्वारि सँ उद्भूत तत्सम शब्द थिक सामान्य नियमक अनुसार चत्तारि होमबाक चाही, मुदा अति प्रचलित होयबाक कारणे एहि मे व्यंजनलोप अधिक भेल अछि।

३८. शिव-शिव—मूलतः ई महादेवक नाम थिक, मुदा प्राचीन मैथिली मे एकर प्रयोग कोनो अनिष्ट बात सँ उत्पन्न दुःख किंवा घृणा व्यक्त करबाक हेतु होइत छल; यथा—मलमूत्र आदि जन्य अपवित्रता देखि सम्प्रति हिन्दू पवित्र होयबाक भावना सँ 'राम-राम' बजैत अछि तथा मुसलमान 'तोबा-तोबा', तहिना शिवभक्त मैथिल पहिने 'शिव-शिव' बजैत छलाह। 'सिव-सिव जिबओ न जाए, आस अरुझाएल रे की।' 'छी-छी' वा 'छीआ-छीया' एही 'शिव-शिव' शब्दक वालानुकरण थिक।

३९. टांग—जांघ सँ नीचा ओ पयर सँ ऊपर भाग टांग कहबैत अछि ओ एकर प्रचलन मैथिली एवं अनेक नवीन भाषा मे अछि। ई शब्द आष्ट्रिक कुलक मोन-कमेर भाषाक मानल जाइत अछि, जाहि मे एकर अर्थ होइत अछि दण्ड वा खूंटा।

४०. सयानी – संस्कृत सज्ञान सँ मैथिली सयान बनल अछि ओ प्राचीन मैथिली मे प्रमुख रूपें विद्यापति एहि शब्दक प्रयोग कयने चथि। पश्चात् एकर अर्थ ज्ञान योग्य उमेर वाला – वयस्क – प्रौढ़ भऽ गेल। सयन शब्दक स्त्रीलिंग सयानी थिक।

४१. समादवाड़ी – एकर मल संस्कृत संवादवार्ता बुझि पड़ैत अछि। किएक तँ आकारान्त स्त्रीलिंग कें ईकारान्त बना देनाक कतिपय उदाहरण मैथिली मे भेटैत अछि; यथा— राधा सँ राही, कमला सँ कमली आदि।

४२. राड़ —कोलक एक जाति (गोत्र) राड़ कहबैत छल, मुदा मैथिलीक आब कतेको जातिक नाम राड़ भऽ गेल।

४३. लालटेन—ई अंग्रेजी लैन्टर्न शब्द सँ बनल अछि। एहि मे जे ध्वनि परिवर्तन भेल अछि से अर्थ सँ प्रभावित अछि। एहि मे टेम वा टेमी रहैत ओ से ले लाल रंगक प्रकाश दैत अछि। एही भावना सँ लैन्टर्न कें लालटेन बनाओल गेल।

४४. चुहार मैथिली मे एकर अर्थ होइन अछि चोर, मुदा इहो समुदायक एकटा जाति-विशेषक नाम छल।

४५. झोंख ई देशज शब्द थिक। एकर मूल अज्ञात अछि।

४६. हम -एकर मूल प्राचीन आर्यभाषा अस्मे > अहमे > अम्हे > हमे थिक। प्राचीन मैथिली एवं मैथिलीक कतोक उपभाषा मे हमे एखनहुं चलैत अछि, मुदा मानक मैथिली मे हिन्दीक प्रभाव सँ हम चलऽ लागल। एकर मूल सामान्य विद्वान् अहम् शब्द कें मानैत छथि, मुदा भाषा-विज्ञानक

विद्वान् ताहि सँ सहमत नहि भऽ सकैत छथि। कारण ई अछि जे संस्कृतक अन्तिम अनुस्वार वा म् आजुक भाषा मे 'म' रूप मे जीवित कतहु नहि पाओल जाइछ तथा सामान्यतः नासिक्य (चन्द्रबिन्दु) भऽ जाइछ किंवा लुप्त भऽ जाइछ।

४७. पोस—गाय किंवा महिष यावत पर्यन्त युवावस्था मे नहि आयल रहैत अछि तावत धरि ओ पोस कहबैत अछि। एकर मूल संस्कृत पोष्य (पोसल गेनिहार) भऽ सकैछ। पशु शब्द सँ सेहो एकर उद्भवक संभावना अछि। मुदा दुनू मे अर्थ-संकोच मानऽ पड़त। कारण ई जे सभ पोष्य पशु नहि, मात्र विशेष अवस्थाक पशु पोस कहबैत अछि।

४८. हलचल ई हिन्दी किंवा उर्दू सँ हालहि मैथिली मे आयल अछि सम्भवतः एकर मूल थिक चल 'चलब', ताहि मे ध्वन्यनुकरनात्मक युग्म शब्द जोड़ि देल गेल अछि।

(४९) नूआ—ई देशज शब्द थिक। एकर कतोक प्रतिरूप आजुक अनेक भाषामे पाओल जाइत अछि; यथा—लुग्गा (नेपाली, मगही), लुंगा, लुंगी, लहंगा (हिन्दी)। ई सभ कोनो एक मूल शब्दसँ विकसित भेल अछि ओ से कोन भाषा-परिवारक शब्द छल होएत से अज्ञात अछि।

(५०) छाहरि—एकर संस्कृत पर्याय छाया थिक। एहिमे ह, र, इ-ई तीन गोट ध्वनि बाहरसँ आयल अछि। हिन्दीमे छाँह तथा छाँव चलैत अछि। रि, ड़ि वा र बहुत शब्दमे निरर्थक जोड़ल भेटैत अछि; यथा—बधूस बहुरिआ छागसँ छागर आदि।

(५१) बताह—ई संस्कृत 'बात' मैथिलीमे 'आह' प्रत्यय लगा कऽ बनल अछि। लोकक धारणा छैक जे शरीरमे बात, पित ओ कफ सन्तुलित रहला पर लोक स्वस्थ रहैछ ओ बात बढ़लासँ चित्त विक्षिप्त भ जाइत छैक, तेँ बताह (अधिक बातसँ युक्त) शब्द पागलक बोधक थिक। आह प्रत्यय संभवतः संस्कृत आभा शब्दसँ उद्भूत भेल अछि; यथा - तैलाभ—तेलाह।

(५२) बसहा—एकर मूल थिक संस्कृत वृषभ पूर्वमे एकर अर्थ अंड़िया बड़द किंवा सांढ़ होइत छल, मुदा आजुक मैथिलीमे मात्र शिवक बाहन बसहा कहबैत अछि।

(५३) दूभि—एकर मूल संस्कृत दूर्विका—दुब्बिआ - दूबि थिक, तेँ ई तद्भव शब्द भेल। एहिमे 'र' क प्रभावसँ 'ब' क स्थानमे 'भ' भऽ गेल अछि; जेना—सर्व सँ सभ।

(५४) दुसाध—एकर मूल किछु विद्वान संस्कृत दुःसाध्यकेँ मानैत छथि। कारण ओहिसँ दुसाह बनि सकैछ, दुसाध नहि। कारण प्राचीन काल 'छ' सभठाम 'ह' भऽ गेल अछि। अतएव ई देशज शब्द मानल जा सकैछ। दुसाध पूर्वमे कोल जातिक कोनो उपजाति रहल होयत से सम्भव।

(५५) दरबारी—ई विदेशी शब्द दरबारमे ई प्रत्यय लगा कऽ बनल तद्धित शब्द थिक जकर अर्थं अछि दरबारमे रहनिहार।

(५६) दहो-बहो—ई एक बिचित्र प्रकारक शब्द अछि ओ एकर ठीक-ठीक व्युत्पत्ति नहि कहल जा सकैछ। अथापि एहिमे दह शब्द दस संख्याक (दस दिशाक) बोधक एवं बह शब्द प्रवाहित क्रियाक बोधक प्रतीत होइछ। एहि तरहेँ एकर व्युत्पन्यर्थं दसो दिसामे अर्थात् अनेक धारामे बहैत से भऽ सकैछ।

(५७) डपोरशंख एक तरह कथाकल्पित शंख, जे किछु मंगला पर तकर दुगुना देबाक वचन दैछ, मुदा ओकर पालन नहि करैछ। एहिमे एक कथा अछि जे बूढ़सँ सुनि एकर वास्तविक अर्थं बुझल जा सकैछ। अतएव ई सान्दर्भिक शब्द भेल।

(५८) टीशन—ई अंगरेजी स्टेशन शब्दक मैथिली अपभ्रंश थिक।

(५९) जमाए—मूल संस्कृतक जामाता थिक।

(६०) जाठि—एकर मूल थिक संस्कृत यष्टि, जे स्वयं यज् धातुसँ बनल अछि; तेँ मूल रूपेँ एकर अर्थं भेल यज्ञ सम्बन्धी स्तम्भ।

(६१) ता—संस्कृत - तावत् ताव —ताव—ता।

(६२) तीमन—ई स्वरूपतः देशज अव्युत्पन्न शब्द बुझि पड़ैत अछि जे तेमण रूपमे संस्कृतमे सेहो गृहीत अछि। कतोक मत अछि जे ई संस्कृत तिम् धातु सँ बनल अछि जकर अर्थं भीजब होइत अछि। एकर व्युत्पन्यर्थं भेल भीजल तरकारी।

(६३) ताकब—मूल अछि स्पष्ट रूपेँ संस्कृत तर्क—तक्क—ताक। अर्थंमे अत्यन्त परिवर्तन भेल अछि। संस्कृतमे तर्कयति, एकर अर्थं अनुमान करब होइत अछि। मैथिलीमे एकर दू गोट अर्थं गृहीत भेल अछि—ध्यान-पूर्वक देखब तथा अन्वेषण करब। विकासक्रम एहि रूपेँ भऽ सकैत अछि—अनुमान करब - अनुमानार्थं प्रेक्षण करब - ध्यानपूर्वक देखब—ताकब।

(६४) फूरब—एकर मूल संस्कृत स्फुट वा स्फुर धातु भऽ सकैत अछि। जकर अर्थं विकसित किंवा उद्भासित होयब थिक।

(६५) पुन—ई संस्कृत पुण्य शब्दसँ उद्‌भूत भेल अछि। संस्कृत पुनः फेर स्थानमे सेहो ग्रामीण मैथिलीमे पुन चलैत अछि; जे ग्रामंमे पुनि वा पुनु रूपमे पाओल जाइत अछि।

(६६) पाहुन—एकर मूल संस्कृत प्राघुण किंवा प्राघूर्ण कहल जाइत अछि; मुदा ई देशज शब्द जकाँ लगैत अछि। विद्यापतिक समयमे एकर रूप पाहोन छल। प्राघुण शब्द पाहुन शब्दक गढ़ल संस्कृत सदृश लगैत अछि।

(६७) निसपिट्टर - ई अंगरेजी इन्सपेक्टर शब्दक मैथिली अपभ्रंश थिक। ई पूर्णतः मैथिलीक ध्वनि प्रणालीमे आबि गेल अछि।

(६८) नीक प्रायः ई अरबी नेक (भला) सँ बनल अछि। इहो संभव थिक जे वैदिक निज धातु सँ बनल निक्त (स्वच्छ) शब्द एकर मूल हो। कारण प्राचीन मैथिली मे निक शब्द विद्यापतिकाल सँ भेटैत अछि, जहिआ अरबी शब्द मैथिली मे अपवाद रूपहिं आयल छल!

(६९ जूड़शीतल—एहि मे जूड़ ओ शीतल दुनू पर्यायवाची थिक। एकर देशज ओ दोसर तत्सम। अतएव ई पर्यायवाची युग्मशब्दक भेल। ई मिथिला मे प्रचलित एक पावनिक नाम थिक जाहि मे लोक जलक्रीड़ा करैत अछि।

(७०) सुन्न—एकर मूल थिक संस्कृत शून्य, जे शूना (वध स्थान) शब्दक तद्धितान्त रूप थिक, तेँ कहल जाइछ जे एकर अर्थ वधस्थान>बधोपयुक्त निर्जन स्थान>निर्जन (सुन्न) स्थान—एहि रूपेँ विकसित भेल अछि।

(७१) बौक - ई मैथिलीक विशुद्ध देशी शब्द थिक।

(७२) बेत्रेक - एकर मूल संस्कृत व्यतिरेक थिक। एकरा अर्द्धतत्सम कहल जा सकैत अछि। मैथिली मे एकर प्रयोग अव्यय सदृश होइछ, विशेषण सदृश नहि ओ तदनुसार एकर अर्थ होइछ—'अभावें' यथा - बेत्रेक अन्न भए रहल आँट नेन्ना-भुटका अर्थात् नेना सभक अन्नक अभावेँ आँट भऽ रहल अछि।

(७३) बेआज—मूल संस्कृत व्याज। मैथिली तद्‌भव मे व्या सँ बेआ आदि विकार सम्प्रसारण कहबैछ, यथा—व्याधि>बेआधि, व्यापित>बेआपित, ज्ञान>गेआन, ध्यान>घेआन आदि।

(७४) बाँक - ई संस्कृत वक्र (टेढ़ सँ उद्‌भूत तद्‌भव शब्द थिक। मूल अर्थ सुरक्षित अछि। एहि मे अनुनासिक्य (चन्द्रबिन्दु) 'र' क प्रभाव सँ आयल अछि, यथा—सर्प सँ साँप।

(७५) बाट—एकर मूल संस्कृत वत्मंन थिक।

(७६) बूझ—संस्कृत बुद्ध्य (रति)>प्राकृत बुज्झइ>अपभ्रंश बूझइ।

(७७)बहुरिया वा बहुड़िआ—एकर मूल थिक संस्कृत बधूटिका। बधू शब्द मे स्वार्थिक टी प्रत्यय लगा कऽ वधूटी शब्द बनल ओ ताहि मे क प्रत्यय लगओला पर वधूटिका बनैत अछि। वैदिक काल सँ अद्यपर्यन्त एहि में कनेको अर्थ-परिवर्तन नहि भेल अछि।

(७८) पीसी—इहो तद्‌भव शब्द अछि जकर मूल थिक संस्कृत पितृष्वसा (पिताक बहिनि)। विकास एहि रूपेँ भेल अछि- पितृष्वसा>प्राकृत-पिउस्सिआ7अपभ्रंश पिउसिअ7मैथिली पिउसि किंवा पीसी।

(७९) मौसी - ई तद्‌भव शब्द थिक, जकर मूल थिक संस्कृत मातृष्वसा (मायक बहिनि)। विकास एहि रूपेँ भेल अछि मातृष्वसा7प्राकृत माउस्सिआ7अपभ्रंश माउसिअ7मैथिली माउसि ओ मौसी।

(८०) माहुर—भाषा विज्ञानक कतिपय पुस्तक मे चर्चा भेटैत अछि जे एकर मूल संस्कृत मधुर थिक जकर अर्थ विपरीत दिशा मे परिवर्तित भऽ विष भऽ गेल अछि। मुदा से उपयुक्त नहि, कारण जे तखन 'मा' मे 'आ' कतऽ सँ आओत? अतएव संभव थिक जे ई कोनो विदेशी वा देशी शब्द हो।

(८१) मलान—ई संस्कृति म्लान शब्दक तद्‌भव रूप थिक जाहि मे मात्र स्वरभक्ति (मध्य मे कोनो उपयुक्त स्वर जोड़ि संयुक्त व्यंजन केँ फुटयबाक क्रिया) भेल अछि।

(८२) माछी - एकर मूल थिक संस्कृत माक्षिका। (मक्षिका>मच्छिआ>मच्छी>माछी)

(८३) भागिन—संस्कृत मे बहिनि केँ भगिनी (भाग्यवती) कहल जाइत अछि, ताहि मे अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय एय लगने भागिनेय (बहिनिक बेटा) शब्द बनल, ताहि सँ भागिन शब्द निष्पन्न भेल।

किछु अन्य प्रचलित मैथिली शब्दक व्युत्पत्ति

संस्कृत	प्राकृत	मैथिली
आयुष्मान्	आम्हा	अहाँ
अद्य	अज्ज	आइ (हिन्दी आज)
आत्मनः	अप्पणो, अप्पण	अपन